एक कमरे की कहानी

लेखक
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'



नवरतन प्रकाशन

प्रकाशक —नवयुग प्रकाशन [illegible] [illegible]

दिल्ली शाखा —१६८१ [illegible] दिल्ली—६

मूल्य — तीन रुपए

मुद्रक—[illegible] द्वारा
नूतन प्रेस
चांदनी चौक दिल्ली ६

EK KAMRE KI KAHANI (Novel) by CHANDRA
Price Rs 3·00

प्रकाशकीय

मनरत्न प्रकाशन का आधार एक दिन अचानक राजस्थान अखिल भारतीय ख्याति अर्जित साहित्यकार श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के कथन पर बन गया। श्री चन्द्र ने हिन्दी में सशक्त साहित्य सृजन करके राजस्थान का मान बढ़ाया है और उनकी तेलगु गुजराती मराठी सिन्धी तथा उर्दू में अनूदित प्रकाशित कृतियों ने राष्ट्रभाषा का मस्तक गौरवान्वित किया है।

हमारी ओर से उनकी अधिक से अधिक कृतियाँ प्रकाशित करने की चेष्टा रहेगी और अन्य प्रकाशकों द्वारा छपी उनकी पुस्तकें भी आप यहीं से सहजता से प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अवसर पर हम चन्द्र जी के बीकानेरवासी आत्मीयजनों एवं चित्रकार कांति (बीकानेर) और मामो (दिल्ली) के आभारी हैं। कांति जी ने आवरण का मूलाधार रचे और मामो जी उनमें चित्रमय ब्लॉक देकर रंग भरे।

एक बार मैं व्यक्तिगत रूप से उन राजस्थानवासी व प्रवासी लोगों को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने चन्द्र जी की पुस्तकें अग्रिम खरीद कर मुझे बल दिया।

ज्योतिर्मयी भट्टाचार्य
प्रबन्धिका

हमारे यहाँ से प्रकाशित [illegible]जी की अन्य कृतियाँ

- एक इन्सान की मौत
  एक इन्सान का जन्म — कहानियाँ
- सावित्री — (उपन्यास)

मैं इतना ही कहूँगा

एक कमरे की कहानी—नवीन उपन्यास। कथानक दिल्ली का एक कमरा।

आप इस लघु उपन्यास में आज के बदलते जीवन और विषमताओं से घिरे इन्सानों की एक सच्ची कहानी पायेंगे। यथार्थ का चित्रण बहुत ही सँभल-सँभल कर किया है पर कुछ ऐसे यथार्थ हैं जिन पर कलात्मक आवरण नहीं डाला जा सकता।

मैं इसके प्रकाशन पर नवरत्न प्रकाशन के उन सभी सहयोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे विचारों को मूर्त रूप दिया।

पाठक अपनी सम्मति भेजेंगे।

मायबेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

पता—
नाले की होली
बीकानेर

अगर तुम्हारा स्वर वही है जो जीवन का है, अगर तुम्हारी कल्पना ऐसे नमूनों की रचना नहीं कर सकती जो जीवन में मौजूद न रहते हुए भी उसे सुधारने के लिए आवश्यक हैं तब तुम्हारा इतिहास किस मर्ज की दवा है और तुम्हारे धंधे की क्या सार्थकता है ?

—गोर्की
(एक पाठक से)

मैं एक कमरा हूँ।

कमरा? जी हाँ मैं एक कमरा हूँ जिसकी कहानी आज आप उसकी अपनी जबानी सुनेंगे।

सबसे पहले मैं अपनी स्थिति से आपको परिचित करा दूँ या। स्थिति की जानकारी देते समय मैं कुछ बातें एकदम साफ-साफ नहीं कहूँगा क्योंकि ऐसा करते समय मुझे मेरे सामने वाले खाली कमरे के मालिक का व्यवहार बुरा याद हो आता है जो रूखा-सूखा खाकर भी अपने मालिक की सेवा-सुरक्षा करता है। फिर भला मैं अपने स्वामी के साथ ऐसी गद्दारी कैसे कर सकता हूँ? इसीलिए मैं आपको अपनी कहानी इस ढंग से सुनाऊँगा कि मेरी यह कहानी मुझ जैसे अनेकों कमरों की कहानी बन जायगी। व्यक्ति की कथा समूह की कथा बन जाय यही पृष्ठ कथा-कथा है।

आप मुझसे यह प्रश्न भी कर बैठेंगे कि जब तुम अपने मालिक के प्रति विनीत व्यवहार हो तब तुम अपनी यह कहानी क्यों सुनाने बैठे हो? क्या इससे तुम्हारे मालिक के उन पुरखों की सच्चाई स्पष्ट नहीं होती जो अत्यन्त धर्मभाव और वीरी है।

मैं कब इन्कार करता हूँ? लेकिन जब कोई मालिक एकदम बेरुखाई पर उतर आवे और उस कमरे को भूल जाये जो उसके बुरे दिनों का साथी रहा है तो बेचारा वह कमरा कहाँ तक सह जाये?

आज मैं वह कमरा एक गोदाम बन गया हूँ। अनाप-शनाप

लेकिन मैं अपनी अनुभूतियों को जिन्दा रखता हूँ और जो मेरे ऊपर के कमरों में होता है उसे मैं कान देकर सुनता हूँ और अंधेरे में डूबा हुआ देखता भी हूँ।

ऊपर के आलीशान कमरे में इस हारी-थकी जिन्दगी के पाँच पहलू रहते हैं। पहलू भी एक दूसरे से सर्वथा अलग। पहलू से मेरा तात्पर्य उसकी सारी सन्तानों एवं एक बहू से है। बड़ा लड़का विनोद बड़ी बेटी कृष्णा मंझली बेटी रामा छोटी बेटी रेखा और बेटे की बहू इन्दिरा।

मेरे सामने एक तंग गली है। साढ़े तीन फीट चौड़ी। पक्की सड़क। बन्द मोरियाँ। गली को पार करने के साथ ही बीस फीट चौड़ी सड़क के दोनों ओर दुकानें। भीड़। जहाँ यह सड़क मेन रोड से मिलती है वहाँ इस सड़क पर गाड़ियों के आवागमन को रोकने के लिए तीन शहतीर गाड़ दिये गये हैं जिससे इस सड़क से केवल साईकिल सवार ही निधड़क बेरोक टोक आ जा सकते हैं।

यह आज की स्थिति है। पर आजादी के पहले मैं मियाँ सदाकत अली की परचून की दुकान थी। मियाँ सदाकत अली एक बड़ा ही काइयाँ और बुरा इन्सान था। ज्यादा पैसे लेकर कम तोलना उसकी आदत थी। घटिया मिर्चों को रंग कर एकदम लाल बना देना आटे में इमली के बीज पीस कर मिला देना कभी किसी से मुहब्बत से पेश न आना बात बात पर गरीब ग्राहकों को माँ-बहिन की गाली देना ये दुर्गुण उसमें कूट कूट कर भरे पड़े थे। यही वजह थी कि खुदावंद परवरदिगार ने उसे बेऔलाद रखा। जब पाकिस्तान बनने लगा तब इस मुसलमानी मोहल्ले में भी खलबली मची। लोग भागने लगे। सदाकत मियाँ अपने नाम से सदा उलटा ही काम करता था। जब इन्सान इन्सान को आदमखोर की तरह खा रहा था तब सदाकत मियाँ पैसा बटोरने में व्यस्त था। उसने मौत के भय से — भागते हुए अपने ग्राहकों के गले से सोने की जंजीरें उतारी

बहुत परेशान होती है। हम ये सारी दौलत लेकर चलेंगे, वहाँ बहुत बड़ी तिजारत करेंगे और" ।

खट् खट् खड़खड़ा पड़ा ।

मिर्ज़ा की साँस रुक गयी। भय की लहरें उसकी आँखों में सिमट सिकुड़कर उन्हें स्थिर कर गयीं। उसने परवीन की ओर देखा। परवीन ने मक्का मदीना के पवित्र चित्रों की ओर देखकर खुदा से विनती की और फिर अपने पति से बोली — देखा आपके लालच का नतीजा? अब जान से हाथ धोना पड़ेगा।" बाहर एक युवती की आवाज सुनायी पड़ी। आवाज काँप रही थी। "दरवाजा खोलो चाचा मिर्ज़ा दरवाजा खोलो मुझे बचाओ खोलो न दरवाजा।

"कौन है?" परवीन ने पूछा।

"मैं सुरैया अब्दुल्ला रंग वाले की बेटी आपकी भतीजी' 'खोलो चाचा खोलो गुंडे मेरा पीछा कर रहे हैं।"

परवीन दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़ी। मिर्ज़ा ने उसको रोक दिया — दरवाजा मत खोलो।"

परवीन ने कहा "सुरैया है आपकी —"

मैंने कहा कि दरवाजा मत खोलो। इस वक्त कोई किसी का नहीं है। तभी कई भारी कदमों की आवाजें आकर दुकान के आगे इकट्ठी हो गयी। सुरैया की चीखें रोने में बदल गयीं। उन चीखों के दर्द से परवीन भी रो पड़ी। उसने अपने कान बन्द कर लिये और वह टूट कर बैठ गयी।

सुरैया की चीखें सूनी घाटियों की तरह दूर बहुत दूर होकर खामोश हो गयी पर उसकी गूँज परवीन के दिल के नेक और कोमल विचारों से टकराती रही।

"सदाकत मिर्ज़ा!" एक अपरिचित आवाज बाहर से आयी। सदाकत मिर्ज़ा का चेहरा पसीने से भीग गया। भयभीत दृष्टि से उसने परवीन की ओर देखा। परवीन का चेहरा भी पसीने से भीगा

सुहागिनों की चूड़ियाँ तोड़ीं महबूबाओं की मुहब्बत की निशानियाँ अंगूठियाँ छीनीं। वह ज़ालिम इन्सान उन लुटेरों से कम नहीं था जो उस धधकती आग में हिन्दू मुसलमान को न देखकर केवल दौलत को लूटते थे।

हिन्दुओं के हमले जारी थे।

इसके पूर्व इस गली में हिन्दू मुसलमान का कोई भेदभाव नहीं था। इस मुसलमानी मोहल्ले में कुछ हिन्दू भी थे पर मजाल है कि कोई भी किसी की बहिन-बेटी की मजाक कर लेता कोई भला किसी चीज पाता हुआ गुजर जाता! पड़ौस मोह का एक आतंक था वहाँ। पर समय बदला। समय के साथ इन्सान के दिलो-दिमाग। खून ही खून! तो हाँ—एक दिन वजाहत मियाँ भी अपनी शेरवानी में नोट और सोना छुपा कर भागने की चेष्टा करने लगे। मुझे अच्छी तरह याद है। उस समय मोमबत्ती से मेरा दिल जल रहा था और मैं मद्धिम रोशनी में उसकी घिनौनी सूरत देख रहा था। उसके सामने नोट पड़े थे जेवरात पड़े थे और वह उन्हें देखकर बार-बार बड़बड़ा रहा था "मैं इनसे सारे रुपयों से पाकिस्तान में बहुत बड़ी दुकान खोलूँ गा।

उसका बड़बड़ाना उसकी नेक बीबी 'परवीन' को पागलपन सा लग रहा था। वह हुस्नोइश्क की मूर्ति परवीन जिसका चेहरा इन हैरतअंगेज घटनाओं को देखकर स्याह पड़ गया था जिसके बदन जिस्म की सारी नजाकत गायब हो गई थी उसकी दो दीप जैसी आँखों में कुआँपन सा छा गया था जो हर चीज पर खुदा का पाक नाम लेती थी वह बीबी (माफ करना यह मैं आपको बताना भूल गया था कि परवीन वजाहत मियाँ की तीसरी बीबी थी) अपने शौहर की इस हरकत पर विस्मित हो गयी। पूछ बैठी आप यहाँ बैठे-बैठे तिजारत ही करते रहेंगे या अपनी जान लेकर भागेंगे।

'जान है तो जहान है मिकपरस्त पर जान भी बिना दौलत के

बहुत परेशान होती है। हम ये सारी दौलत लेकर जायेंगे, वहाँ बहुत बड़ी तिजारत करेंगे और ।

खट् खट् खड़खड़ा पड़ा !

मिर्ज़ा की साँस रुक गयी। भय की लहरें उसकी आँखों में सिमट सिकुड़कर उन्हें स्थिर कर गयीं। उसने परवीन की ओर देखा। परवीन ने मक्का मदीना के पवित्र चित्रों की ओर देखकर खुदा से विनती की और फिर अपने पति से बोली "देखा आपके लालच का नतीजा ? अब जान से हाथ धोना पड़ेगा।" बाहर एक युवती की आवाज सुनायी पड़ी। आवाज काँप रही थी। "दरवाजा खोलो चाचा मिर्ज़ा दरवाजा खोलो मुझे बचाओ खोलो न दरवाजा।

"कौन है ? परवीन ने पूछा।

"मैं सुरैया अब्दुल्ला रंग वाले की बेटी आपकी भतीजी" खोलो चाचा खोलो गुंडे मेरा पीछा कर रहे हैं।

परवीन दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़ी। मिर्ज़ा ने उसको रोक दिया "दरवाजा मत खोलो।"

परवीन ने कहा "सुरैया है आपकी

"मैंने कहा कि दरवाजा मत खोलो। इस वक्त कोई किसी का नहीं है। तभी कई भारी कदमों की आवाजें आकर दुकान के आगे इकट्ठी हो गयीं। सुरैया की चीखें रोने में बदल गयीं। उन चीखों के दर्द से परवीन भी रो पड़ी। उसने अपने कान बन्द कर लिये और वह टूट कर बैठ गयी।

सुरैया की चीखें सूनी घाटियों की तरह दूर बहुत दूर होकर खामोश हो गयीं पर उसकी गूँज परवीन के दिल के नेक और कोमल किनारों से टकराती रही।

सआदत मिर्ज़ा !" एक अपरिचित आवाज बाहर से आयी। सआदत मिर्ज़ा का चेहरा पसीने से भीग गया। भयभीत दृष्टि से उसने परवीन की ओर देखा। परवीन का चेहरा भी पसीने से भीगा

हुआ था और अब सजीव होकर उसके चेहरे पर नाच उठा था।

"ओ सदाक़त मियाँ दरवाजा खोलते हो या तोड़ूँ ?"

सदाक़त मियाँ ने रूखे कंठ स्वर से पूछा "कौन है ?"

"मैं हूँ-काली पाँडे।"

"काली पाँडे ! बोल काली क्या चाहता है ?"

"पहले तू दरवाजा तो खोल।"

"नहीं पाण्डे अभी मैं दरवाजा नहीं खोल सकता।" वह अत्यन्त नर्म और गहरी आत्मीयता से बोला "मैं मजबूर हूँ तेरी भाभी जान भी भीतर है। जानते हो न वह इन खून-खराबों से बहुत घबराती है।"

काली पाण्डे ने एक गंदी गाली दी और वह बोला "भाभीजान के बच्चे दरवाजा खोल दे वर्ना मैं तुझे ।"

मियाँ सदाक़त ने दयनीयता से परवीन की ओर देखा। परवीन बुत की तरह थी।

"दरवाजा खोल।" एक जोर का किवाड़ पर धमाका हुआ। मैं रो पड़ा। मेरा सारा बदन काँप उठा। यहाँ तक की मेरी रीढ़ की हड्डी मानो भीत भी काँप उठी।

"दरवाजा खोल दीजिए। परवीन ने धीम से कहा इसी में हम सबकी खैर है।

सदाक़त ने एक बार उसकी ओर नफरत भरी नजर से देखा। उसकी आँखें आग की तरह दहक उठीं। होंठों को चबाते हुए बोला "तुम्हें मैं खूब जानता हूँ। तुम उम्र भर मुझसे नफरत करती रही अब मुझसे ।

धर रर धूँ धड़ाक।

दरवाजे टूट गये। मैंने अपनी आँखें बन्द करली। हृष्टपुष्ट काली लुंगी और कुर्ता पहने हुये अपनी मूँछों पर ताव दे रहा था। सदाक़त मियाँ जल्दी से अपनी शेरवानी में रुपए छुपाकर काली के

चरणों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा "काली पाण्डे तू हिन्दू है। तुझे राम माँ की कसम यदि मुझे मारा तो मैं तुझे यह दुकान देता।" और वह बड़ी देर तक क्षमा याचना करता रहा।

सदाव्रत परवीन को भूल गया था। उसने अपनी सम्पूर्ण प्रार्थना में परवीन का नाम तक नहीं लिया।

मुझे अच्छी तरह याद है घायल चिड़िया की तरह अपने पंख समेटे परवीन मेरी [illegible]-कोने में दुबकी थी। वह रो रही थी। उसके लाल गालों पर आँसुओं का जाल सा बिछ गया था।

"परवीन कहाँ है?" काली ने गरज कर कहा।

"वो वो रही काली बो।" उसने काँपते हुए परवीन की ओर संकेत किया। परवीन अपने डरपोक और नीच पति पर घृणा से रो रही। काली उसकी ओर बढ़ा। परवीन के पास आया। उसका हाथ पकड़ा। चूड़ियाँ चरमरा कर टूट कर बिखर गयीं। काली ने उसे अपने सीने से लगाया माथे की बिन्दी मिट गयी। परवीन विरोध कर रही थी। सदाव्रत अपनी शेरवानी को संभाल रहा था। काली ने एक झटके में नाजो-अन्दाज में पली परवीन को सीधा कर दिया। उसे अपनी गोद में उठाया और अपने साथियों से कहा 'इस बूढ़े को छोड़ देना।' और वह सदाव्रत के पास जाकर गर्जा, 'शिकायत करेगा तो रेल में चढ़ते हुए को काट डालूँगा।' उसने अपनी कमर से एक चमकती हुई कटार निकाली। डर से सदाव्रत चीख पड़ा 'नहीं-नहीं। मैं किसी से भी कुछ नहीं कहूँगा। तू इसे लेजा। मुझे छोड़ दे। यह दुकान भी तेरी यह माल भी तेरा' !

काली परवीन का मुँह बाँध कर चला। गुण्डों ने मेरे सजे हुए रूप को नष्ट कर दिया। मुझे एकदम नंगा बना दिया। मुझे अपनी दुर्दशा का जरा भी रंज नहीं हुआ पर मैं परवीन की उन बड़ी बड़ी आँखों को आज भी नहीं भूल सका हूँ जिन में उस दिन धरती की सारी व्यथा तिरोहित होकर उथल-पुथल मचा रही थी। उसका

धीहर सहारकर अपनी सैर मना रहा था। ओह! इन्सान कितना खुद गर्ज और जलील हो गया है।

परवीन कहाँ है? मैं यह नहीं जानता क्योंकि काली पाण्डे को मैंने उस दिन के बाद कभी नहीं देखा पर थोड़ी ही देर में उसीके साथी एक विकृत लाश लेकर आये और राक्षसों की तरह अट्टहास करके मेरी छाती पर उसे फेंक गये। वह क्षत-विक्षत लाश किस की थी मैं नहीं पहचान सका। सोचा जरूर था कि वह एक मुसलमान की लाश है। नहीं-नहीं वह एक हिन्दू की लाश है। नहीं-नहीं वह एक इन्सान की लाश है जो अपने टपकते हुए खून के कतरों में बेगुनाहियों की हजारों सदायें लिए हुए मेरी छाती पर कई दिन सड़ता रहा। अपनी सड़ांध और बदबू से मुझे कई दिनों तक तंग और परेशान करता रहा। उसकी हालत पर मुझे रोना आता था और उसकी बदबू पर झुंझलाहट।

अचानक एक दिन कुछ लोग आये और मुझे नहला धुला दिया। उस लाश को कूड़े की तरह उठाकर बाहर फेंक आये और मैं दुकान की जगह एक कमरा हो गया।

मुझे आज भी याद है। उन दिनों इस बस्ती में सड़ांध रहती थी और आये हुए हजारों शरणार्थियों के जत्थे जगह-जगह कैंप किया करते थे। सुबह जब भंगिन पाखाने साफ करने आती तब यहाँ बदबू का साम्राज्य स्थापित हो जाता था। भीड़ ही भीड़। शोरगुल और रोना।

मेरा नया मालिक बहुत दिनों तक घुटनों में मुंह छुपाये रोता रहता था क्योंकि उसे भी काली पाण्डे की तरह किसी शैतान गुण्डे ने बरबाद कर दिया था। उसके दो छोटे भाई, उसकी पत्नियाँ और उसकी सब से बड़ी बेटी रोशनी को वहीं उसके सामने मौत के घाट उतार दिया था।

धीरे-धीरे सब सामान्य हो गया।

एक वर्ष के भीतर यहाँ के शरणार्थी लोग एकदम पक्के पुरुषार्थी

ही गये। कठोर मेहनत ने दिल्ली की काया को ही बदल दिया।

मेरे मालिक रामलाल ने सब्जी का धंधा शुरू कर दिया। सब्जी मंडी में वे एक पाटे पर सब्जियां बेचा करते थे और उनका लड़का जो केवल मिडिल पास था एक परचून की दुकान में नौकरी लग गया था। बड़ी और मंझली बेटी स्कूल में पढ़ने जाने लगी थी और देखते-देखते रामलाल की पत्नी फिर गर्भवती हो गई। रेखा जो इस समय १४ वर्ष की है मेरे नये मालिक की आखिरी सन्तान है।

इस गली की आगे वाली गली में दो होटल खुल गये। उन दिनों इन होटलों में दो-चार टूटी हुई बेंचें लगी हुई थी पर लोग चाय खूब पीते थे। दो परचून की दुकानें तथा एक सब्जी की दुकान और खुल गयी थी।

मेरा रंग रूप तब यह था। मेरे चारों ओर घुटन बदबू सीलन और अन्धेरा सा रहता था। गली की नालियों की दुर्गन्ध से हवा महका कर उस बदबू के अस्तित्व का भान हर घड़ी मुझे कराती रहती थी। कोई नया आदमी इधर आता जाने आता तो उस बदबू के मारे खाना नहीं खा सकता था। मेरा रंग बदल दिया गया अर्थात् मुझे हरा चोला पहना दिया गया। हाथ का घिसा हुआ हरा चोला। सदाक़त की सारी स्मृतियां मिटा दी गयी सिर्फ बची रह गयी उसके समय की दो बिना दरवाजों की अलमारियां जिन पर अब पर्दे लटक रहे थे पुरानी साड़ी के।

धीरे-धीरे समय गुजरता रहा है।

सारा परिवार अभावों और दुःखों में झूलता हुआ जी रहा था कि एक दिन एक विपदा आयी।

वह सुबह थी। मैं भी यह पूर्ण रूप से भूल गया था कि कभी यहां एक सदाक़त मियां भी रहा था और कभी मेरी गोद में एक हसीन मोम सी युवती फफक-फफक रोयी थी तथा उसका कायर पति उसे गुंडों के हवाले करके कहीं भाग गया था।

विमला ने अपना परिचय ठेठ पंजाबी भाषा में दिया। तभी आ गया रामलाल। उस विमला को देख कर वह मरमि स्वर बोला सर्बोभाभी तेरी यह सूरत मुझसे नहीं देखी जाती। क्या रंग रूप और सूरत थी तेरी। पीला रँग तेरे रंगमें मिल कर एक हो जाता था। खूब सोनपरी लगती थी।

आपस्नुका केवल रोती रही। रामलाल उसकी जितनी प्रशंसा करता था उसका हृदय उतना ही रुन्धा था। आखिर यह रोना धोना बन्द हो गया। बात अपने मतलब पर आ गयी।

आप मेरे धर्म के वीर हैं। मैं आप से एक विनती करने आयी हूँ।

'बोल भाभी बोल तू मुझे हुक्म कर।

'मेरी इन्दिरा को तू अपनी बहू बना ले। अब इन्दिरा बीस की हो गयी है। उसकी चिन्ता मुझे रात को सोने नहीं देती। इसमें मैं रत्ती भी झूठ नहीं बोलती कि इन्दिरा को देखकर मेरा कलेजा बेचैन हो जाता है और आँखों में उसकी तस्वीर तिर जाती है।"

रामलाल ने चिन्तातुर स्वर में कहा' 'हम सभी हैं निरभागे वर्ना क्यों अपना वतन छोड़ आते क्यों अपना घर छोड़ आते। मेरा भाई इन्दिरा की शादी की कितने जोर-शोर से तैयारियाँ कर रहा था। खैर, जो होना था वह हो गया अब अब तू चिन्ता-फिक्र छोड़ दे इन्दिरा को मैं अपनी बहू बनाऊँगा।

लड़के के बाप ने विमला को अपना कौल दिया और माँ ने दबी जबान में विरोध किया "तुम रहे हो मिलोचन के पिताजी हमें भी रूपा और रामा का विवाह करना है।

'हम कौन करने वाले हैं ? विवाह तो भगवान करेंगे। आ मेरी भाभी आ। तेरी बेटी मेरी बहू।

बस हो गयी बात और एक दिन घर भर में बहू आ गयी। मेरी दो आँखों के बीच पार्टीशन खत्म किया गया। गनीमत समझो कि

पार्टीशन एक मोटे नीले रंग के कपड़े का ही था। पर हाँ यह पर्दा तीन वर्ष में ही फट गया और फटने के बाद दुबारा नहीं बन सका।

× × ×

साँप की तरह समय बढ़ा।

त्रिलोचन की तनख्वाह अब एक सौ पच्चीस रुपये। पिता की उम्र साठ वर्ष के लगभग। माँ का स्वभाव धार किए हुए चाकू की तरह तेज।

यह रात है।

दिल्ली की ठिठुरती काँपती रात। ठीक दस बज रहे हैं। गली में सन्नाटा हो गया है। मेरे एक कोने में त्रिलोचन का बाप हुक्का गुड़गुड़ाता जा रहा है साथ में खाँसता भी। उसने अपना कमरा बन्द कर दिया क्योंकि गठिया के रोग की वजह से वह अब चल फिर नहीं सकता है। माँ बहू से दूर पड़ी मुँह फेरे रहती है। उसका कहना है कि बहू के आते ही उसके पति का सारा व्यापार चौपट हो गया और वे बीमार पड़ गये यह अशुभ है पर बहू उसकी कोई परवाह नहीं करती है।

रूपा बी० ए० में पढ़ती है और रामा ने इसी वर्ष कालेज में दाखिला पाया है। वह वजीफा भी पाती है क्योंकि वह हाई स्कूल में फर्स्ट आयी है।

रूपा का रंग—रूप साधारण है। मँझला कद पर नाक-नक्शा अच्छे। जवानी की अपनी सुनाई और आकर्षण होता है। वह बहुत अच्छे ढंग से रहती है और उसकी मामी उस पर जान देती है। छोटी बहिन रेखा ने अभी तक हायर सेकेण्डरी पास नहीं किया है।

रात की चाँदनी का लिहाफ सिमटने लगा है।

विमला ने अपना परिचय ठेठ पंजाबी भाषा में दिया। तभी आ गया रामलाल। उस विमला को देख कर वह अरपि स्वर बोला 'क्यों भाभी तेरी यह सूरत मुझसे नहीं देखी जाती। क्या रंग रूप और सूरत थी तेरी। पीला रंग तेरे रंगमें मिल कर एक हो जाता था। खूब सोनची लगती थी।

भावस्तुक केवल रोती रही। रामलाल उसकी जितनी प्रशंसा करता था उसका हृदय उतना ही कटता था। आखिर यह रोना धोना बन्द हो गया। बात अपने मतलब पर आ गयी।

आप मेरे धर्म के वीर हैं। मैं आप से एक विनती करने आयी हूँ।"

'बोल भाभी बोल तू मुझे हुक्म कर।

'मेरी इन्दिरा को तू अपनी बहू बना ले। अब इन्दिरा बीस की हो गयी है। उसकी चिन्ता मुझे रात को सोने नहीं देती। इसमें मैं रत्ती भी झूठ नहीं बोलती कि इन्दिरा को देखकर मेरा कलेजा बेचैन हो जाता है और आँखों में उसकी तस्वीर तिर जाती है।

रामलाल ने चिन्तातुर स्वर में कहा "हम सभी ही निरआपे थे वर्ना क्यों अपना वतन छोड़ आते क्यों अपना घर छोड़ आते। मेरा भाई इन्दिरा की शादी की कितने जोर-शोर से तैयारियाँ कर रहा था। खैर जो होना था वह हो गया अब 'अब तू चिन्ता-फिक्र छोड़ दे इन्दिरा को मैं अपनी बहू बनाऊँगा।

लड़के के बाप ने विमला को अपना कौल दिया और माँ ने दबी जबान में विरोध किया 'सुन रहे हो मिलोचन के पिताजी हमें भी रूपा और रामा का विवाह करना है।

'हम कौन करने वाले हैं? विवाह तो भगवान करेंगे। आ मेरी भाभी आ। तेरी बेटी मेरी बहू।

बस हो गयी बात और एक दिन इस घर में बहू आ गयी। मेरी दो आँखों के बीच पार्टीशन डाल दिया गया। यकीनन समझो कि

पार्टीशन एक मोटे भौंडे रंग के कपड़े का ही था। पर हाँ यह पर्दा तीन वर्ष में ही फट गया और फटने के बाद दुबारा नहीं बन सका।

× × ×

साँप की तरह समय पड़ा।

त्रिलोचन की तनख्वाह अब एक सौ पच्चीस रुपये। पिता की उम्र साठ वर्ष के लगभग। माँ का स्वभाव धार किए हुए चाकू की तरह तेज।

यह रात है।

दिल्ली की ठिठुरती काँपती रात। ठीक दस बज रहे हैं। गली में सन्नाटा हो गया है। मेरे एक कोने में त्रिलोचन का बाप हुक्का गुड़गुड़ाता जा रहा है साथ में खाँसता भी। उसने अपना धंधा बन्द कर दिया क्योंकि गठिया के रोग की वजह से वह अब चल-फिर नहीं सकता है। माँ बहू से हर घड़ी जंग छेड़े रहती है। उसका कहना है कि बहू के आते ही उसके पति का सारा व्यापार चौपट हो गया और वे बीमार पड़ गये यह अशुभ है पर बहू उसकी कोई परवाह नहीं करती है।

रूपा बी० ए० में पढ़ती है और रामा ने इसी वर्ष कालेज में दाखिला पाया है। यह वजीफा भी पाती है क्योंकि वह हाई स्कूल में फर्स्ट आयी है।

रूपा का रंग—रूप साधारण है। देखने पर [illegible] लगे। पढ़ाई की अपनी लगाई और [illegible] है। वह [illegible] ढंग से रहती है और उसका [illegible] है। पारी वहिन रेखा ने अभी तक [illegible] है।

रात की चाँदनी का [illegible]।

मेरी गोद में सभी प्राणी हैं।

एक कोने में इन्दिरा उसके पास ही खाली बिस्तरा क्योंकि त्रिलोचन अभी कोने की एक सम्मिलित मेज पर दुकान के खाते-बही ठीक कर रहा है। रामा अपने कोर्स की कोई पुस्तक पढ़ रही है और रूपा अपने बहुत परिचित तरुण साहित्यकार स्वरूप का एक उपन्यास पढ़ रही है। स्वरूप की दोस्ती रूपा और रामा दोनों से है। सहसा माँ कड़क पड़ी "बहू जरा ससुर को दो घूंट दूध तो पिला दे।

इन्दिरा पूर्ववत सोती रही।

माँ फिर चिल्लायी क्या कान में रुई लगा कर सोती हो? मैं जो कहती हूँ वह सुनायी नहीं पड़ता है क्या।

इन्दिरा झुंझला कर उठी। उसने अपनी रजाई दूर से फेंकी और थाली के गिरने जैसी आवाज में झंकार करती हुई वह बोली थोड़ी देर पहले पूछा तो आप बोली कि अभी नहीं पीयेंगे और जैसे ही मेरी आँख लगी वैसे ही चिल्लाना शुरू कर दिया। घड़ी भर भी आराम नहीं। कैसे कर्मजलों के हाथों माँ ने मुझे सौंपा है। न खाने का सुख और न सोने का मजा।

इस झड़प ने घर में सनसनी भर दी।

त्रिलोचन के हाथ की कलम रुक गयी। रूपा और रामा ने भाभी की ओर देखा। रेखा खर्राटे भर रही थी। बाप का हुक्का गुड़गुड़ाना बन्द हो गया।

'देखा त्रिलोचन! अपनी आँखों से देख ले कि तेरी बहू मेरे साथ कैसा सलूक करती है? शेरनी की तरह मुझ पर झपटती है काट खाने को है। तेरे सामने मैंने इसे सिर्फ तेरे बाप को दूध पिलाने के लिए कहा था? माँ काँपती हुई त्रिलोचन के पास आ गयी। उसने उसकी मेज पर जोर का हाथ मारा। मेज अपनी जर्जर-दुर्बल टाँगों को लेकर काँप उठी।

त्रिलोचन ने बड़ी तटस्थता से अपनी माँ और बहू को देखा। बाद में वह इन्दिरा से बोला इन्दिरा तुम्हें माँ के साथ ऐसा सलूक नहीं करना चाहिए। आखिर यह हम सबकी माँ है।"

"जो माँ अपना रुतबा न रख सके उसके साथ अच्छा व्यवहार कौन कितने दिन तक करेगा? इन्दिरा की आँखें फैल गयीं।

माँ की आँखों के आगे गुस्से की धुंध छा गयी। उसने अपनी आँखों को पोंछ और मिचमिचा कर कहा "देखले अपनी हीर की जुबान को कैसी कैंची सी चल रही है? सुन रे त्रिलोचन अपनी इस बिलोयाल को समझा दे वर्ना मैं कभी जमुना में डूब मरूँगी।

त्रिलोचन ने इन्दिरा को आधा भरे स्वर में कहा 'चुप चुप रह इन्दिरा। माँ जो कुछ भी कह दे उसे चुप कर दिया कर, इसका कहा सुना कुछ मत माना कर।"

'अरे मेरे पुत्तर एसे भाग मेरे कहाँ? यदि मैं ही कर्मजली निरभागी नहीं होती तो क्यों मुआ पाकिस्तान बनता? क्यों मैं अपनी हरी-भरी गृहस्थी को छोड़ कर आती? क्यों मेरे घर ऐसी मुँह-फट और निपूती बहू आती? काम को तो लोग नहीं पाती पर जबान न मारे दरवाजे बात रखे है। हाय मेरे भाग कब मेरे सोक महल में दादी की आवाज गूँजेगी कब मेरे अंगना में 'काका' का रोना गूँजेगा।

इन्दिरा जिस तरह नमाड़ा बजता है उस तरह तड़ाक से बोली "अरी मेरी कौशल्या मात जी पहले अंगना आया घर तो लो।"

"चुप रह कर बदजुबान! यह ताना मुझे नहीं अपने खसम को दे। मेरे तो सात-सात अंगना आया घर था और एक नहीं दस बीस खनते-कूदते बाल थे। मुझे दोष मत दे बहू जिस दिन मैं उसके सितारों का जड़ा ओढ़ना ओढ़ कर आयी थी उसी दिन से इस घर नव निधि और दस सिद्धि वास करने लगी तो समझी? यकीन न हो

तो अपने इस साठ साल के ससुर से चुप है। क्यों रेखा के पिता जी बोलते क्यों नहीं ?

रामलाल ने उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। जल्दी-जल्दी हुक्का गुड़गुड़ाने लगा।

इन्दिरा ने चुनकर जवाब दिया 'अब इन पाँवों को क्या हो गया मेरी मात पाँव तो नहीं हैं, क्यों नहीं यहाँ पर उनकी बारिश होती ?

त्रिलोचन ने जोर से मेज पर थाप मारी। मेज हिल गयी। मैं भी डर गया।

त्रिलोचन मूड तत्पर सैनिक की तरह उठा। गर्ज कर बोला 'तुम दोनों चुप नहीं रह सकतीं। कम-से-कम एक को तो चुप रहना चाहिए।"

रूपा ने माँ को समझाया माँ तुम्हें अब इस तरह का गुस्सा नहीं करना चाहिए।"

रामा झटपट आगी और रूपा की बात को काटते हुए बोली 'तू माँ को क्यों कहती है ? भाभी को क्यों नहीं समझाती ? माँ से इस तरह जबान लड़ाते हुए इसे शर्म नहीं आती।"

इन्दिरा ने उसे आग्नेय नेत्रों से देखा। रामा ने इसकी कोई परवाह नहीं की। माँ और इन्दिरा दोनों एक साथ बड़बड़ा उठीं। रो पड़ीं। धीरे-धीरे शांति छा गयी। जो काम होना था वह हो गया। बूढ़ा दूध पीकर सो गया।

धीरे-धीरे सब सो गये। त्रिलोचन ने एक बार बड़ी सावधानी से सबको देखा। अपनी बत्तियों को बन्द किया। धीरे-धीरे चोर की तरह अपनी पत्नी के पास आया। उसे झिंझोड़ा। इन्दिरा ने तड़प कर कहा 'क्या है ?

'चु ऊ ।" उसने अपने मुँह पर उँगली रखी। इन्दिरा करवट बदल कर सो गयी। त्रिलोचन की आँखों में विवशता और अतृप्तियाँ

का सागर लहरा उठा । उसने एक बार उड़ी-उड़ी सी नजर अपनी सोयी हुई दुनिया पर डाली और वह अपने दिल में प्यासों की लाखों चाहें लेकर थरथराता सा सो गया ।

× × ×

सुबह !

स्टोव जल रहा था । एक दरवाजे से प्रकाश सहमा-सहमा सा आ रहा था । आइए, मैं अपना थोड़ा और परिचय दे दूं । दरवाजे पर एक टाट का पर्दा लगा हुआ है । ऊपर की पटरियों पर बर्तन सजे हुए हैं । बेतरतीबी से सामान पड़ा है । एक ओर चूल्हा है और दूसरी ओर खाने का सामान ।

स्टोव पर पानी उबल रहा है । खद्-खद् की हलकी ध्वनि आ रही है । दूध और चाय स्टोव के पास पड़े हैं । इन्दिरा ने लपक कर चीनी के पीपे को सम्भाला । वह एक दम खाली था उसने त्रिलोचन से कहा "आप जरा रामा से कह दें कि वह बाजार से सेर भर चीनी ला दे ।"

"तुम नहीं कह सकती ।

"नहीं ।

क्यों ?

"कह दिया न मेरा मन ठीक नहीं है । गुस्से में फिर ऊलजलूल निकल गया तो यह सारा घर मुझे नोचने को दौड़ेगा ।"

"क्या अजीब औरत हो ? ऐसी बात किये बिना रह ही नहीं सकती । अरे जरा अपने दिमाग को ठंडा रखा कर ।

उसने त्रिलोचन की ओर जलती दृष्टि से देखा और फिर अपने काम में व्यस्त हो गयी ।

त्रिलोचन ने रामा से कहा "रामा ! जा लाला से जल्दी से सेर भर चीनी ले आ।"

"अभी भैया !" कहकर रामा बिना दुपट्टे ही लाला के दूकान की ओर चल पड़ी। दूकान नुक्कड़ पर ही थी। लाला के बबुआ बेटे केदार ने रामा के उन्नत उरोजों को तीखी नजर से देखा। रामा लज्जा गयी। उसने अपने हाथों को इकट्ठा कर लिया। तभी आ गये आचार्य भारती जी। एक आर्य समाजी स्कूल में हिन्दी के अध्यापक थे और द्विवेदी कालीन कविताएं बनाते थे। उन्होंने ज्यों ही रामा को देखा त्यों ही नाक भौं सिकोड़ कर बोले 'हरे-हरे, क्या जमाना आया है। केदार इसको जल्दी से सौदा दे।'

रामा सौदा लेकर भाग आयी। उसने सुना, 'क्या लड़के की उम्र पड़ रही है पर छोकरियां बिना ओढ़े ही आवेंगी।'

चाय पीने के बाद खाना पकाना होता था पर आज इन्दिरा का मन खराब था। वह चाय पीती-पीती सोच रही थी—मैं कैसी निरभागी हूँ। माँ ने मुझे भीख पैसा की तरह इस कोठरी में डाल दिया। न यहाँ काम की कद्र है न यहाँ अहसानों का लिहाज। दिन-भर इनके लिए मरे-खपे पर नतीजा सीधे बोलो में मिले। हे गुरु साहिब मुझे इस नरक में क्यों डाला? यह कुंभीपाक है आग ही आग सब ओर आग। सास मुझे निपूती कहती है पर यहाँ कोई औरत अपनी कोख खोल भी कैसे सकती है? न सोने की जगह, न हँसने का मौका। कैसे छातियाँ दूध से भरें और कैसे आँगन में लड़का ठुमके। उसका मन एकदम खराब हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह कै करदे। जो विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर लगा रहे हैं उन्हें वह कै द्वारा वमन दे। वह उठी। अपनी आन्तरिक शक्तियों की आज्ञा से वह दरवाजे के बीच बैठकर बकने लगी।

रूपा ने पीठ के पीछे हाथ फेरते हुए पूछा 'क्या हुआ भाभी?'

'जी मिचला रहा है।'

क्यों ?

"पता नहीं।'

रामा ने नाक भी सिकोड़ा जैसे यह सब सच नहीं नाटक हो रिहर्सल किया हुआ नाटक। तभी रूपा ने पुकारा "रामा जा मा कर पानवाले से एक पीपरमेंट का पान ले आ।"

रामा इस बार लिहाफ ओढ़ कर चली। उसे सहसा माताजी की याद आ गये। पास आ गया। पास आकर इन्दिरा ओढ़ कर सो गयी। होते-होते उसने सोचा कि आज मैं दिन भर कोई काम नहीं कर ली। मुझे ही समझने का कम अब मिलेगा। सारी उम्र सूख जायेगी रोटियां सेकते-सेकते। फिर जैसे वह हुस ही भर भर आयी कोई सुख नहीं जिस औरत को पति के अंग होने का सुख न हो उसकी कोख कैसे सुख सकती है! उसके मन आंगन में एक नन्हे शिशु के पांव आने आये। पांव ठमक-ठमक कर बजने लगे। वह ममता से भीग गयी। मने में घुटती हुई रुलाई आंसू बन कर बरस पड़ी। विचार अब भी अनवरत रूप में चल रहे थे "कोई स्नेह की भाव भूमि पर उसे प्यार नहीं करता वह दासी की तरह दिन भर काम करती है, कोई भी उसके काम की तारीफ नहीं करता कोई भी उसकी पीठ को नहीं थपथपाता सभी उसे सताते हैं, तड़पाते हैं। "बस एक रूपा उसके मर्म को छूती है, उसके दिल की बात समझती है। वह विह्वल हो गयी।

सास ने ऊँचे स्वर में पूछा 'आज खाना नहीं पकेगा क्या ?

इन्दिरा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

माँ तल्ख-स्वर में बोली " साहबजादी को कल रात थोड़ा सा कह क्या दिया मानों कोई बड़ा भारी जुल्म कर दिया। मैं निरभागी ऐसी हूँ कि जबान पर काबू नहीं रख सकती।

रूपा इन्दिरा के पास गयी। रूपा सदा आपस में समझौता कराया करती थी। उसके जीवन की नीति थी कि झगड़े को बढ़ाने

की बजाय उसे शांत कर दिया जाय। आकाश को छूने वाली दोनों लालसाओं को थोड़ा-थोड़ा सुख है तो उनमें मेल हो सकता है।

इन्दिरा ने उसकी ओर आंसू भरी आंखों से देखा। आंखें रोने से सुर्ख लाल हो गयी थीं। बरौनियों के मुलायम बाल भीग गये थे। चेहरा सूखी पत्तियों की तरह उदास था।

"क्या बात है भाभी ?

'जी ठीक नहीं है।"

"कोई बात नहीं। खाना मैं पका लेती हूं।' रूपा ने चूल्हा संभाला।

उसके चूल्हा संभालने के साथ ही रामा की आंखों में एक अजीब सी चमक चमकी और वह मां से बोली मां मैं आज यहां खाना नहीं खाऊंगी मुझे मेरी सहेली के यहां जाना है।" और वह रूपा के पास आकर बोली रूपा मैं आज जल्दी जाऊंगी मेरे लिए खाना मत बनाना।

रूपा उसकी चालाकी समझ गयी। जब वह खाना बनाने की कोशिश करती है तब वह अपने साथ रामा को भी जुटा लेती है पर आज रामा ने बड़ी सफाई से किनारा कर लिया। वह जल्दी हाथ मुंह धोकर बाहर निकल गयी।

वह कहां गयी ? स्वरूप के पास। स्वरूप बेचारा एक लेखक। स्वतंत्र लेखन पेशा करता है।

बेचारी रूपा १२ बजे तक खाना पकाती रही। इन्दिरा ने उस दिन खाना नहीं खाया। रूपा कालेज भी देर पहुंची।

× × ×

इंदिरा अपने मैके चली गयीं-एक दिन के लिए। घर में रह

गयी थी रूपा रामा रेखा और माँ-बाप। हालाँकि माम इतवार है पर त्रिलोचन का मालिक लाला दीनदयाल उसे थोड़ी देर के लिए अपने घर बुलाकर ओवर का एडजस्टमेंट कराता है। माँ बार-बार अपने पति को चाँदनी चौक के सीस गंज गुरुद्वारे के दर्शन करने का अनुरोध कर रही थी पर बाप कह रहा था कि पैसों के बिना वहाँ कैसे जाया जा सकता है?

तभी रूपा ने तीन रुपए निकालकर पिता जी को दिये और रेखा को आज्ञा दी कि वह उनके साथ चली जाय। अब रह गयी थी—रूपा और रामा।

तभी आ गया स्वरूप।

स्वरूप को देखते ही रामा खिल उठी। रूपा ने गंभीर मुद्रा बनाये हुए उसे नमस्कार किया।

"कहो कैसे आना हुआ? रूपा ने बैठने के साथ ही कहा मैं तो आधे घंटे के बाद बाहर जा रही हूँ।"

"यूँ ही आ गया। इधर आ रहा था। सो पान खाओ तुम्हारे ले आया हूँ।

केवल पान?" रूपा ने मुस्काकर पूछा।

"चाय तो तुम भी पीना चाहती हो?"

रूपा चाय का कहने के लिए बाहर गयी। बाहर उसे पड़ोसी सरदार का लड़का बंता मिल गया। उसने बंता को कहा 'जा होटल वाले से कहना था कि तीन चाय त्रिलोचन बाबू के घर पहुँचा दे।'

इसी बीच स्वरूप ने अपनी वासना भरी आँखों को रामा पर जमा कर कहा पान उसके लिए नहीं तेरे लिए लाया हूँ खामोशी न?

हूँ। पर रूपा के जाने के बाद तेरे हाथ से।" उसने अपनी आँखों को नचाया। तभी रूपा ने वापस दर्श लिया। वह लपक कर अन्दर

में कपड़े खोजने लगी। अच्छा हुआ कि रूपा ने स्वरूप की कम हेय हरकत को नहीं देखा जो संभवतः बड़ा हंगामा मचा सकती थी। मैं भी थोड़ा सा आंदोलित हो गया। स्वरूप ने सरक कर रामा के फूटते हुए एक कलश को दबा दिया।"

रूपा ने विहँस कर कहा, 'चाय भी आप के लिए आ रही है। और कोई हुक्म ?'

'कुछ नहीं। मुझे चाय मिल जाय बहुत है। पान मैंने बहुत ही कम कर दिये हैं। यह सब आपके लगातार रोकने का नतीजा है। इसके लिए मैं आप का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

रामा पढ़ने का बहाना करने लगी। पुस्तक के बीच व उंगली रखकर उसे बन्द की और बोली, 'कौन सी नई पुस्तक छप रही है आपकी ?

'तीन नाटक छप रहे हैं। तीनों ऐतिहासिक कोणों में लगने के प्वाइंट ऑफ व्यू से लिखे हैं।"

'तभी आजकल बात चीत में नाटकीयता आ रही है।" रूपा ने हलकी चुटकी ली।

'स्वाभाविक है।"

चाय आ गयी। सभी ने चाय पी। रूपा पैसा देने के लिए अपना संदूक खोलने लगी। तभी स्वरूप ने अपने हाथ की पुस्तक मेज के नीचे रख कर रामा को आँख से संकेत किया कि मैं बाहर जाकर मैं जाऊँगा और वह प्रकट में उठता हुआ बोला, "अच्छा रूपा जी मैं जा रहा हूँ। और तू रामा इस बार भी फर्स्ट आना।'

'जरूर आऊँगी भैया।' उसने नटखट पन से चपल कर कहा। स्वरूप बाहर चलता बना।

रूपा भी कपड़े बदल कर चली गयी।

अकेली रामा और मैं। मैंने भी रामा को गौर से देखा। रामा बार-बार अपने आपको एक छोटे से दर्पण में उतारने की चेष्टा कर रही थी।

यौवन आ रहा था ।

गली के मकान में सुगन्ध पैदा हो रहे थे । रामा ने दरवाजा उढ़का । अपने कुर्ते को खोला और दूसरा पहना । तभी मुझे उसकी चालाकी याद आयी ।

जब रूपा बाहर जाने लगी तब रामा ने बड़े भोलेपन से कहा "रूपा स्वरूप भैया अपनी यह पुस्तक भूल गये । उसने पुस्तक हाथ में उठाली ।

"भूल गये तो लेने भी आयेंगे । तू कमरे में ही रहना । इसे सूना छोड़कर मत जाना समझी ।"

'ठीक है ।

यह कितनी चतुर हो गई है । सब यौवन के अभाव आमो को सब कुछ सीखा देते हैं ।

तभी स्वरूप ने किवाड़ खोले ।

रामा ने मचलते हुए उसका स्वागत किया ।"उसकी आँखों में प्रथम यौवन का अल्हड़पन था उसके अधरों पर नटखट भरी मुस्कान थी । उनके पास आती हुई बोली' "पुस्तक लेने आये हो ?"

"जी ।"

आजकल तुम्हारी याददाश्त बहुत कमजोर हो गयी है ।

'तुम्हारे कारण ।"

।" उसने उसे इस भंगिमा से देखा गोया वह पूछ रही हो कि क्यों ?

"क्योंकि तुम्हारी सूरत देखने के बाद मुझ कुछ भी ख्याल नहीं रहता ।"

स्वरूप ने गंभीर मुद्रा बनाली ।

"तुम क्या सोचने लगे ?"

"मैं सोच रहा था कि इस प्यार का अन्जाम क्या होगा ? जो हम कर रहे हैं वह आखिर क्या है ?"

यह प्यार है।

"मैं भी मानता हूँ पर यह मिलेगा।

"जरूर मिलेगा। तुम में हिम्मत होनी चाहिए।

"मुझे किसका भय है।"

अपने डरपोकों का।

"नहीं। मैं उनसे खाने के लिए रोटियाँ थोड़े ही माँगता हूँ। रामा! वही व्यक्ति अपने विचारों के अनुकूल अपनी इच्छा को पूरा कर सकता है जो आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो।

"फिर मैं भी हिम्मत रखूँगी" उसने बात को खत्म करके पूछा "अपने हाथ से चाय बना कर पिलाऊँ।

पिलाओ।

मैं कमरा उसके बाद देखता रहा कि स्वरूप सुख से बाहर जाने तक बहुत गंभीर बना रहा। उसने कोई भी दिलचस्पी हरकत नहीं की। उसने चंचल रामा को छूआ तक नहीं। वह सोचता रहा गंभीर मौन बना सोचता रहा।

तुम्हें क्या हो गया?" रामा ने पूछा।

"कुछ नहीं। सोच रहा हूँ कि उन्हें जब यह मालूम होगा कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ उस दिन उन्हें बड़ा दुख होगा। मैं दिन प्रतिदिन घिर रहा हूँ क्योंकि जितने भी स्नेह-बन्धन-ममता और विश्वास के आधार हैं उन्हीं में भाई-बहिन के स्नेह में बाँध रहा हूँ। "रामा! कल तुम अचानक मेरे घर पहुँची तो मैं हतप्रभ रह गया था। मुझे सपने में भी यह ख्याल नहीं था कि हमारे मनि पवित्र प्रेम भावनाओं का यह प्रभाव और यह प्रतिक्रिया होगी। उन भावुकता भरे पलों का यह प्रतिफल प्रतिदान मिलेगा।

रामा बीच में ही बोल पड़ी "मैं तुम्हें सच्चे दिल से चाहती हूँ। ईश्वर ने चाहा तो मैं तुम्हारी ही रहूँगी। छोड़ो इन फिजूल की बातों को भी यह पान मेरे हाथ से खाओ।

नहीं।

फिर इस पान को तुम अपने हाथ से मुझे खिलाओ।"

स्वरूप ने बिलकुल निरुत्साह से उसे पान खिलाया। वह अपराधी की तरह गर्दन झुकाकर बाहर निकला। मैंने सोचा कि इन्सान की आत्मा की गहराइयों में सोयी अच्छाइयाँ जब जागती हैं तब वह अपने आप पर लानतें बरसाता है।

× × ×

आज घर के सदस्यों की एक सभा थी। सभी सदस्य छोटी रेखा को छोड़ कर उपस्थित थे।

मामला बड़ा गम्भीर था।

लाला और दूध वाले का एक-एक माह का बकाया चढ़ गया था और दूसरा महीना भी खत्म होने वाला था। पर माह त्रिलोचन की सारी तनखा और पचास रुपये अधिक कपड़ों में खर्च हो गये थे। इस माह उसे सिर्फ पचहत्तर रुपये ही मिलेंगे। ज्यादा वह मांग नहीं सकता। इस पर अभी तक उस पर दुकान का डेढ़ सौ-सौ भी कर्ज है ही।

आज लाला ने सौदा देने से इनकार कर दिया फलस्वरूप बहुत देर तक तवा चूल्हे पर जलता रहा। इन्दिरा मक्खी बनाकर हाथ पर हाथ रखे बैठी रही। किसी ने एक रुपया भी निकाल कर नहीं दिया कि जिससे शक्कर आटा लाया जा सके।

माँ ने निठल्ली बैठी रमा को कहा "जाकर आटा क्यों नहीं लाती? बैठी-बैठी मक्खियाँ मार रही है।"

रमा अपनी पुस्तक को मेज पर पटक कर कुछ चिढ़ हुए स्वर में बोली "अरी मेरी माँ मैं तेरे लिए नहीं हूँ लाला के यहाँ

थी उसने मेरा मुँह सहलाते हुए कहा कि पहले बकरियाँ का बाद में सोता था। अब तू ही बता कि मैं सोता कैसे आऊँ ?

माँ के झुर्रियोंदार चेहरे पर एक कम्पन सा आया। झुर्रियाँ और गहरी हो गयी। बोली 'अपनी भाभी से एक रुपया ले ले त्रिलोचन आने वाला है कम से कम तुम लोग उसका तो ख्याल रखा करो।

इन्दिरा तुनक पड़ी। अपने सामने पड़ी कटोरी को हाथ से पटकती हुई बोली "मैं कहाँ से रुपया दूँ ? तेरा पूत मुझे मुट्ठी भर भरकर सुना छुपा कर दे देता है न ? अरी मैं तो ऐसी निरभागी हूँ कि इस घर में आने के बाद दस का नया नोट किस रंग का है, नहीं देखा। नये पैसे जरूर एकाध बार देखे हैं। हूँ !"

सन्नाटा।

मैंने देखा इन्दिरा बहू लाल टमाटर की तरह हो गयी है। गुस्से में वह और सुन्दर तो नहीं लगती थी पर उसका चेहरा एक नये ढंग का अजीब प्रभाव छोड़ता था। उसके होंठ गुस्से में लम्बे होकर फैलते थे और हिलते थे।

माँ ने रामा से कहा, तेरे पास ।"

हालांकि उसके पास दो रुपए बचाये हुए थे पर वह जानती थी कि देने के बाद उसे वापस नहीं मिल सकते इसलिए वह आश्चर्य का भाव प्रकट करते हुए बोली "मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। महीने के शुरू में पाँच रुपए मिलते हैं, वह कभी के खत्म हो गये।

धीरे-धीरे लकड़ियाँ बुझने लगीं। बुझती लकड़ियों के धुएँ ने मुझमें घुटन पैदा कर दी। मेरा दम घुटने लगा। भला हो उस इन्दिरा बहू का कि उसने आग को एक दम ठंडा कर दिया। धीरे धीरे धुआँ चला गया। सबकी आकृतियाँ स्पष्ट दिखने लगीं।

रामा आपस पढ़ने में तन्मय हो गयी। इन्दिरा घुटनों को खड़ा करके हाथों में सिर को छुपाकर बैठ गयी। कभी-कभी वह अपना

रूपा मुँह पल भर के लिए उठाकर यह बताने का प्रयास करती कि वह पश्चात्ताप की आग में जल रही है।

माँ चुप थी। उसकी आँखों में अथाह सूनापन झलक रहा था। बाप निर्लेप योगी की तरह अपना हुक्का गुड़गुड़ा रहा था।

सूरज डूब गया। अंधेरा धुएँ के साथ मिलकर यमुना के उस पार बस उपनगरों से उसके मुर्दे जल-प्रवाह पर से होता हुआ सारी दिल्ली को स्याह कर गया।

रूपा नई सैंडिल पहनकर आई थी। उसकी खट-खट ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। हाथ की पुस्तकों को बगल में दबाकर वह चढ़ी। चढ़ते समय वह एक लम्बा साँस लिया करती थी। कारपोरेशन ने सीढ़ियाँ बनाने का हुक्म नहीं दिया था इसलिए एक लकड़ी का बक्सा नीचे रखा हुआ था जो अनुपात से बहुत नीचे था और चढ़ने में एक विशेष शक्ति का प्रयोग करना पड़ता था।

रामा ने जैसे ही सैंडिल को देखा, वैसे ही कमल की तरह खिल कर पूछा "यह सैंडिल कहाँ से लाई?"

खरीदकर।

'लेकिन पैसे? उसने तुरन्त पूछा।

रूपा को इस तरह के प्रश्न करना गवारा नहीं हुआ पर वह चुप रही। उसने रामा के चेहरे को पढ़ते हुए कहा "कंजूस का चीलना धोखा नहीं देता, मैंने शीला से पन्द्रह रुपए उधार लिए थे शीला मेरी धर्म बहिन है और वह बहुत ही अच्छे खाते-पीते घर की है समझी।"

माँ ने बीच में ही कहा "सैंडिल कितने की है?"

'साढ़े तेरह रुपए की।"

"फिर तू जल्दी से रामा को एक रुपया दे ताकि वह भाग कर आटा ले आवे आज लाला ने सौदा देने से साफ इन्कार कर दिया है।" उसकी आँखों में जलता प्रश्न था।

रूपा ने दो रुपए दिये। रामा आटा ले आयी। चूल्हा पुनः चेतन हो गया। लपटें तवे के पिछले कोमल भाग को स्पर्श करने लगीं। रोटियाँ इन्दिरा अनमने भाव से सेंकने लगी।

शाम सातम का अंधेरा था। सभी आदमी जिन्दा थे पर मुर्दों की तरह। मुझे हँसी आ गई कि इन्सान मुर्दा बन कर भी जीता है। यह आज की असफल पीड़ित विडम्बना है।

इतनी संकटकालीन स्थिति में भी उन्होंने खाना खाया। भूख से अधिकतम संसार में कोई नहीं है। बड़ी प्रचंड-प्रखर है उसकी आग। किसी भी तरह उसको ठंडा करना ही पड़ता है।

सबने अपने पेट की आग को बुझा लिया।

तभी त्रिलोचन आया। रात के आठ बजे थे और गली में होटल में बज रहे रेडियो के गीत की कोई कड़ी हुई घुस आती थी। शायद यह किसी फ़िल्म का कोई उत्तेजक गीत था।

त्रिलोचन बहुत उदास था। उसकी धर्म पैंट पीछे से फट गयी थी। रूपा ने उस फटी पेन्ट को देखा तो अचरज से पूछ बैठी' यह पेन्ट पीछे से कैसे फट गयी?"

'जब तकदीर फटी हो तब ऐसा ही होता है रूपा।" उसने व्यथापूरित निश्वास छोड़ा।

"लेकिन फटी कैसे?"

रिक्शा से। उतर रहा था तभी पीछे से एक लोहे की पत्ती से फट गयी।

रूपा ने रिक्शा और उसके मालिक को कोसना शुरू किया। रेखा खाना खाकर अपनी सहेली अम्बा की बहिन सुरेखा के घर पढ़ने चली गयी।

त्रिलोचन बाथ पखाने में निपटने गया। वहाँ से आकर वह बेमन रोटियाँ तोड़ने लगा। खाने की संज्ञा देना उस क्रिया को व्यर्थ ही है।

इसके बाद शाम की गम्भीर सभा का आरम्भ होता है।

त्रिलोचन ने पूछा "लाला ने क्या कहा?"

रमा ने अपनी हाथ की पुस्तक पर ध्यान जमा कर भाई पर एक सरसरी दृष्टि से फेंक कर कहा "उसने साफ-साफ शब्दों में कह दिया कि पहले का बकाया दे दो और नया सौदा लेलो।"

त्रिलोचन आपे से बाहर हो गया। लाला को कई गंदी गालियाँ दीं। दाँतों को आपस में पीसता हुआ वह बोला "लाला कितना नीच है! एक तो हमसे मन चाहे दाम लेकर मुनाफा कमाता है दूसरा ऊपर से जरा भी लिहाज नहीं रखता। मैं अभी जाकर कम्बख्त की खबर लेता हूँ।"

रमा बहुत ही विवेकशील है। बहुत ही सोच समझकर, देखभाल कर कदम उठाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस अस्फुटित कली को पराग की जगह परिवार का भार सहना पड़ता है। जो पराग के भार से टूट जाय वह परिवार के भार से कैसे जीवित रहेगी? एक ऐसा प्रश्न मुझे खींचता रहता है।

वह गम्भीर स्वर में बोली "इतना गुस्सा में नहीं आना चाहिए भैया वह लेनदार है इसलिए उसकी गर्दन ऊँची ही रहेगी। आप उसे विनती कीजिए कि वह कुछ दिनों की और मोहलत दे दें ताकि उसका बकाया चुकता हो जाए।"

"मैं उसको एक पाई भी नहीं दूँगा। अब उस जैसा पैसा भी देना हराम बराबर है। मैं दूसरी दुकान से सौदा ले आऊँगा। वह लाला का बच्चा जो करना चाहे करले।" वह बहुत उत्तेजित हो गया। उत्तेजना के कारण वह काँपने लगा। उसके सिर की नसें फूल गयीं।

"आप व्यर्थ में उत्तेजित हो रहे हैं। जो काम पैसों का है पैसों से ही होगा।" इन्दिरा ने शांत स्वर में कहा।

"पैसा अभी जहर खाने को भी नहीं है।

चुप्पी।

केवल हुक्के की गुड़गुड़ाहट।

माँ ने अचानक अपने सिर पर हाथ मारकर रोने स्वर में कहा "मैं अभागी मर-खप जाती तो निहाल हो जाती। इस बुढ़ापे में मुझ से अपने बच्चों का यह दुख दर्द नहीं देखा जाता। ऐसे दिन देखने के पहले यह दुख मेरी आँखें ले लेता तो अच्छा होता। आग गिरे ऐसे लोगों पर जिन्होंने हमसे हमारा वतन छीन लिया।'

सब माँ के इस अति नाटकीय भरे अभिनय को देखने लगे। रूपा ने माँ से अनुरोध किया "माँ इस तरह तुम्ही हौसला खो बैठे तो हम बच्चों का क्या हाल होगा? हम अपने धीरज को कहाँ हार बैठें?"

'तू चुप रह मेरी माँ।" माँ झल्लायी "मेरे दुख दर्द को कोई नहीं जानता? घर में दुख दिल में दुख और इस पर दो-दो कुँवारी जवान छोकरियाँ। न रात चैन न दिन को राहत। हर घड़ी हाय हाय।

त्रिलोचन ने आक्रोश भरी नजर से देखा। रामा में लापरवाही भरा यू पागल था। रूपा अवसाद की अथाह लहरों में घिर गयी थी। इन्दिरा आँखें फाड़ फाड़ कर माँ को देख रही थी। लेकिन सारे जहाँ से प्यारा हम सबका बाप प्यारा अपना कोने में प्रस्तर प्रतिमा बना हुक्का गुड़गुड़ा रहा था।

रूपा ने उस भारी मौन को तोड़ा "माँ तू चुप रह। अभी कुँवारी जवान छोकरियों के बारे में सोचने का समय नहीं है। अभी यह सोचना है कि लाला व दूधवाले के रुपए कैसे चुकाये जायँ?

इन्दिरा ने आँखों को स्थिर करके कुछ भौंहों की कमान को खींच कर कहा "रूपा ठीक कहती है।"

त्रिलोचन ने गर्दन नीची करके कहा, "पर रुपये आयेंगे कहाँ से?' मेरा लाला मुझ पर ऐसे ही बिगड़ता रहता है। बार-बार अपनी कम इनकम होने का रोना रोता है। मेरी हिम्मत उसके ऐसे बर्ताव को

देखकर कुछ माँगने की नहीं होती। यदि माँग भी तू या तो वह कोरा उत्तर ही देगा।

रामा ने एक नया प्रस्ताव रखा "रूपा। तू मीना से क्यों नहीं उधार माँग लेती ?"

सबकी आँखें एक साथ रूपा पर जम गयीं। रूपा एक साथ इतनी आँखों को नहीं सह सकी। वह जैसे अपने आपको किसी अपराध से दूर करने की भावना लेकर बोली "नहीं नहीं मैं उनसे रुपए नहीं माँग सकती।

पैसा गया वह अपनी सेविका के लिए रुपए माँग सकती है पर घर के के लिए नहीं। रामा ने रूपा पर ताना कसा।

त्रिलोचन बिलबिलाता हुआ बोला "रूपा तेरे हाथ में हमारी लाज है। तू मेरी बहिन है खूब जानती है कि मैं किस तरह इस गृहस्थ का चक्का चला रहा हूँ। सब रास्ते बन्द हैं इसलिए तुझे यह तकलीफ दे रहा हूँ।

माँ ने भी ऊँचे स्वर में कहा अरी तेरी सहेली का रुपया खायेंगे नहीं धीरे-धीरे चुकता कर देंगे। ना है न मरी माड़े !

विवशता की एक परत उसकी आँखों की पुतलियों के आगे आयी और गयी जैसे उसकी आँखों की ज्योत्स्ना का स्रोत एक पल के लिए सूख गया हो। जैसे उसकी विचार धारा क्षणभर के लिए गहरे कुहासे से आवृत हो गयी हो।

इन्दिरा भाभी ने भी अपनी सास की बात का समर्थन किया "तुम्हें हमें इस संकट से उबारना ही पड़ेगा। यह हमारे घर की इज्जत का सवाल है।

सबका अनुरोध।

रूपा ने बड़ी विवशता से हाँ भरी। उसकी स्वीकृति में वही मजबूरी थी जो पुलिस की निर्मम पिटायी से चोर चोरी करने की स्वीकृति प्रदान करता है।

दूसरे दिन रुपए आ गये। सामान और दूध का कर्ज़ा चुक गया। रूपा ने पाँच रुपए अपनी माँ के हाथ में भी चोरी छुपे दिए। माँ ने मन ही मन लपेटे दिल से अपनी इस पावेनूर को आशीष दी और उसे एक अच्छा दूल्हा मिले इसकी शुभकामना की।

लेकिन इससे त्रिलोचन की भली चेष्टा नहीं गयी। उसके कपड़ों और रहन-सहन का स्तर ऊँचा नहीं उठा।

इन्दिरा की भी घरेलू शिकायतें जीर्णशीर्ण हो गयी थीं। आखिर उसने घर में ही शान्ति की मिसमार पहल की। फिर क्या था? सास ने घर में कोहराम मचा दिया। सास-बहू में उस दिन फिर बड़ी तू-तू मैं-मैं हुई।

रूपा ने दूसरे ही दिन इन्दिरा का थोड़ा सा पक्ष लेते हुए माँ को डाँट दिया, 'भाभी को हर वक्त डाँटना अच्छा नहीं? आखिर यह भी इन्सान है। इसे जितना मुहब्बत करोगी उतना ही मनु तुम्हें बरकत देगा।

माँ की त्योरियाँ चढ़ गयीं। फटकार कर बोली, चुप रह! ज़बान के लगाम लगा। एक बित्ता की उमर लेकर आकाश जैसी बात मत बघार। मुझे उपदेश देने चली है। अरी तू मेरी कोख से पैदा होकर मेरी हेठी दिखाती है। अपनी इस भाभी की संभाल मुझे तकलीफ होती है तभी मैं रोकती-टोकती हूँ वर्ना मरी जूती परवाह करे किसी की। माँ ने ज़ोर का हाथ ज़मीन पे मारा।

चैतन्य!

कौन चैतन्य! मैं बताऊँ मेरी तरह मेरा अबोध साथी रामलाल एक साथ बोला, 'तू चुप रह त्रिलोचन की माँ तेरी ज़ुबान कभी भी शुभ शब्द नहीं निकालती। तेरी हाय-हाय ने इस घर की सुख-शांति लूट ली है।

सच हुए तू भी इनकी भीड़ बीतने चला आया। राम पाये

इस बहू ने सब पर क्या जादू-टोना कर दिया है। सभी इसी की ही खैर मना रहे हैं।

"मैं कहता हूँ कि तू चुप रह वर्ना मैं तेरी जुबान खींच लूँगा। रह चुप।

माँ फूट-फूट कर रो पड़ी। उसके तेज रोने से मैं बहरा हो गया। हुक्का तेजी से गुड़गुड़ाने लगा। छोटी लड़की रेखा भी सिसक पड़ी। शायद उसे माँ के रोने को देखकर रोना आ गया था। रमा तमाशा-बीन की तरह हाथ की पुस्तक के सहारे अपनी गर्दन को टिकाये निस्पंद सी बैठी रही।

धीरे-धीरे सब थक गये। खाना बाहर हो गया। किसी ने भी रुचि से नहीं खाया। रमा बूढ़ा-बुढ़िया और इन्दिरा ने मुँह में दाना भी नहीं डाला। त्रिलोचन ने इस तनाव को केवल अभाव ही समझा।

रात आ गयी। अंगीठी भी बुझ गयी। इन्दिरा ने चाहा कि वह अपने पति को सब कुछ बता कर अपना दिल हलका कर लें लेकिन वह कैसे बताये? पास ही सभी सोये हुए थे। जरा सी आवाज से कम से कम बूढ़े-बुढ़िया की नींद खुल ही जाती है।

वह रात भर इसी कशमकश में गहरी नींद नहीं सो पायी।

× × ×

टन्।

टन्।

दूर ठिठुरती हवा के परों पर गिर्जे की घंटा ध्वनि बैठी हुई रमा के कानों में ध्वनित हो रही थी। रमा कोई उपन्यास पढ़ रही थी पढ़ते-पढ़ते वह थक गयी। आलस और थकान का हलका भारीपन

उसकी पलकों को ढाँपने लगा। उसने एक अंगड़ाई ली और आलस मरोड़ा।

मैंने देखा—रूपा के कलश फूट कर छलक पड़े हैं। कपोलों पर दाँतों के हलके-हलके चिह्न भी हैं।

रात और एकान्त।

मेरी आँखें उसके चेहरे पर जम गयीं। वह अचकचा कर उठी। शीशे में अपने मुख को देखने लगी। फिर घबरा कर उसने चारों ओर देखा। सब सोये हुए थे। उसने इतमिनान का साँस लिया। फिर वह देर तक अपने चेहरे को देखती रही।

देखते-देखते उसकी आँखें भर आयीं। उसने शीशे को रख दिया और वह अपने चारों ओर फैले हुए नरक को देखने लगी। भाभी की एक टाँग नींद में ही भैया की टाँग पर आ गिरी। बाप मुर्दा सा गठरी बना एक कोने में जोर से खर्राटे ले रहा था। उसके पायताने माँ अपना मुँह ढँके सोयी हुई थी। उसकी नजर धीरे-धीरे दूसरी ओर आयी। चूल्हा ठंडा पड़ा था और शायद उसकी राख भी ठंडी हो गयी थी। दो बर्तन जूठे पड़े थे। वहाँ से उसकी नजर और फिसली। भाई की फटी पेंट और मैले चिकट पाये खाट पर अपनी सम्पूर्ण करुणा के साथ रुक गयी।

वह विह्वल हो गयी। उसका स्वर मौन हाहाकार कर उठा 'यह कैसी जिन्दगी है? यह कैसा जीना है? यह नरक है, जीवित हुआ नरक रौरव और कुम्भीपाक।

उसने अन्धेरा कर लिया।

नरक का दृश्य समाप्त हो गया।

पर उसके मानस में बने नरक को कौन मिटा सकता है? उसकी तस्वीर को कौन सा रबर घिसकर साफ कर सकता है? वह अमिट है—गहरे दाग की तरह।

वह बहुत देर तक सिसकती रही बहुत देर तक तड़पती रही। न जाने उसे कब नींद आ गयी?

स्वप्न का सतरंगा संसार।

बीहड़ वीरान जंगल।

जंगल के एक ओर ऊँची-ऊँची पर्वत मालाएँ और दूसरी ओर सूखा-नंगा रेगिस्तान।

उस भयानक जंगल में एक युवती एक कंचुकी और एक पीत रेशमी आधी साड़ी पहने करुण विलाप कर रही है। उसके गालों पर गर्म-गर्म आँसू ढुलक रहे हैं और उसका चेहरा निरन्तर रोने से से मुर्झा गया है। विषाद से व्याकुल उसकी आँखें चारों ओर ढूँढ रही हैं लेकिन एक ओर जंगल और दूसरी ओर सन्नाटे में सोयी पर्वत मालाएँ।

युवती बहुत दूर खड़ी है।

धीरे-धीरे वह पास आती है। उसकी आकृति स्पष्ट हो रही है। अरे यह तो रूपा है मैं हूँ। रूपा पर्वत मालाओं की ओर देखती है। पीछे की गर्जना होती है। उसका रोम रोम काँप जाता है। वह भागती है। उसकी गति पवन वेग सी है और उसका अधनंगा शरीर भागता हुआ बहुत ही आकर्षक लग रहा है।

वह एक सूनी सोयी पर्वत घाटी में पहुँच जाती है। शीतल समीर का झोंका उसके स्वेद कणों को सुखाने लगता है। धीरे-धीरे वह सहज होती है। थकान के मारे उसका अंग अंग टूट रहा है इसलिए उसे अलसायी नींद आ घेरती है।

एकाएक नगाड़े बज उठते हैं।

उसकी आँखें खुलती हैं। वह चौंक पड़ती है। जंगली काले लोग नशे में उन्मत्त नाच रहे हैं। उनके हाथ में विचित्र हथियार हैं और उनकी शक्लें राक्षसों जैसी हैं।

रूपा भय से पुन चीखती है।

एक जोगनी धीमे से स्वर में कहती है—

'हम अपनी वेदना का करेंगे प्रणय
देकर तेरे रक्त की बलि है देवी
डरो नहीं तुम्हारी बलि व्यर्थ से होगी नहीं ।
हम बूंद-बूंद तेरे रक्त से भरेंगे खप्पर'
कण घोर से हाहाकार कर उठती है ।

उसकी आँखें खुल गयीं । सपना भंग हो गया । उसने लपक क
लाइट जलायी । पानी का एक गिलास पिया । बड़ी देर तक अपने
आपको वह आश्वस्त करती रही ।

वह स्वप्न उसको क्यों आया ?

धीरे-धीरे उसने विश्लेषण किया ।

वे सभी उसके विषम जीवन के प्रतीक हैं । 'समाजों' ने उसे दबोच रखा है और वह उनसे घिर रही है । आगे भावी जिन्दगी मे शायद उसे एक-एक बूंद का सौदा करना पड़े । अपनी आपकी महा पीड़ाएँ वैसी पड़े ।

उसने वापस अन्धेरा कर लिया ।

पर उसे नींद नहीं आयी । ठंड की लम्बी और सूनी रात के प्रस्थान की घड़ी अभी बहुत दूर थी । उसके लिए यह सब दुष्कर हो गया कि वह इस सूनेपन को कैसे अपनी आँखों से दूर करे ?

फिर अचानक उसके दिमाग में घूम गये—मैना विश्लेषण के क्षण । वह डर भर आयी । वह चिल्ला पड़ी—यह कैसा जीवन है ? यह कैसा सीमित रहना है ?

भाभी पेशाब करने उठी ।

माँ का कड़ा आदेश था कि पेशाब बाहर किया जाय पर भाभी ने इन सबको सोया जानकर भीतर ही पेशाब करने बैठ गयी ।

× × ×

ठंड का मौसम चली गयी।

गर्मी में त्रिलोचन और इन्दिरा को बातचीत करने के कुछ अच्छे अवसर मिलते हैं। माँ और बाप बाहर खाट डालकर सोते हैं साथ ही एक छोटी सी खाट पर रेखा। इसके साथ ही दूर गली तक जितने भी बूढ़े-बुढ़िया होते हैं उनके बिस्तरे बाहर निकल आते हैं व उन दम्पतियों के भी जिनको भीतर की गर्मी सहन नहीं होती है।

माँ और बाप सो गये थे। भाभी इन्दिरा पीछे के समस्त रात को बन-ठन और सज-संवर रही थी। वह कभी-कभी रात को एक पेटेन्ट रेशमी सूट पहनती थी जिसे वह सुबह होने के कुछ पूर्व ही बक्से में वापस भीतर रख देती थी। रामा इस परिवर्तन का मर्म समझती है। रामा इस पोशाक का अर्थ समझती है। तब वह भाभी को देख देख कर मन्द मुस्कान बिखेरती रहती है। उसके चेहरे पर एक उन्माद भरा सलोनापन आ जाता है।

रूपा अभी तक नहीं आयी थी। आजकल वह देर से आती थी। उसका कहना था कि उसने एक ट्यूशन कर लिया है जिससे घर की इन्कम में पचास रुपयों की वृद्धि हो गयी है। माँ इस ट्यूशन से सख्त नाराज थी पर भाभी बहुत ही खुश थी। त्रिलोचन ने बहिन के इस प्रस्ताव को दबे स्वर में मान लिया। उसने रूपा से यह भी कहा कि वह इसमें से पच्चीस रुपए हर माह अपनी सहेली बीना को देवे।

रूपा आयी। उसकी आँखों में थकान का धुँधलापन था। छाती से चिपकायी हुई पुस्तकें थोड़ी सी अस्त-व्यस्त थीं। उसने धम से पुस्तकों को आले में फेंका। बड़े ही स्नेह-सिक्त स्वर में बोली "भाभी खाना परोस दे, बड़ी भूख लगी है।"

भाभी तुरन्त बाल सँवारना छोड़ कर खाना परोसने लगी। रामा ने रूपा के पास आकर कहा "कल मुझे पाँच रुपयों की जरूरत है।"

"क्यों ?

सहेलियों की पिकनिक है।"

"भैया से मांग लेना।"

'नहीं।

'क्यों?'

'भैया के पास कहाँ है पैसे आजकल। उनका मालिक भी उनसे नाराज है। क्या तू ही देना, भोली न?

"ले लेना।

रामा बड़ी प्रसन्न हो गयी। वह झट से अपने बिस्तरे पर जाकर पड़ गयी। गर्मी बहुत थी पर ऐसे नींद नहीं आ रही थी। वह कू कू करके उठी और रूपा से बोली "तुझे गर्मी नहीं लगती।

नहीं।"

"मैं गर्मी के मारे मर रही हूँ।

'तू कश्मीर में पैदा हुई है न?"

"रूपा तू मेरा मजाक मत कर।" उसके स्वर में सहसा अनुनय तैर आया— माँ से कहकर आज भर के लिए मुझे बाहर सोने का अवसर दिला दे।

"जा चुप-चाप रेखा के साथ सो जा।"

रामा हँसी-खुशी बाहर चली गयी। इन्दिरा रूपा को खाना खिलाने बैठी। रूपा ने इन्दिरा की चमकती पोशाक को देखा। उसका मन अनजानी व्यथा से भर आया। यह उसके विवाह का जोड़ा है, खूब सम्हाल कर रखती है। जब मन में उत्साह आता है तब वह उसे पहन लेती है।

इन्दिरा रूपा के चेहरे पर अपनी नजर टिका कर रूखे स्वर में बोली इस बार तू अपनी सहेली को रुपए न देकर मेरे लिए कपड़े बनवा दे तो कितना अच्छा रहे। मेरे सारे कपड़े फट गये हैं।'

"कैसे अनजान भाभी? हर महीने रुपए नहीं पहुँचेंगे तो हमारी —— नेम खोयेगी और बस-बीसक पर हमें कोई भी एक पैसा

उधार नहीं देगा। मुश्किलों में ही ऐसे लोग काम आते हैं।

"तू ठीक कहती है पर मुझे अटपटे कपड़ों में रहना अच्छा नहीं लगता। उसने पलक झपका कर एक लम्बा साँस लिया और कहा कि मैं पढ़ी लिखी भी नहीं हूँ। काला अक्षर भैंस बराबर है वरना मैं भी तेरी तरह कहीं नौकरी कर लेती कहीं ट्यूशन कर लेती। मैं तो केवल दो टैम रोटियाँ थप सकती हूँ।

अच्छा भाभी मैं कोशिश करूँगी।

इन्दिरा को इससे बड़ी सान्त्वना मिली।

भैया आ गये थे। रूपा हाथ धोकर बाहर चली गयी। आज इन्दिरा और त्रिलोचन दोनों ने साथ-साथ खाना खाया। एक दो बार एक दूसरे ने एक दूसरे के मुँह में कौर भी डाले। जीवन के असीम सुखद क्षण उनके लिए बहुत कम आते थे।

इन्दिरा ने खाना परोस कर कहा "मैं जरा अपने बाल संवार लेती हूँ।"

त्रिलोचन ने उसके गाल पर चुटकी भरी। हठात रूपा आ गयी। रूपा का मन दर्द से भर आया। सोच बैठी हम लोग कितने अभागे हैं। जीवन का कोई भी सुख हमारे हिस्से में नहीं। हम उस देश के पपीहे हैं जहाँ स्वाति का नाम नहीं।

उसने अनिच्छा से पानी पिया।

"मैं भाभी बाहर सोऊँगी अभी बहुत गर्मी है।

इन्दिरा सब समझ गयी। त्रिलोचन संकोच से गड़ गया।

मैंने देखा की वह सुबह इन्दिरा के लिए बहुत अच्छी सुबह थी। वह सबसे बड़ी खुश थी बहुत खुश थी।

दो दिन बीत गये।

यह ईश्वर की मर्जी है या प्रकृति का दस्तूर कि जिसको जरूरत नहीं उसे बहुत मिलता है और जिसके पास कुछ नहीं उससे वह और

भोगता है।

बाप बीमार पड़ गया।

एकाएक उसके पाँव में लकवा मार गया। हस्पताल में भर्ती करवाया गया। हालत चिन्ताजनक और पैसों का अभाव। त्रिलोचन के मालिक ने भी ऐसे संकट के समय दो सौ रुपए अग्रिम दिये। लेकिन पैसा और चाहिए था क्या किया जाय? इस समय भी रूपा की सहेली काम आयी। रुपया बहुत खर्च हुआ पर पिताजी नहीं बच सके। माँ विधवा हो गयी। मेरा एक मुख जैसा ही साथी हमेशा के लिए चला गया। सारा परिवार भयंकर आर्थिक संकटों में गुजरने लगा।

स्वरूप बराबर आता था। सारे परिवार में वह अब घुलमिल गया था। एक अभिन्न सदस्य और आत्मीय की तरह।

गर्मी के साथ वर्षा शुरू हुई।

त्रिलोचन की नौकरी छूट गयी। उसके मालिक ने अपनी चौक की दुकान को ३० हजार की पगड़ी में बेच दिया। यह भारी रकम ब्लैक में ली गयी थी। यहाँ का पूँजीपति वर्ग भी क्या गजब है? सरकार की आँखों के नीचे वह नाजायज काम करता है। सरकार एक नाम पकड़ती है तो वह हजार नाम पैदा करके उसे काट देता है।

त्रिलोचन घर आ बैठा।

दोपहर को।

इन्दिरा ने उदास पति को गुमसुम लौटते हुए देखा तो उसका कलेजा धक से रह गया। समीप जाकर जल्दी से बोली, 'क्या हुआ?

'छुट्टी।

"किसकी?"

"नौकरी की।"

"क्या कहते हो?"

"ठीक कह रहा हूँ। उसके एवज में मुझे सिर्फ इतना ही मिला कि जो चार पाँच सौ रुपए लाला के कर्ज थे वह माफ हो गये और एक महीने की पगार मुफ्त में मिली। इन प्राइवेट नौकरियों में यही तो खराबी है कि कब मालिक नौकर का पत्ता काट दे।

अब क्या होगा ?

जो तकदीर में लिखा होगा।"

शाम को घर में एक बैठक और हुई।

उसमें काफी वाद-विवाद के पश्चात यह निश्चय हुआ कि रूपा अपना पढ़ना छोड़ कर नौकरी करेगी और त्रिलोचन नयी नौकरी की तलाश करेगा।

'लेकिन तुम्हें नौकरी देगा कौन ? त्रिलोचन ने पूछा।

'जहाँ मैं ट्यूशन करती हूँ वही सेठ साहब। बड़े अच्छे आदमी हैं वे।" उसने विनम्रता से कहा।

'मुझे भी उसके यहाँ लगा दो। ममा ने कहा।

'तुम्हें वहाँ नौकरी नहीं मिल सकती।

'लेकिन क्यों ?

'क्योंकि तुम मैट्रिक पास नहीं हो। कुली या चपरासी तुम्हें रखवा कर मैं वहाँ अपना अपमान नहीं करवा सकती। भैया तुम क्यों फिक्र करते हो ? धीरे धीरे तुम्हें नौकरी मिल ही जायगी।

रूपा की नौकरी लग गयी।

त्रिलोचन नौकरी की तलाश में दिन भर मारा-मारा फिरता था। बड़ी परेशानी में वह अपना एक एक दिन बिताता था। रात को वह आता तो इन्दिरा और माँ में युद्ध ठना हुआ मिलता था। इन्दिरा का प्रभुत्व और उसकी कर्कशता मनोवृत्ति दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी। वह माँ का सबके सामने विरोध करती थी। उसे वह उसी तरह कोसती थी जिस तरह वह उसे पहले कोसा करती थी।

एक दिन उन दोनों के बीच गाली गलौज हो रही थी। रूपा आ गयी। वह भाभी पर बरस पड़ी 'तुम्हें शर्म नहीं आती माँ को डाँटते? आखिर वह हमारी माँ है।'

'तो मैं क्या करूँ! मैंने तो इसका बड़ा लिहाज रखा बड़े जुल्म सहे पर अब मुझ से कुछ भी नहीं सहा जाता। अब मैं एक की दो सुनाये बिना नहीं रह सकती।' इन्दिरा का चेहरा तमतमा उठा और वह यह सब शब्दों को चटक-मटक कर कह रही थी। उसके नथुने घृणा में कसी हुई घोड़ी की तरह फड़क रहे थे।

'लेकिन हम भी तेरी यह बेअदबी नहीं सह सकते। बाप मर गया इसका मतलब यह नहीं हुआ कि माँ की कोई इज्जत ही न करे?'

'माँ की इज्जत!' उसने गुस्से में दाँत काटे। उसकी आँखों में घृणा दहक कर इकट्ठी हो गयी। वह बहुत बड़ा विस्फोट करना चाहती थी किन्तु उसी समय त्रिलोचन ने प्रवेश किया और वह सारी स्थिति से परिचित होने के लिए उतावला होने लगा। वह शीघ्र ही सारी स्थिति से परिचित हो गया और उसने इन्दिरा को पागल की तरह पीटना शुरू कर दिया।

अत्यन्त ही भयानक और हृदयविदारक दृश्य था।

त्रिलोचन की पिटायी के साथ इन्दिरा ने अपने आपको बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। उसके बाल बिखर गये और उसका रंग लाल हो गया। आँसुओं से उसके गाल तर हो गये और वह जोर जोर से मूँ-मूँ करके रोने लगी। रूपा ने त्रिलोचन को बड़ी कठिनता से काबू किया और उसने भयभीत दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह बड़बड़ा उठा — यह कोई घर है! नरक है नरक। जब देखो तब हाय हाय और किच-किच मची रहती है। सबके सब जानवर हो गये हैं। एक मिनट भी चैन और शांति नहीं। इधर माँ थम नहीं जाती और उधर यह चुड़ैल। और वह सिर पकड़ कर चुप ही सुबकने

लगा। रेखा और रामा भी-भीट कर आ गयी थीं। उन्होंने जब भैया को रोते हुए देखा तब वे दोनों भी रुआँसी होकर खड़ी हो गयीं।

इन्दिरा जमीन पर पड़ी हुई बुरी तरह रो रही थी।

रमा मामी के पास गयी। उसे उठाना चाहा। मामी ने झटक कर उसके हाथ को झटक दिया 'मुझे मत छू, अब तो हो गया तेरा कलेजा ठंडा। पिटा और, पिटा इस लड़की से पिटा तभी तेरी माँ की पीठ पड़ेगा। जब मेरा लहू टपकेगा तब तेरी माँ के कलेजे की आग ठंडी होगी।' और वह दहाड़ मारकर रो उठी।

रमा को महसूस हुआ कि उससे कोई महा अपराध हो गया है। वह अपने आपको अपराधी समझने लगी फलस्वरूप उसकी आँखों से अश्रु छलछला आये।

"मरने दे तू इस डायन को यह हम सबको खाकर ही दम लेगी। पिता जी मर गये और मेरे गले जंजाल बाँध गये।

"फिर गला घोंटकर मुझे मार दीजिए।" इन्दिरा चीख पड़ी।

"तुम चुप रहो भैया। भगवान के लिए चुप रहो। मैं यदि इन दोनों के झगड़े में नहीं बोलती तो यह झगड़ा बढ़ता ही नहीं। आग मेरी इस जीभ को लगे।"

"माँ अब बूढ़ी हो गयी है। उनकी अक्ल सठिया गयी है। पर यह जवान है समझदार है, इसे तो कम-से-कम माँ के सामने नहीं बोलना चाहिए।

"मैं बोलूँगी और हजार बार बोलूँगी चाहे आप मेरी जान ही निकाल दीजिए अथवा देकर घर से बाहर कर दीजिए, मैं अब दबने वाली नहीं हूँ। वह लड़ाकू की तरह तनकर बैठ गयी।

"भैया तुम मत बोलो। मैं तुम्हें हाथ जोड़ती हूँ।

त्रिलोचन चुप हो गया।

धीरे धीरे बोझिल वातावरण सामान्य होने लगा। मामा जब

दिन भी गया। लेकिन रात को रूपा ने सुना कि भैया बहुत देर तक भाभी की खुशामद कर रहा है पर वह राजी नहीं हुई। वह बड़बड़ाती रही। सिसकती-सुबकती रही।

रूपा भी भर भर आयी। वह इन दोनों के बीच क्यों बोली। यह तो इन दोनों का आपस का झगड़ा है।

उसने अन्धेरे में देखा—सब सोये हुए हैं। मुझे भी नींद ने आ घेरा।

× × ×

इन्दिरा उस दिन से रूपा की दुश्मन हो गयी। रूपा ने बड़े लाड़ मनाना चाहा पर वह नहीं मानी। रूपा उससे बात करने की कोशिश करती उससे अपनी पुरानी गलतियों की क्षमा याचना की। रूपा की चापलूसी से चिढ़कर यह इंदिरा ने कह भी दिया "मुझे यह सब पसन्द नहीं। मुझे अपने हाल पर छोड़ दे। तू अपने धुन मस्त, मैं अपने धुन मग्न।

रूपा हार गयी।

त्रिलोचन आजकल गली के नुक्कड़ वाले घटिया होटल में बैठा रहता था। दिन भर में वह चार-आठ आने की चाय पी जाता और शाम को घर आकर सो जाता। जब उसका जी ज्यादा उकता जाता और उसके अपने अभावों की घुटन उसके दिल की एक-एक परत से टकराती तो वह मेरी सोयी हुई अन्धेरे में डूबी गोद में अपनी पत्नी इन्दिरा को आगोश में भर लेता और उसे इस बुरी तरह से चूमता कि रूपा और रामा के कान खड़े हो जाते। रूपा अपने आपको बन्द कर लेती लेकिन रामा की नयी जवानी के पर्दे में छिपी वासना की आग दहक कर हजारों पोरों में फैल जाती और वह स्वरूप को लेकर मानसिक तृप्तियों में डूब जाती।

मैं इस थके-हारे-टूटे परिवार को देखता। पता नहीं क्यों मुझे यह भय सताता कि कुछ अनिष्ट होगा और वह भूत इस परिवार की गैरत और आबरू को मिटा देगी।

त्रिलोचन आ रहा है।

उसकी पैंट पीछे से फट गयी है और कमीज़ की कॉलर पर मैल जम कर उसकी गरीबी का मज़ाक उड़ा रहा है। वह बीड़ी पी रहा है। उसके चेहरे की हड्डियों ने उभर उभर कर उसकी बची-खुची सुन्दरता को भी खत्म कर दिया है।

रेखा स्कूल से आकर भाभी से बोली "भाभी मेरी यह फ्रॉक फट गयी है। स्कूल में लड़कियाँ मेरी बड़ी हँसी उड़ाती हैं।

'अपनी बड़ी बहन को क्यों नहीं कहती? तेरा भैया आजकल बेकार है, मैं तेरी चाहकर भी कोई मदद नहीं कर सकूँगी। हाँ तेरी माँ से अलबत्ता कुछ रुपए मिल सकते हैं।

रेखा माँ के पास गयी। माँ सदा की तरह ज़ोर से चीखना चाहती थी पर इन्दिरा की कठोर मुद्रा और तीखी नज़र में उठते हुए आक्रोश को देखकर वह चुप हो गयी। उस दिन की मार्मिक घटना के बाद माँ इन्दिरा से कुछ डरने लगी थी।

'मुझे पैसा देने वाला बेटा हरद्वार चला गया। माँ ने आँसू बहाते हुए कहा।

तभी आ गयी रामा।

वह उदास और सुस्त थी। आकर चुपचाप मेज पर सिर टेक कर कुर्सी पर बैठ गयी।

त्रिलोचन ने पूछा "क्या बात है रामा? तू आज इतनी गुम्म क्यों है?"

सिर में दर्द है।

'चाय पी ले।

"घर में दूध नहीं है।" इन्दिरा बोली।

'ठहर मैं तुझे होटल से ला देता हूँ।'

'इसकी जरूरत नहीं।' इन्दिरा रामा के पास आ गयी 'मेरे साथ चल जरा कमचक्की से आटा भी लाना और सामने से सामान। जब तक आटा पीसेगा तब तक तू चाय पी लेना और एक एनासिन की गोली भी ले लेना।

रामा ने जाने की असमर्थता प्रकट की पर इन्दिरा आज उसे स्नेह के अतिरेक से भिगोती गयी। रामा भी भाभी के इस अप्रत्याशित स्नेह को पाकर जाने को उद्यत हो गयी।

भाभी ने गेहूँ का पीपा अपने सिर पर लादा।

दोनों आधा घंटे में लौटीं। यहाँ कोई नहीं था।

भाभी ने आराम से बैठते हुए कहा मैं तेरे सिर दर्द का मतलब समझती हूँ।

"क्या मतलब ? चौंक पड़ी रामा। उसके हाथ में एक मैला सा सब्जी लानेवाला थैला था।

'मैं मतलब खूब समझती हूँ कि तेरा असली दर्द क्या है ?

'क्या है।

'मेरी अच्छी ननद मैं भी औरत जात हूँ औरत के दिल की बात मुझसे छिपी नहीं रह सकती। मैं सब समझती हूँ।

'क्या ?

'क्या स्वरूप से झगड़ा हो गया ?

'क्यों ? उससे मेरा झगड़ा क्यों होगा।

'क्योंकि वह तुझसे मुहब्बत करता है ?

'भाभी वह मेरे भाई की तरह है।" उसने बड़ी तटस्थता से यह सफेद झूठ बोला।

इन्दिरा का दाँव खाली चला गया। उसने तुरन्त बात को बदला "रामा बात यह है कि रूपा घर का खर्च चलाती है। वह अब इस घर की मालकिन है। जरा देखो तो हम कितने गंदे कपड़े पहनते हैं।

हमारे पास खर्च करने को एक पैसा भी नहीं होता। जरा रूपा को देखो हर महीने एक नया सूट। मुझे कुछ दाल में काला नजर आता है।"

"मतलब ?

"मतलब का पता तू ही लगा।"

बहुत अच्छा।

उसी रात रामा ने जब सभी लोग सो गये तब रूपा के पर्स को खोल लिया। वह हैरान हो गयी। वह पेशाब के बहाने गली में गयी। उसने देखा कि सौ-सौ के तीन नोट और कुछ छोटे नोट। एक स्लिप! उसमें लिखा था कि कल तुम्हें मेरे साथ रात को रहना है। घर पर कोई बहाना बनाकर आ जाना। इसलिए सप्ताह में सिर्फ एक रात। भूलना मत डियर' डार्लिंग!

रामा सुन्न सी उस स्लिप को देखती रही। फिर उसने उसमें से सौ का एक नोट निकाला। उस पर्स को ज्यों का त्यों बंद करके रख दिया।

उसे रात भर नींद नहीं आयी। बार-बार वह उठकर बैठ जाती थी जैसे उसके मन में कोई शंका जाग जाती हो। रामा ने ऊहापोह में रात व्यतीत की।

सुबह हुई। पूर्ववत काम चलता रहा। रूपा दफ्तर जाने को तैयार हुई। उसने अपना पर्स संभाला। एक सौ का नोट गायब था। रामा का दिल धड़क रहा था। रूपा ने एक बार गरमदी नजर से सबको देखा। उसे तुरन्त यह मालूम हो गया कि रुपए किसने लिये हैं ?

वह कमरे से बाहर निकली।

बाहर आकर उसने रामा को पुकारा। रामा का चोर मन कांप गया। घबराकर वह बाहर आयी। बोली "क्या है ? उसकी नजर नीचे झुकी हुई थी।

'तूने मेरे पर्स से रुपए निकाले।' धीमे से रूपा बोली।

'नहीं दीदी, मैं तेरे रुपए क्यों निकालूंगी?'

'अच्छा।' रूपा उदास सी चल पड़ी। रामा के होंठों पर तुरन्त धृष्टता भरी मुस्कान नाच उठी और उसने अपनी मुद्रा कठोर करली।

त्रिलोचन चला गया। माँ बाहर खाट डालकर सो गयी। रामा ने धीरे से कहा, 'भाभी, रूपा बड़ी होशियार निकली। अरे वह एक वालीवर लड़के ...।"

'क्या कहा?'

'हाँ, वह अपने सेठ के बेटे वालीवर'।

'छि-छि घर की इज्जत-आबरू खाक में मिला रही है। आज रात आने दे।

"और वह कल रात फिर बाहर रहेगी।"

क्या कहती है?

'ठीक कहती हूँ। मेरा भरोसा कर, झूठ नहीं बोलती।

'अच्छा।' उसकी भृकुटियाँ तन गयी।

रामा उस रात को देर से आयी। आते ही उसने भैया के हाथ में दस का नोट थमाया। मिहँस कर बोली, 'भैया, मुझे उस चौराहे के बस स्टैंड पर मिला।

त्रिलोचन भूखे बाज की तरह उस नोट पर झपट पड़ा। कई दिनों के बाद उसने इतना बड़ा नोट अपने हाथ में देखा था। वह नोट को प्यासी नजर से देखता रहा।

इन्दिरा ने कड़ककर पूछा, 'आज रात देर से क्यों आयी?"

'सहेली के साथ सिनेमा देखने चली गयी थी।"

'कहकर जाना चाहिए।"

'...का नहीं मिला।

देखा आपने ।" इन्दिरा ने त्रिलोचन की ओर मुड़ कर कहा। त्रिलोचन एक खोखली हँसी हँस कर बोला "तू भी कभी-कभी छोटी छोटी बात को लेकर बैठ जाती है। बेचारी बच्ची है, जरा घूम आयी तो क्या हुआ ?"

रामा को मन-ही-मन आश्चर्य हो रहा था कि भाभी एकदम कैसे बदल गयी है ? सुबह तो वह उसके पक्ष में थी ? उसने प्रश्न भरी नजर से उसे देखा। भाभी ने नाक भौं सिकोड़ा।

उस दिन के पश्चात घर में दो दल हो गये।

रामा के सौ रुपए खत्म हो गये। उसकी आर्थिक दशा पुन राख हो गयी। रूपा का पर्स अब भरा खाली मिलता था। क्योंकि उसने एक अलमारी के किवाड़ लगा लिये थे जिसमें एक मजबूत ताला लगा रहता था और जिसकी ताली इन्दिरा के पास रहती थी। इन्दिरा खुले रूप से रूपा का पक्ष लेने लग गयी थी। त्रिलोचन भी रूपा की ही तारीफ करता था।

एक दिन सुबह ही सुबह स्वरूप आया।

रूपा बाहर झाड़ू कर रही थी। स्वरूप को देख कर मुस्करायी। गुस्सा थूक कर बोली "मैंने जो समझाया वह समझ गये ना ?"

"एक दम।

'नाटक में कार्ड कभी नहीं आनी चाहिए।

'जरा भी नहीं।"

"आइए भीतर।"

स्वरूप भीतर गया। त्रिलोचन ने कहा "आइए स्वरूप जी आज सुबह-सुबह कैसे टपक पड़े ?

चाय पीने की इच्छा हो गयी। दूसरा रूपा जी ने बुलाया था। उसने रूपा की ओर देखा।

'हाँ मैंने आपको बुलाया था।" रूपा ने सहज स्वर में

बात यह है कि हमें दो सौ रुपयों की सख्त ज़रूरत है। आप थोड़े दिनों के लिए दे सकते हैं ?

'ज़रूर।' उसने जेब में से पैसे निकाल कर कहा "आज सुबह सुबह ही आपके पास आने [illegible] के घर से रुपए लाया हूँ।

विनोदचन्द ने बीच में ही कहा नहीं-नहीं आप रहने दीजिए।

'इसका मतलब है कि आप मुझे पराया समझते हैं।

बीच में इन्दिरा ने आकर रुपए छीन लिये। ये आपको पराया समझते हैं तो समझते रहें पर मैं नहीं समझती। इनकी नौकरी लगते ही वापस कर दूँगी।"

रामा की आँखों में एक चमक थी।

'उसने मन-ही-मन कहा 'स्वरूप के पास इतने रुपये ? वह उसके पास ठगी सी आ गयी।

उसके जाने पर स्वरूप कुछ झेंप सा गया। रामा ने मधुर स्वर में कहा भैया हम लोग तुम्हारा यह अहसान नहीं भूलेंगे ?

जब स्वरूप वहाँ से निवृत होकर बाहर गया तब रामा एकाएक चौंक कर घर से बाहर निकली और चिल्लायी, स्वरूप भैया ओ स्वरूप भैया।

स्वरूप एकदम रुक कर वापस मुड़ा।

हाँफने का अभिनय करती हुई वह स्वरूप के पास पहुँची। नाली में गन्दगी बह रही थी। स्वरूप ने अपनी नाक के आगे रूमाल रख लिया। वह अपलक रामा को देखने लगा।

'क्या है ?"

'सुनो भैया ।'

'एक बात कहूँ अगर तुम बुरा न मानो तो ?"

क्यों।

'तुम मुझे भय्या कहना छोड़ दो। जैसे हमारे सम्बन्ध हैं उसके अनुसार यह सम्बोधन ठीक नहीं है।'

"ओह !" वह गंभीर होकर बोली "तुम्हारे कहने का मतलब है कि जैसे हमारे बीच सम्बन्ध हैं वैसे ही हमारे सम्बोधन होने चाहिए। जैसे मुझे यहाँ समाज में जिन्दा रहना ही नहीं है ? स्वरूप कथन और व्यवहार में बड़ा अन्तर है। हम सभी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और व्यवहार में हम सदा बहुत ही बुरे काम करते हैं। हम एकदम सत्यवादी नहीं बन सकते। बन जायें तो यह दुनिया हमें जिन्दा नहीं रहने देगी। इस दुनिया ने अपने चारों ओर एक पर्दा डाल रखा है पर्दे के उघड़ने ही यह बहुत ही नंगी और बदसूरत बन जाती है।

स्वरूप ने रमा के गम्भीर मुख को देखा और वह कुछ नहीं बोला।

"तुम कल दोपहर को घर आओगे।

"क्यों ?

"बहुत जरूरी काम है।

"क्या ?

"आओगे या नहीं ?" उसने फैसला करने के स्वर में पूछा।

"लेकिन आने का क्या काम ? तुम्हारे घर में ।

"भाभी कहीं बाहर जा रही हैं। तुमने तो भी मना किये हैं न ? माँ दोपहर को पड़ोसी बुढ़िया के यहाँ चली जाती है।"

फिर मैं आने की चेष्टा करूँगा।

× × ×

दूसरा दिन।

दोपहर।

रमा बड़ी बेताबी से स्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने अपने आपको सजाया था। उसके हाथ में एक बत्तीस वॉल्यूम की पुस्तक थी। कमरा था सूना और ठंडा।

एक बार मैंने उस पुस्तक के दस बारह पृष्ठ पढ़ लिए थे। बाबा रे बाबा मैं अपने मन का संतुलन खो बैठा। वासना का विकट भूत मेरी खोपड़ी में पूरी तरह छा गया। लाख अपने मन को समझाना चाहा पर वह नहीं समझा। आखिर मजबूर होकर मैंने अपनी समीप वाली कोठरी पर बलात्कार कर लिया। क्या कहूं उस पुस्तक को पढ़ने के बाद मैं वासना से अंधा हो गया था।

वही पुस्तक उसके हाथ में थी। पता नहीं ऐसी गन्दी पुस्तकें ये खोमचियों कहां से लाती हैं? यह दिल्ली देश की राजधानी विदेशियों का तीर्थ स्थान (राजघाट की वजह से) और यहां ऐसा साहित्य? छि छिः हमारे देश के पुरखों और सिपाहियों के नामों पर यह एक तमाशा-सा है?

स्तब्ध रह गया।

सन्नाटा एकांत और उस गन्दी पुस्तक का प्रभाव। रामा ने इधर-उधर की बातें करके उसके गले में बाँहें डालकर कहा 'मुझे भी तुम्हें नव झुमके दिलाने होंगे सिर्फ तीस रुपए लगेंगे।

'कौन से झुमके?

देखते क्यों नहीं? कानों के झुमके कितने गन्दे हो गये हैं। वैसे स्वरूप तुम्हारे पास आजकल बहुत रुपये हैं। जब तुम भैया को दो सौ रुपए दे सकते हो तब मुझे इसके ये झुमके भी क्यों नहीं दिला सकते?

'लेकिन?

लेकिन वेकिन मैं कुछ नहीं समझती। तुम्हें झुमके दिलाने ही पड़ेंगे वर्ना हमारी दोस्ती कट।"

"ऐसा न कहो रामा मेरे मन में कुछ भी हो पर यह भी सत्य है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

वह चिढ़कर बोली "चाहते जरूर हो पर झुमके नहीं दिला सकते?"

'कुछ दिन की मोहलत दे दो।"

'क्यों ?

'इधर हाथ बड़ा तंगी में है।

"छमली।" उसने कठोर मुद्रा कर ली मुझे ही वहम हो गया था कि तुम मुझे प्यार करते हो। दरअसल तुम रूपा को चाहते हो ? यह रूपा सभी को अपने दामन में समेट लेगी।"

'नहीं-नहीं रामा उसने बिगड़ कर कहा ऐसा क्यों कहती हो ?"

'क्यों न कहूँ ?"

'अच्छा मैं तुम्हें मुमके दिला दूँगा।

रामा के चेहरे पर खुशियों का सागर लहरा उठा। उसके मन सरोवर में कई तरह के हंस तैरने लगे। वह उसके सामने बैठती हुई बोली 'स्वरूप मेरी कसम खाकर बताओ कि इससे पहले भी तुमने किसी से प्यार किया था ?"

वह चुप रहा। क्षण भर के लिए उसके नयनों की तपन भर गयी और उसे महसूस हुआ जैसे अंधेरे की नागिन चाहकर उसके आगे फैल गयी है।

'बोलते क्यों नहीं ? उसने कृत्रिम नाराजगी के साथ ललाट में सलवटें डालकर कहा।

'क्यों बोलूँ ? रामा प्यार कहीं नहीं करता है जिस कोई प्यार नहीं करता। प्यार के लिए सभी तरसते-तड़पते हैं और उस सागर की एक बूँद ही लाख कामनाओं की आत्माओं को तृप्त कर सकती है।"

"तुम्हें भी किसी ने प्यार किया मैं सिर्फ यह जानना चाहती हूँ ? रामा ने आग्रह भरे स्वर में कहा।

स्वरूप ने तुम पर भरपूर दृष्टि डाली। उस दृष्टि में छिपी वेदना को मैं कह नहीं सकता। तुम उसके रूप-शृंगार में ऊँचे पर्वत की तरह अचल दिखायी पड़ रहा था। उसने बुझे हुए स्वर में कहा

मैंने प्यार किया था। एक लड़की थी सरला। मैं और उसका भाई साथ-साथ पढ़ते थे। प्रायः साथ ही खाते थे और रात को मैं वहीं सोता था। धीरे-धीरे मेरा सम्बन्ध सरला से बढ़ा। पहले हम चुम्बन और आलिंगन में एक दूसरे को अपने अपने प्रेम का प्रदर्शन करते रहे बाद में हम थोड़े प्रकट हुए।

यह घटना उन दिनों की है जब मैं सेकिंड इयर में पढ़ता था। मेरा सारा समय प्रायः कालेज के अलावा सरला के घर पर ही गुजरता था। एक नैतिकता का आवरण ओढ़े हम लोग अपने प्रेम की डोर को मजबूत कर रहे थे।

वह एक अच्छी फैमिली थी। उसका बाप एक इंजीनियर था और उसकी माँ को संगीत में रुचि थी। सरला की दो बहिनें और थीं वे भी एक एक लड़के को प्यार करती थीं और तुम्हें आश्चर्य होगा कि हर बहिन दूसरी बहिन के प्रेम सम्बन्ध से परिचित थी पर उन बहिनों के बीच एक मौन समझौता था। यही कारण था कि हर एक दूसरी का राज छुपाती थी और यथावसर मदद भी देती थी और मुझे यह सुनकर बड़ा ही विस्मय हुआ कि उनकी सबसे छोटी बहिन जिसकी उम्र उस समय केवल बारह वर्ष की थी वह भी एक पड़ोसी छोकरे से प्यार करती थी। लगता था कि इस कुटुम्ब में प्रेम का तूफान आया हुआ है और ये सभी लड़कियाँ गर्भ में ही प्यार करना सीख कर आयी हैं।

गर्मी के मौसम में सारा परिवार छत की टट्टियों व आसपास कमरों में सो जाया करते चूँकि सरला सबसे बड़ी थी और मैं उस घर का एक सदस्य सा था इसलिए हम दोनों दूसरे कमरे में चले जाते थे और प्यार की मधुर और रसभीनी बातें किया करते थे।

एक दिन अचानक उसने कहा, 'आओ मुझे पंखा झलाओ।' मैंने उसे प्रश्न भरी नजर से देखा। वह मुस्कराई। गहरे अपनत्व से बोली 'झलाओ न।'

मैंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। उस समय तक यौन सम्बन्धी मेरा ज्ञान शून्य के बराबर था। मुझे तरसा से छप-छप कर मिलने में आनन्द आता था। एक अनिर्वचनीय सुख प्राप्त होता था। हम दोनों ने पंजे लड़ाये। मुझे सिहरन सी हुई। पंजा लड़ाना अच्छा लगा।

दिन गुजरे। महीनों ने भी धीरे-धीरे कदम बढ़ाये। हम ने यौवन और यौन की सभी अच्छी-बुरी बातें पैदा हो गयी। हमारा प्रणय किसी भी ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त प्रणय कथा के नायक-नायिका से कम नहीं था। धीरे-धीरे यह राज खत्म हो गया। उसके बाप ने मुझे अपने घर में आने की मनाही कर दी पर हम रात को छप-छुप कर मिलते थे। रात की तनहाइयों में खामोशी की गोद में चुपचाप। इसके बाद मैं ट्रेनिंग के लिए दूसरी जगह चला गया। वहीं से मैंने उसे एक प्रेम पत्र लिखा। वह प्रेम पत्र पकड़ा गया। और पता नहीं राजा उसके बाप ने उसको क्या कहा कि सब टूट गया। मेरे बाप ने भी मुझ से सम्बन्ध समाप्त सा कर लिया। क्योंकि मैंने उनके भी विवाह रिश्ते को तोड़ दिया था। मेरे दिमाग में केवल तरसा ही तरसा थी मैंने तरसा से कई बार मिलने की चेष्टा की पर वह बदल गयी। उसके कई प्रेम पत्र मेरे पास हैं। उन पत्रों को पढ़ कर तुम्हें लगेगा कि यह प्यार प्रतिज्ञाएं वचन सभी बकवास हैं उपहास हैं। उनमें कोई अमरता अखंडता नहीं। नारी या जीवन में किसी से एक बार ही प्यार करती है वह प्रथम प्यार को किस सहजता से भुला भी देती है इसका प्रमाण होंगे मेरी तरसा के पत्र।

'तुम मुझे पढ़ने दोगे ?

'हूं हां। सारे पत्र मेरे पास नहीं हैं। कुछ ही हैं।

'कब लाओगे ?

अभी चलो। पर तुम उन पत्रों का जिक्र किसी से भी नहीं करोगी और नहीं उनका अनुचित लाभ उठाओगी।

माँ आ गयी थी। वे दोनों चल गये। बाहर निकलते ही स्वरूप ने असमर्थता प्रगट करते हुए कहा 'समझे मैं तुम्हें अपने सप्ताह तक दिया पाठ था।

'लेकिन सिखाना जरूर पड़ेगा।

जरूर।

दोनों मेरी आँखों से ओझल हो गये।

× × +

रात।

घर में सभी सदस्य मौजूद थे। सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त। इन्दिरा आज बड़ी चुप थी। निशीथ भी बार-बार इन्दिरा की ओर देख रहा था। रूपा चुपचाप लेटी हुई थी। वह लेटी-लेटी कोई उपन्यास पढ़ रही थी।

मेज पर झुकी रामा भी पढ़ रही थी। जब सब सो गये। तब इन्दिरा ने रामा को सो जाने के लिए कहा। रामा ने झट से कहा अभी मैं पढ़ रही हूँ। इन्दिरा को गुस्सा आ गया। वह दुखी बनी होती हुई सो गयी।

उनके जाते ही रामा ने पत्र निकाले। पत्रों में कोई तारतम्य नहीं था। परन्तु उन पत्रों में एक लड़की के प्रणय का अत्यन्त भावुक रूप था। आज के विकृति ग्रस्त परिवार की झाँकी थी। स्वरूप का पूरा नाम स्वरूप प्रसाद था।

पहला पत्र—

प्राणप्रिय स्वामी S P

मैं तुम्हारे पीछे सब कुछ कर रही हूँ दुनिया का मुकाबला यहाँ तक कि अपने बाप का भी मुकाबला कर रही हूँ। अपने दिल

की बात याने कोई भी बात तुमसे नहीं छिपाती हूँ । सब कह देती हूँ लेकिन मुझे दुख इस बात का ही है कि तुम हर बात मुझ से छिपाते हो । आज दोपहर को भी तुम रामेश्वर (उनकी सबसे छोटी बहन का प्रेमी) को इशारों में कुछ बातें समझा रहे थे । उससे बातें करना चाहते थे पर मैं जानबूझ कर बीच में आ बैठी । तभी तुमने कहा कि शायद किवाड़ खुले हैं बन्द कर आओ पर मैं भांप गई थी । तुम मुझे वहाँ से टरकाना चाहते थे इसलिए मैं उठी नहीं । पर मैं तुम्हें इतना कह देती हूँ कि तुम्हारा यह दुराव हम दोनों के प्यार को धक्का न लगा दे ? और इसी तरह तुम मेरे से बातें छिपाते रहे तो शायद एक दिन आयगा कि मैं तुम्हारे प्यार को भी झूठा समझने को मजबूर हो जाऊं ? और फिर इसलिए अगर बातें छुपाने की बजाय तुम मुझे बता दिया करो तो अच्छा रहेगा । मैं अभी तुम्हें इतना चाहती हूँ प्यार करती हूँ मैं तुम्हारे बिना दम भर भी नहीं रह सकती पर तुम मुझे इस बात के लिए मजबूर कर रहे हो कि मैं तुम से नफरत करू ? मैं तुम्हें अपना पति मान चुकी हूँ । तुमने मेरी मांग भर दी है । शादी करू भी तो तुम से वर्ना नहीं करू गी । पत्र देना ।
only your queen वरना

दूसरा पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S P

मुझे शाम का वक्त सरला (उससे छोटी बहिन) बाबू (पिता जी) चाचा आदि से यह कहा कि स्वरूप इसलिए दो दिन तक नहीं आया क्योंकि उनकी किसी होटल में लड़ाई हो गयी है । इस बात को सुन कर मेरे दिल पर भारी ठेस लगी । मुझे मालूम है कि तुम रात का दो-दो बजे तक होटल में बैठे रहते हो । क्या ये आदतें शरीफ आदमियों की है ? मैं तुम्हें कितनी बार कह चुकी हूँ कि तुम अपनी इस गन्दी लोफरपंती को छोड़ दो वर्ना मैं तुम्हें छोड़

हूं री लेकिन जब तुमने मुझे छोड़नी ही ठान लिया है तो ठीक है। जरा खूब मजा उठाओगी। रात भर होटलों में रही। मैं कुछ नहीं कहूँगी। क्योंकि दो चीजों में से तुम्हें एक चीज चुननी है और मुझे विश्वास है कि तुमने चुन ली है गंदी सोसायटी और मार पीट" 'मेरी तबीयत यूं ही खराब रहती है पर जब यह बात सुनी तो और खराब हो गयी।

[एक कोने में टेढ़े मेढ़े अक्षरों में लिखा था]

यही तुम्हारी पहचान और वायदा है कि जरा जरूर आओगे देख लिया है।

यही जिन्दगी की ठुकराती हूं

Tarla

तीसरा पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S p

आज दीदी (माँ) ने आपको kiss करते देख लिया। उसके बाद जब वह रसोई में आयी तो मैंने कहा कि दीदी उस वक्त तुम क्या कह रही थी? मैंने यह सीरियस मूड में कहा। तो दीदी कहने लगी कि अब रहने दे हाँ-हाँ ठीक है। काहे को बनती है बेकार में। जब यह बात दीदी ने कही तब मूड उनका अच्छा था। सब बातें हँस-हँस के कह रही थी। फिर मैंने कहा कि बाबू का मूड क्यों खराब है? तो कहने लगी 'वह तो वैसे ही। मैंने कुछ भी नहीं कहा। मैं अपनी जान पर खेल जाऊंगी लेकिन तेरी कोई बात नहीं कहूँगी। मैं तुम दोनों कि गलतियाँ देख रही हूँ। पर मैंने कहा कि हमने ऐसी क्या गलती कर दी? फिर कहने लगी कि मैं स्वरूप से पूछता हूं कि मैंने बाबू से कुछ भी नहीं कहा। फिर तुम्हें बुलाया। उसके बाद दीदी ने तुम्हें समझाया और कहा बस उठ-उठ। उसके बाद तुम दीदी के साथ बाहर गये। मैंने दीदी से पूछा था कि

स्वरूप से तुम्हारी क्या बातें हुई ? उन्होंने कहा कि कुछ भी नहीं । वह माफी मांग रहा था और आज ही से न आने को कह रहा था । स्वरूप कह रहा था कि इसमें वजन नहीं है । मैंने इतनी बार समझाया । फिर अन्त में उन्होंने मुझे भी समझाया कि कल को कोई बात हो जाती तो मेरा ही बुरा हाल होता ? बस अच्छा Baby baba होंगे न अपने घर इसे आज बाद ।

only your queen

Tarla

चौथा पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S P

तुम्हें दीदी ने कहा कि सरला को भूल जाओ और शादी होनी मुश्किल है पर यह बातें उसने मुझे नहीं बताई । मेरे से तो बस कहा कि मैंने उसे समझाया था । और मेरे लिए तुम अभी वही हो जो पहले थे । वही प्यार है जो पहले था और दीदी शादी कैसे नहीं होने देगी । जरूर होगी । मेरे हाथ में भी तो इनकी शादी बात है । दीदी का भाभा से प्रेम है । इसलिए वह मुझ से मीठी-मीठी बातें करती है । शादी जरूर होगी । मैंने तो तुम्हारा हाथ थामा है उसे ही आजीवन निभाऊँगी । बस दो वर्ष की बात है । बशर्ते माताजी-भाभी (स्वरूप के माँ-बाप) राजी हो जावें । हाँ अब मैं कालेज ज्वाइन नहीं कर सकती क्योंकि दवाइयाँ चल रही हैं । कमजोरी की वजह से किसी में भी मन नहीं लगता । दिमाग सुन्न रहता है । घर में संगीत सिर्फ भी दो साथ काटते हैं किसी भी तरह । काट दूँगी ? हाँ तुम अब दोपहर को मत आया करो । सुबह और शाम आया करो या कभी-कभी दो ढाई बजे दोपहर में आ जाया करो । हम एक दूसरे दूर भले ही रहें पर हमारा दिल तो हमेशा पास ही है । (बेकेट में) हाँ कल सुबह

साढ़े आठ बजे जीजी और जीजी बाबू के साथ अस्पताल आयेंगी तो आ जाना। मौका मिला आके आलिंगन का। *Baby baba* हूँगे न पक्कर only your queen

Tarla

पाँचवाँ पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S P

तुम आ गये इससे मुझे इतनी खुशी हुई, कि बता नहीं सकती। लेकिन एक खास बात है वह यह है कि तुमने हमारे नये मास्टर गौरीशंकर के बारे में जो बातें बतायी वह ठीक ही निकली। लेकिन उसमें सरला की गलती नहीं थी। छिप छुप छुप के मतलब निकालना चाहता था और मुझे अपने जाल में फँसाना चाहता था। लेकिन तुमने मुझे पहले ही आगाह कर दिया था इसलिए मैं उसके जाल में फँसी नहीं और उस दिन के बाद मैं उससे न बोलती हूँ न नमस्ते ही करती हूँ। उसकी आँखों से ओझल ही रहती हूँ लेकिन यह नाटक मुझे और सिर्फ सरला को ही मालूम है और किसी को नहीं। क्योंकि इस घटना को ज्यादा फैलाने से अवतार जी की बदनामी होगी क्योंकि अवतार जी ही गौरीशंकर जी को लाये थे इसलिए इस बात को अपने पेट में रखना।

घटना इस प्रकार है—

तुम्हें मालूम ही होगा कि अवतार जी ने सरला को धोखा दे दिया है और अपनी इच्छा से जयपुर में मैरिज कर ली है। कुछ दिन पहले फरवरी में गौरीशंकर जी जयपुर गये थे। वह एक चिट्ठी लाया था जो कि अवतार जी की थी। सरला के नाम। उस चिट्ठी में अवतार जी ने अपनी झूठी मजबूरी और झूठी आपबीती सरला को दिखाई है। वह पत्र मैंने भी पढ़ा था। और कुछ दिन बाद एक पत्र गौरीशंकर जी का आया और उसने वह पत्र मुझे चुपचाप अलग से

दिया था और कहा कि इस पत्र का जिक्र सरला से मत करना और पढ़कर वापस कर देना। मैंने पत्र पढ़ा और वह पत्र अवतार जी का था।

[उमा के पत्र पढ़ने में कुछ देर व्यवधान हो गया क्योंकि इन्दिरा मामी ने उठकर नाली में पेशाब किया और वह उमा को भूखी दृष्टि से देखकर सो गयी।]

अवतार जी ने लिखा था कि सरला तुम्हारी बहुत याद आती है मुझे तुम्हारा एक पत्र भी नहीं मिला बड़ा परेशान हूँ। मेरा पता गौरीशंकर से पूछ लेना और इस पत्र का जिक्र सरला से मत करना। मैं गुस्से में भर उठी। ये सभी लोग कितने पतित और नीच हो गये हैं। मैंने उस पत्र का सरला से जिक्र कर दिया। मैंने सोचा कि शायद वह सरला के बारे में चुपचाप मुझसे पूछना चाहते हैं अगले दिन मैंने गौरी से कहा कि मास्टर जी इस पत्र का क्या मतलब है तो कहा कि आप बताइये। मैंने कहा कि अवतार जी सरला के बारे में पूछना चाहते हैं तो गौरी ने कहा नहीं। इसका मतलब तो बिल्कुल सीधा है कि अब वह आपको भी । मैं चुपचाप सुनती रही। फिर गौरी ने कहा कि इतना ही नहीं अवतार जी ने आपके लिए बहुत कुछ कहलाया है। आप मेरे घर इतवार को अकेली दस-दस टाइम आना। मैं फिर आपको रात में साइकिल पर छोड़ आऊँगा और बार-बार कहा कि आप अकेली आना। मैंने कहा कि मास्टर जी बीवी के साथ आ जाऊँ तो? कहा कि नहीं अकेली दस-दस टाइम पर आना। यह बात सुनते ही मुझे फौरन तुम्हारे वाले पत्र याद आ गए कि यह आदमी अच्छा नहीं है मास्टर के भेष में भेड़िया है होशियार रहना। फिर मैं समझ गयी कि बात कुछ नहीं है, यह खुद ही मेरे से मतलब निकालना चाहता है। जाते-जाते गौरी ने फिर कहा कि अच्छा आप आयेंगी न? मैंने कहा कि मास्टर जी आऊँगी। अगले दिन मैंने मास्टर जी को फटकारा।

मैंने कहा कि मास्टर जी आप हाथ से आ जाइए। अवतार जी को भी कह दीजिए। यदि आज मैं पुरुष होती तो शायद मैं उन्हें थप्पड़ मार देती उन्होंने मेरी सरला को धोखा दिया है। मैंने कहा कि अब मैं कभी भी आप से और अवतार जी से कोई चिट्ठी नहीं लूँगी। इस पर गोरी ने कहा कि आप को मेरे घर आना ही होगा और मेरे कई प्रश्नों का उत्तर देना ही पड़ेगा। क्या कल स्वरूप उनके पास सरला के कई प्रेम-पत्र भी हैं ? मैंने कहा कि मास्टर जी मेरा जो फैसला था सो मैंने सुना दिया। मैंने कहा कि घर नहीं आऊँगी बस। उस दिन के बाद गोरी मुझे टेढ़ी निगाह से देखता है कभी कुछ पूछता है पर मैं उससे नहीं बोलती। अभी वह अजमेर गया हुआ है अब मेरा कहना है कि तुम उसे कुछ कहना-सुनना न ठोका-पिटी भी मत करना और यह बात हरगिज किसी और से मत बताना। आगे यह कुछ न कहेगा और अगर कहेगा तो मैं बच के इसे अच्छी तरह देख लूँगी। बेबात झगड़े से क्या फायदा ? और हाँ अवतार जी यहाँ कोई Examदेने आये हैं। सरला उनसे मिलने गयी थी। वह मुझसे कुछ नहीं बोली। बहुत दुखी है बेचारी। मेरे साथ तुम ऐसा न करना डियर।

बच्चू और इस जन्म के पहु सूर्य (बिमला का प्रेमी) ने भी बड़े-बड़े नाटक किये—घर में घुसने के लिए। बड़ी-बड़ी मिठाइयाँ भेजी बाबू को प्राइवेट रूप ठेठ ठेका दिलाया। अभी भी वह आना-जाना है। only your queen

Turla

छठा पत्र

प्राणप्रिय स्वामी 8 P

तुमने रात को बरामदे में मिलने के लिए कहा और मैंने भी हाँ भर दी क्योंकि तुम्हारे आलिंगन में आये बहुत ही रोज हो गये थे। लेकिन फिर एकाएक डर गयी। यह हररोज का मिलना कहीं

बरबाद न कर दे। जिसका उस नाजायज मुंह में यहीं पर हर रोज मिलती है तो उसका क्या अंजाम हो रहा है? सारे घर में चर्चा हो रही है। और छूत के फूल वाली हालत बदतर है। वैसे यह हालत शायद तेरी नहीं होगी। लेकिन अब मैं बरामदे में मिलकर मजा की बदनामी नहीं ले सकती। मेरा नाम बदनाम होगा तुम्हारा नाम बदनाम होगा। दुनिया की निगाह में हम ऊँचे रहेंगे तो हमारे माँ-बाप शायद आखिर में शादी के लिए भी हाँ कर लें। रही मिलने की बात तो आज बहुत अच्छा मौका मिला था। क्योंकि मैं तुम्हें बाहर जाते हुए समझाने आयी और तुमसे आलिंगन को कहा पर तुम नहीं माने। तुम हर रात इस टाइम में आ जाया करो। इस समय घर कोई नहीं रहता। भाभी बैठी रहती है। फिर क्या है एक आलिंगन हम आराम से ले सकते हैं। उधर बरामदे में मिलने की बात जो कहीं बाबू या चाचा ने देख लिया तो क्या होगा? लगता है तुम फिर मूर्ख की संगत में आ गये हो। शादी को छोड़ कर बरामदे वाली बात कहते हो? तुमने कहा था कि शादी करेंगे baby-baba होंगे और अब क्या बदल गये हो? आज मैं बड़ी दुःखी हूँ बहुत दुःखी। पत्रोत्तर शीघ्र देना शीघ्र।

हाँ वही तुम्हारी

Tarla

सातवाँ पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S. P

आज दोपहर में बाबू दफ्तर से आये। लंच का टाइम था। तब उन्होंने भाभी से कहा कि खाना लाओ। भाभी ने कहा कि नहीं पकाया मुझे चक्कर से आ रहे हैं। बाबू ने गुस्सा होकर कहा कि चक्कर नहीं आयेगा तो और क्या आयेगा? न सुबह खाया न कल रात खाया न अब खा रही हो। इस पर भाभी रोने लगी और

कहा कि खाऊं क्या जब औलाद ही माँ को मारने पर उतारू हो तो क्या खाऊँ ? बापू ने भी अपना सिर फोड़ लिया और आगे खाने पर उठ गये घर करीब तीन बजे बापू ने मुझे अकेले में बुलाया और कहा कि तू बीबी से माफी माँग ले। बेकार में तेरी माँ न खा रही है न पी रही। मैंने कहा कि फिर यह गुस्सा छाने लगेगी तो बापू ने भी कहा कि तू विमला से यह कहलवा देना कि तरला बहुत दुखी है, क्षमा-क्षमा। बस लेकिन मैंने सोचा कि अगर माफी माँगी तो फिर बोल चाल होगी और फिर लड़ाई-झगड़े होंगे। जब बीबी सोकर उठी तो बापू ने कहा (बीबी को रौब दिखाने के लिए) देखा विमला-तरला तुम सबको बीबी की आज्ञा माननी पड़ेगी और बीबी तुम्हें पर बीबी अकड़ कर बाहर चली गयी। फिर मैंने बापू से कहा कि इसको यों ही ठीक है बोलने से फिर बेकार बात बढ़ेगी। बस यह घटना है। असल में बीबी चिढ़ी इस बात से मेरे से क्योंकि कल दोपहर में गुस्से में भरी हुई थी। मैंने बीबी से पूछ लिया कि आजकल कांति वाली कहाँ है ? (क्योंकि माँ का चाचा से करीब सम्बन्ध था जिसे तरला जानती थी) तो वह भुनक गयी और कहने लगी कि अभी या तू भी अगर यह अच्छी है तो ? बस अब तुम शीघ्र पत्रोत्तर में लिखना कि मैं क्या करूं ? माफी माँगू या नहीं ? अब तो तेरा मूड ठीक है न। खुश हो न ? हाँ एक बात और है कि सुबह ८ और ९ बजे के बीच में तुम आ जाया करो और शाम में किसी दोस्त को लाया करो क्योंकि तुम्हारे अकेले का आना ठीक नहीं है क्योंकि ये किसी बोलती नहीं सिवाय तरला के। विमला चली जाती है। खाली बैठे फिर दिमाग खराब होता है। जरा हँस बोलने में मन 'पास' हो जायेगा। baby-baba हँसि न ? पत्रोत्तर देना।

सिर्फ वही तरला तुम्हारी।

आठवीं पत्र

प्राणप्रिय स्वामी S [redacted]

कल चाहे तुम सरला व पुष्प मैला मैंने रखने को कितनी चेष्टा की लेकिन क्या करूँ मजबूर थी। सारा घर एक तरफ मैं अकेली एक तरफ। मुझे बापू पर रहम आ गया। तुम्हीं कहो कि संसार में इतना दुखी इन्सान है कोई ? उसके चारों ओर आग ही आग है। बाँकी छिनाल हर एक बेटी प्रेम के पीछे दीवानी लोगों के ताने सब मुझे उन पर बड़ा रहम आता। सोचने लगी की हम सब इस घर की औरतें डायनें हैं इस मस्त इन्सान को खा रही हैं। मेरा दिल भर आया। मैंने कहा कि आप सब सिनेमा चली जायें। मैं घर की देखभाल करूँगी। लेकिन बिमला नहीं मानी आखिर मुझे जाना पड़ा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ और हमेशा-हमेशा तुम्हारी रहूँगी। इस जन्म में ही नहीं अगले जन्म में भी। मैं रोज भगवान से प्रार्थना करती हूँ। और, हाँ तुम कमला आसो बात के बीच में मत पड़ना— बेकार में। और न मैं ऐसा होने दूँगी। यह तो मैंने भी तुम से कहा था कि यदि तुम कमला से ज्यादा मत हँसा-बोला करो क्योंकि वह यह चाहती है कि किसी तरह सरला को स्वरूप व मकरन्द हो जाय तो मैं इसको भी अपने चंगुल में फँसा लूँ। तुम मत पढ़ना। हम दोनों खिलने लगा है और है और रहेंगे। छोटा सा घर होगा। baby होगी। baba होगा। तुम श्याम (शाम) को घर पर आओगे बेबी—बाबा बोलेंगे कि पापा जी आ गये। मैं तुम्हारे लिए चाय बनाकर तैयार रखूँगी तुम आते ही मेरे सर पर प्यार से हाथ फेरोगे और मैं तुम्हारे सीने से लग जाऊँगी। तुम बहुत अच्छे लगते हो। बस अब जल्दी पढ़ लो। तीन साल गुजर जायें। हाँ मैं अब यह शिकायत नहीं कहूँगी। हाँ एक बात यह है कि तुम्हें अगर गुर्दे मिल भी जाय तो ज्यादा मत बोलना। अपनी मोसामटी

पर गुस्सा मत आने दो। बुध (बृध) को पिक्चर जरूर जाना। कल भी अकेले भी नहीं गया। लेकिन क्या करूँ मजबूर थी। मैं भाभी जी के घर जरूर जाऊँगी। Kiss मैं शायद रोज दे दिया करूँ गी। आलिंगन जब मैं मौका पड़ा तब दे दूँ गी। एक महीने बाद तुम्हारे आने के बाद क्या हाल होगा। मैं तुम्हारे बिना मर जाऊँगी। और ! इच्छा होती है कि हमेशा तुम्हारी गोदी पर सर रखे बैठी रहूँ।

bady paba हुये या ? जरूर हुये।

taria

[भाषा की गलतियाँ सुधारना ठीक नहीं समझा]

रात बहुत हो गयी थी। रामा ने अँगड़ाई के साथ एक जम्हाई ली। धीरे से दो-तीन चुटकियाँ बजायीं। तब उसे विदित हुआ कि उमस काफी है और वह पसीने से लथपथ है। उसने खूँटी पर टँगे हुए एक अंगोछे से अपना पसीना पोंछा। वह लेट गयी। उसकी आँखों में वे सभी प्रेम-पत्र घूम रहे थे। कितने उत्तेजित और कितने मधुर। इसके बाद उसे स्वप्न की याद हो आयी।

तभी इन्दिरा भाभी पेशाब करने के लिए उठी। रामा उसे देखकर मन-ही मन मुस्करायी। आज भाभी को बहुत पेशाब आ रहा है। इस वाक्य में निहित उसकी धृष्टता उसके अधरों पर मुस्कान बन कर थिरक उठी जो अन्धेरे की वजह से इन्दिरा नहीं देख पायी। उसने भाभी से कहा "मुझे नींद आ रही है तुम रोशनी बन्द कर दो।

इन्दिरा ने रोशनी बन्द कर दी। रामा को नींद नहीं आयी। उसके मन-गगन पर स्वप्न छाने लगा। वह कितना हृदयग्राही है? आज सरला उससे बोलती नहीं। आज वह उसके प्यार में बिना पानी

को मछली की तरह तड़प रहा है। सचमुच वह बहुत अभागा है। लेकिन मैं इस कदर प्यार करूँगी मैं उसका जरूर साथ निभाऊँगी।

और मैं एक निर्जीव बनकर उन पत्रों को पढ़ कर सोच रहा हूँ कि ये पत्र एक मध्यवित्त समाज के एक परिवार के संघर्ष की कहानी है, प्रतीक है। नयी और पुरानी मान्यताओं के बीच में बड़ा ही उतार चढ़ाव का दौर है। हम नहीं जानते कि ये पूँजीवादी विकृतियाँ से समस्त बदलते हुए मानदण्डों में किस परिणाम से टकरायेंगे। मुझे चारों ओर एक असंतोष नजर आता है और यह असंतोष हमारे जीवन को बड़ी तेजी से बदल रहा है। पुरानी मान्यताएं नष्ट हो रही हैं और नयी कुण्ठा-असंतोष भरी हमारे जीवन में धीरे-धीरे मान्यताएं प्राप्त कर रही हैं। सरला की माँ परित्यक्ता है। उनका अपने देवर के साथ अनुचित सम्बन्ध है। उसे उनकी सभी लड़कियाँ जानती हैं और उसका प्रतिक्रिया यह हुई कि सभी लड़कियाँ पाप पुण्य का ख्याल किये बिना प्यार करने लगीं। उन्हें किसी का भय नहीं। उनके ये पत्र उनके जीवन को एक विशृंखल भाव में रखने के लिए विवश कर रहे हैं।

अरे बाप! मैं भी कहाँ भाग भाभी को उपदेश देने बैठ गया। राधा सोने का उपक्रम करने में निमग्न है और इन्दिरा मुँह की ओट लेकर चारपाई पर आराम से सो रही है। उसकी पलकें एकदम मूँदी थीं। धीरे धीरे गुनगुन हुई। रामा के दोनों कान घोड़े के कान की तरह खड़े हो गये।

सवेरे का सपना एक सत्य उजागर होता है।

उस अन्तर में रामा की आँखें कुछ अनदेखी चीजों पर पड़ीं।

अकस्मात उसकी उत्तेजना चरम पर पहुँच गयी। प्रतिशोध की ज्वाला उसके हृदय में प्रज्वलित हो उठी। भाभी ने राधा के लिए जिस तरह उसका अपमान किया था। वे दोनों जिस तरह उसको सताती हैं। यह भाभी बड़ी बेशर्म है। इसको जरूर मजा चखाना चाहिए।

इतना कहकर वह धीरे से उठी। लपक कर उसने बिजली जला दी। फिर अन्धेरा किया। भाभी और भैया की सांस रुक गयी और वहां क्षण भर के लिए ऐसा सन्नाटा छा गया जैसे उस सन्नाटे में ठहरी घुटन में सबका दम घुट जायेगा।

रामा ने किवाड़ खोले। बाहर जाकर पेशाब किया। बहुत खुश थी पर उसने अपनी खुशी को जाहिर नहीं किया। वह अनजान बनी हुई वापस सो गयी।

मैं जानता हूँ कि उस रात इन्दिरा सो नहीं सकी। उसे अपने और अपनी मजबूरियों पर तरस आ रहा था। यह कैसा जीवन है? यह कैसा जिन्दा रहना है? उससे तो फुटपाथ के भिखारी ही अच्छे। निश्चिन्त होकर खाते-पीते और सोते तो हैं। कभी-कभी उसके मानस में हिंसा का तूफान उठ जाता था और उसकी इच्छा होती थी कि वह उठकर इस रामा को जूती से पीटे और उसने मन-ही-मन उसे पीटने का अभिनय भी किया।

सुबह से ही उसका मूड बहुत खराब हो गया था वह सिर दुखने का बहाना बना कर सो रही। रूपा ने चाय के लिए पूछा उसने ना कह दिया। त्रिलोचन को जिस दशा में देखा था उस दशा में उसका यह साहस नहीं हुआ कि वह रामा से जो उसकी जवान बहिन है नजर मिला सके अत वह होटल में चाय पीने चला गया। रूपा को वहम जरूर हो गया था कि कुछ हुआ जरूर है। यह उदासी और यह तनाव? पर वह अन्त तक पहुंचने में असमर्थ रही।

रामा सदा की तरह चल रही थी। मां स्नानादि से निवृत होकर रामायण का पाठ कर रही थी। रूपा की इच्छा न होते हुए भी उसे चूल्हे के आगे बैठना पड़ा। रेखा ने उसका साथ निष्ठापूर्वक दिया।

यह सही ही था कि तीनों लड़कियां जरा भी घरेलू काम करना नहीं चाहती थी। उनकी यही इच्छा होती थी कि उन्हें पका-पकाया मिल जाय और वे आराम से पेट भरलें। केवल इन्दिरा चूल्हे के आगे

बारहमासों बैठती थी और उसकी अनुपस्थिति में माँ जब कि उसके पास समय होना चाहिए। क्योंकि वह स्वयं की बातचीत और पूजा दर्शन में बहुत व्यस्त रहती थी।

रमा ने सोचा कि उसकी उपस्थिति अब उसे चुप्पी का नाम सौंप सकती है इसलिए उसने वहाँ से खिसक जाना ही अच्छा समझा। वह जल्दी से कपड़े पहनने का बहाना बना कर चली गयी।

उसके जाते ही इन्दिरा ने करवट बदली। रमा ने उसके लिए दुबारा चाय बनायी। चाय लेकर उसके पास गयी। उसने पीने का अनुरोध किया। वह उठी। चाय का घूँट लेती हुई वह रमा को इस दृष्टि से देखने लगी कि जैसे वह कुछ उसे कहना चाहती है।

रमा उसकी दृष्टि का अभिप्राय समझ गयी। उसने अत्यन्त धीमे स्वर में पूछा "तबीयत ज्यादा खराब है भाभी ?"

नहीं तो?"

"इतनी उदास क्यों हो ?"

"मेरी एक बात मानोगी ?

"कहो।"

"यहाँ एक पर्दा लगवा दो।"

रमा सारा किस्सा समझ गयी और वह यह भी जान गयी कि भाभी का स्वभाव इधर दिन प्रतिदिन इतना चिड़चिड़ा क्यों हो रहा है? उसने भाभी को आश्वस्त करते हुए कहा पर्दा लग जायेगा।"

पर्दा लग गया।

पर्दा !

सचमुच यह पर्दा ही आज हमारे जीवन की सभ्यता की इमारत हु[illegible] है। पर्दा न हो तो हम कितने असहाय हो जाएँ? हम इतने मह[illegible] और दुःख लिखने लगे कि हम आदिम लोगों की भी मात करदें!

× × ×

रामा आयी घूमी फूमी होती हुई उसकी भृकुटियाँ तीर कमान की तरह तनी हुई थीं। उसने आते ही हाथ की पुस्तकें मेज पर फेंकी और वह पेट के बल पर लेट गयी। माँ ने पूछा "क्या बात है रामा, तबीयत ठीक है न ?"

"मेरे सिर में दर्द है।"

"क्यों ?"

"मैं क्या डाक्टर हूँ ?" उसने चिढ़कर कहा "दर्द है बस दर है।"

उसने इन्दिरा की ओर मुखातिब होकर कहा "बहू ! जरा एक कप चाय बनाकर इसे दे दे।"

"दूध नहीं है।"

"दूध नहीं है। जरा होटल से मंगवा ले।"

"पैसा नहीं है।"

"तू चुप रह माँ क्यों अपनी जबान खोलती है। यह रमा को खिलाती है और रमा इसे पिलाती है। मैं भी इसकी सौतेली बहन बनूँ तो यह मुझे भी अपनी पलकों पर बिठाये रखे।"

"ऐसी दरियादिली रमा की मैंने नहीं देखी है" वह तनखा लाकर देती है और मैं उससे सारा घर का खर्च चलाती हूँ। इन्दिरा ने कड़क कर कहा।

"उस तनखा में रेशमी साड़ियाँ नहीं पहनी जाती ?"

"अच्छा मेरी ये फटी-पुरानी रेशमी साड़ियाँ भी तुम्हें नहीं सुहाती।" यह कह कर वह रिरियाने लगी "मैं करमजली हूँ जो ऐसी दम भर का सुख नहीं है मेरे भाग्य में। मेरे बदन पर यहाँ के आदमियों को चिथड़ा भी नहीं सुहाता।"

धीरे धीरे घर का वातावरण विषाक्त होने लगा। माँ ने अपनी बेटी का पक्ष लिया। गालियों का स्तर भी कभी-कभी बहुत ही नीचे उतर आता था। तभी त्रिलोचन ने प्रवेश किया। घर के गर्म वार्ता

मरम को देखते ही उसके चेहरे का रंग बदल गया। कठोरता उसके चेहरे पर छाने लगी। वह गर्ज कर बोला "यह किस बात का झगड़ा है?"

बस दोनों धड़ाधड़ रोने लगे।

मैं पूछता हूं आखिर बात क्या है?

रामा ने आंसू पोंछते हुए कहा "मेरे सिर में दर्द था मैंने मामी से एक प्याली चाय मांगी। मामी ने कोरा उत्तर दे दिया कि दूध नहीं है। जब मां ने होटल से मंगवाने के लिए कहा तब मामी ने पैसे न होने का बहाना बना लिया। बात इतनी ही हुई।

"यह बात ऐसी तो नहीं है कि जिस पर तुम दोनों घर को सिर पर उठाओ। वह उन बातों को समझाने के स्वर में बोला "घर में शांति रहती है और शांति के कारण ही लक्ष्मी आती है। जहाँ कलह वहाँ बरबादी। उसने सिद्धान्त ही उपदेश के ढंग में कहा।

इन्दिरा ने मुस्कराते हुए कहा "मुझे अविश्वास का दुख हुआ। पैसा होते हुए मैंने रामा की बात तक का नहीं कहा।"

"बस अब तुम दोनों शांत रहो। चलो मैं दूध लाता हूँ। तुम चाय बनाओ।"

चाय बन गयी। रामा चाय पीकर सो गयी। मैं उसके पास गया। उसके सिर पर हाथ रखा। वह अप्रत्याशित से चौंक पड़ी। उसने देखा मैंने पुचकारते हुए कहा "घबराओ नहीं रामा मैं अपना हूँ। यह हाथ मेरे हैं। तुम्हारे दुख में मेरा हृदय अशान्त हो रहा है। बताओ आज तुम उदास क्यों हो?

उसकी आँखों के कोने भीग गये। कुछ सिसकियों के तूफान उसके अन्तस में घुमड़ कर फूट गये।

मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा "घबराओ नहीं मन की बात कहने से मन हल्का हो जाता है। बोलो क्या बात है?"

बात यह है कि आज स्वरूप ने मेरा और मेरे प्यार का अपमान किया है।

'कैसे ?

'उसने मुझसे वायदा किया था कि मैं तुम्हें झुमके दिलाऊंगा। मैं आज उसके पास गयी । उसने मुझे इधर-उधर दुकानों पर घुमा कर एक दम हाथ झाड़ दिए।

'शायद उसके पास पैसा न हो ?

पैसा उसके पास जरूर है। रामा ने दृढ़ता के साथ कहा ' पैसे न होते तो वह दो सौ रुपये भाभी को कहां से देता ? असल में बात यह है कि मैं बहुत निरभागी हूँ। रूपा बहुत ही सुभागी। मुझ से वह भाभी भी सुन्दर नहीं है पर उसे सभी प्यार करते हैं। कभी कभी मुझे रूपा पर बड़ा गुस्सा आता है। इच्छा होती है कि उसे खरी खरी सुना दूँ ?

' ऐसा नहीं करना चाहिए तुम्हें।

'क्यों नहीं करना चाहिए । क्या वह नहीं जानती कि स्वरूप मुझे प्यार करता है। उसने कई बार मेरी और स्वरूप की बातचीत सुनी है। वह बातचीत सर्वथा प्रेम भरी थी ?

'शायद यह तुम्हारा भ्रम हो कि उसने तुम्हारी बात सुनी हो।

जीती मक्खी निगलना सरल नहीं है। वह कड़क कर बोली 'वह सब जानती है और जानकर अनजान बनती है। उसकी इच्छा हो रही है कि वह सभी को खुद ही पटाले।" घृणा उसके चेहरे पर इस तरह नाची जैसे किसी ने उसके चेहरे को रंग दिया हो। मैं चुप रहा और उसकी आँखों में नाचती हुई एक नाजायज औरतों वाली परछाइयों को देखता रहा। वह पल भर के बाद बोली 'मेरा सुख किसी को नहीं सुहाता। मैं सबको असह्य लगती हूँ।

'शांति रखो। जरा अपनी भाभी की भी स्थिति देखो। बेचारी को सुख से सोना भी नसीब नहीं होता। आखिर वह भी औरत है।

वह चाह कर भी किसी से मीठा नहीं बोल सकती। तुम्हारा घर नफ़रत और यौन से बहुत पीड़ित है।"

'पीड़ित है तो रहे। मैं किसी की परवाह नहीं करती। मैं स्वरूप की भी परवाह नहीं करती। वह समझता है कि मुझे उसके सिवाय कोई भी लड़का नहीं मिलता है। हुं! मुझे तीन सौ छप्पन लड़के मिलते हैं। क्या कमी है मुझ में? और तत्काल उसकी कल्पना में एक नये लड़के की तस्वीर घूम गयी। वह लड़का एक बहुत अच्छे डिपार्टमेंटल स्टोर के मालिक का बेटा सुनील। कालेज में बी ए पढ़ता था और खूब फैशन करता था। नयी डिजायन की बुशर्ट और कम-मोरी की पेंटें पहनता था।

मैंने उसे समझाया 'रामा ऐसा निर्णय उचित नहीं। यह जीवन को अस्वस्थ परम्पराओं की ओर धकेलता है।"

'स्वस्थ-अस्वस्थ अपने अपने मन के होते हैं। एक बात किसी के लिए अच्छी होती है, वही बात दूसरे के लिए अच्छी नहीं होती। मैं स्वरूप से सम्बन्ध विच्छेद कर थी। ओह! उसने मुझे किस तरह दूकानों के आगे घुमाया। अच्छी-अच्छी वस्तुओं की दूकानें। मैं प्यासी दृष्टि से चमकते-दमकते शो रूमों में रखे हुए सुमनों को देखती रही। उस दुष्ट ने मुझे यह पहले नहीं बताया कि मेरे पास पैसे नहीं हैं। मुझे गहरी आत्मीयता से कहता रहा पहले डिजाइनें देखो। घूम घूम कर देखा। जो पसन्द आये मुझे बता दो। वहीं सुमन मैं तुम्हें दिलवाऊँगा। वह बच्चों की तरह मुझे प्रलोभन देकर बहलाता रहा। मैं बड़ी खुश होती रही। आखिर मैंने एक जोड़ी सुमन पसंद कर लिया। वह ज्यादा महंगा भी नहीं था। उसने कहा पहले हम एक कप कॉफी पियेंगे। हम दोनों कॉफी पीने एक अच्छे रेस्त्रां में घुसे। रेस्त्रां शीततापनियंत्रित था। हमने कॉफी के पहले कुछ नाश्ता भी किया। एक-एक प्लामलेट और दो-दो स्लाइस। मैंने सोचा वह एक सेवक है और दुलारा भी। आज मैं उसकी प्रेमिका हूं और कल उसकी पत्नी भी

मन समझती हूँ। उसके साथ चाय पीते हुए मुझे इतना ही गर्व हुआ जितना किसी महान योद्धा की प्रेमिका को मध्यकाल में होता था। हम दोनों ने बड़े मजे के वे क्षण गुजारे।

रेस्त्रां से बाहर निकले। बाहर निकलते ही उसने मुझसे अप्रत्याशित यह प्रश्न किया मेरी एक बात मानोगी।

'जरूर मानूँ गी।

पहले वायदा करो।

मुझ पर विश्वास नहीं है?

'बहुत है।

'कहो।"

मैं तुम्हें झुमके आज नहीं दिला सका था। आज मेरे पास पैसे नहीं हैं। लेकिन मैं तुम्हें पाँच दिन के बाद वे ही चालीस रुपए वाले झुमके जरूर दिला दूँगा।"

मेरी आशाओं पर तुषारापात हो गया। मैंने अपलक उसकी ओर देखा। गुस्से में मैं लाल हो गयी। इच्छा हुई कि मैं उसे जोर से झिड़क दूँ? पर मैंने अपने को शान्त किया। हठीले स्वर में बोली "नहीं मुझे अभी ही दिलाओ।

'अभी कहाँ से दिलाऊँ? अभी मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं।" और स्वरूप ने अपना बटुआ खोल कर दिखा दिया। वास्तव में उसमें मुश्किल से पाँच-छः रुपए थे। मेरे तन मन में आग सी लग गयी। मैंने उसे एकांत में लेकर कहा 'तुमने मुझे खिलौना समझ रखा है। तुम मेरी भावनाओं को इस बेरहमी से कुचलते हो? स्वरूप! तुमने मेरे साथ अच्छा सलूक नहीं किया है।

मानता हूँ और उसके लिए क्षमा याचना भी करता हूँ। क्या करूँ इधर घर से किसी भी तरह की आर्थिक सहायता नहीं मिलती और उधर हिन्दी के प्रकाशक लेखक की आवश्यकता पर एक पैसा भी नहीं देते हैं।

"फिर तुमने इतना नाटक क्यों रचा ?"

'सोचा अगर तुम एकाएक इन्कार सुनोगी तो बहुत गुस्सा होओगी।"

'तुम्हें मुझ से डर लगता है ?"

'हाँ।"

"झूठे कहीं के' 'तुम यह नहीं जानते कि हम लोग बहुत गिरे हुए हैं। हमारी दुर्दशा की हँसी तुम जब चाहो तब उड़ा सकते हो।"

"नहीं-नहीं। तुम्हें इस तरह नहीं सोचना चाहिए। मैं तुम्हें बड़ी आदर की दृष्टि से देखता हूँ। मजबूरियाँ हर एक के पीछे लगी हैं। आज कौन है ऐसा जो किसी न किसी तरह मजबूर नहीं है ?

"लेकिन हम बहुत ही मजबूर हैं। तुम हमारे घर की हर गुप्त बात को जानते हो ? तुम एक साथ हम दोनों बहिनों को प्यार करते हो ?

"नहीं। मेरी रूपा से केवल दोस्ती है।

'मुझ को प्यार करते हो ?

वह चुप रहा।

'बोलते क्यों नहीं।

'करता हूँ। पर दरअसल बात यह है कि सरला से सम्बन्ध विच्छेद होने के बाद तुम पहली लड़की हो जिसने मुझे सिंचन दिया है। फिर भी मैं आगे बढ़ता हुआ रुक जाता हूँ।"

'क्यों ?

'क्योंकि मैं तुम्हारी आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर पाऊँगा। 'मैं एक साधारण आदमी हूँ। फिर मुझे बार-बार यह लगता है कि मुझे मेरी सरला एक दिन जरूर मिल जायगी।"

'ओह ! मैंने तुम से केवल इतना ही कहा और चली जाती

उसने मुझे नहीं रोका। फिर मैंने सोचा कि वह मेरे जीवन में सुख की एक चिनगारी भी नहीं जला सकता। और मैं उम्र भर अभावों में जलती रहूँगी। लेकिन उसने वे दो सौ रुपए कहाँ से लाकर भाभी को दिये? मैंने इस पर बहुतेरा सोचा। मुझे विश्वास हो गया कि वह मुझ से झूठ बोलता है। वह मुझे सुख के दिखाना नहीं चाहता है। उसे मेरे प्यार की कोई कद्र नहीं। मैं इसी उधेड़बुन में कनॉट प्लेस घूम रही थी। मेरा मन कहीं नहीं लगता था और मेरे पास बस के किराये के अतिरिक्त एक भी पैसा नहीं था। अपने आप पर मुझे बहुत झुंझलाहट आ रही थी।

तभी मैं देखती हूँ कि रमा रमेश के साथ है। मैंने दूर से देखा-दोनों बहुत प्रसन्न हैं। मुझे फिर गुस्सा आ गया 'इसे जरा भी दुःख नहीं और मैं इधर जल रही हूँ।' मैंने एक जासूस की तरह उनका पीछा किया। कई बार मेरी इच्छा हुई कि मैं उन दोनों के सामने जाकर उन्हें चौंका दूं! लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। वे एक रेस्त्राँ में घुसे। वह रेस्त्राँ बढ़िया था अत: मैं एक साधारण मद्रासी रेस्त्राँ में घुस गयी और जल्दी-जल्दी कॉफी पीकर बाहर निकली और उन दोनों की प्रतीक्षा करने लगी।

आधा घण्टा बीत गया। वे दोनों नहीं आये। मैं साहस के साथ उस रेस्त्राँ में गयी। दृष्टि दौड़ायी। हैरान। वे दोनों वहाँ नहीं थे। मुझे विश्वास हो गया है कि जब वे दोनों भीतर आये होंगे तब उन्हें जगह नहीं मिली होगी और वे थोड़ी देर इन्तजार करके चले गये होंगे।

मैं विचलित हो गयी और अवसर मिलने के बाद हारे हुए जुआरी की तरह मैं कुछ उत्तेजित भी हो गयी। मैं इधर उधर घूम रही थी। अचानक मेरी दृष्टि रमा पर पड़ी। वह अपनी बगल में एक 'सूट' का कपड़ा दबाए हुए थी जो कागज के थैले में था।

मुझे देखते ही वह हैरान हो गयी। मैंने अकारण ही पूछा 'आज तू दफ्तर नहीं गयी?"

'गयी थी पर बीच में ही आ गयी।"

'क्यों ?

"वह कपड़ा खरीदना था। परसों मेरी वर्ष गाँठ है न ?"

"क्या देखूँ ?" उसने मेरे हाथ में कपड़ा थमा दिया। मैं उसे देखकर दंग रह गयी। काली सिल्वार और पीला कुर्ता। वाह ! क्या मैच करेगा ?"

क्या आज खरीदा ?

"मुझे नहीं मालूम।"

'क्या सुमन का सिला है ?

"नहीं।

'फिर कहाँ से आया ?"

'स्वरूप ने सिलाया है।"

"उसके पास तो पैसा ही नहीं था।

'यह तुम्हें कैसे मालूम ?

"मैं थोड़ी देर पहले उसके पास थी।

ओह ! वह एकदम उदास हो गयी 'रामा ! अपने आपको मैंजानी क्यों अपने जीवन को नरक बना रही हो ? यह स्वरूप बहुत अच्छा लेखक है पर वह । रामा तुम अभी सिर्फ अपनी पढ़ाई किया करो। अभी तुम्हें बहुत कुछ करना है। बहकने से कोई लाभ नहीं होगा। जीवन बरबाद हो जायेगा। यह उम्र की अपरिपक्वता बड़ी ही खतरनाक होती है।

मुझे रमा का उपदेश अच्छा नहीं लगा। यह सब लोग जो काम शुरू करते हैं उनके लिए ही दूसरों को मना करते हैं। शराबी शराब के दुर्गुणों पर बोलता है आवारा जुआ न खेलने की सलाह देता है और दुश्चरित्र चरित्र और ब्रह्मचर्य की बातें करती है। यह क्या विडम्बना नहीं ? लेकिन मैंने उससे कुछ नहीं कहा। मैं चुपचाप चली आयी। सोचती रही—यह मेरी बहिन एक सोसाइटी-

त्रिलोचन की ओर बढ़ा कर कहा 'लीजिए, कहीं घूम आइए। आज आपकी बहिन की वर्ष गाँठ है न ?'

उसने वह नोट ले लिया और चल पड़ा—उसी वेश्या के दलाल की तरह जिसकी कोई बहिन वेश्या हो। और वह उसकी कमाई पर जीवित हो। उसका मन पीड़ा-दायक ग्लानि से भर गया। इन्हीं विचारों की उत्तेजना में वह गली के बाहर हो गया। परिचित होटल में कोई फिल्मी गीत बज रहा था। फिल्मी विदेशी धुन पर आधारित वह गीत एक बार हर एक का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेता था।

× × ×

दूसरे दिन रामा सुबह ही नाखून का पालिश लेकर बैठ गयी। स्वरूप के प्रति उसकी घृणा चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। वह उसे कुछ चमत्कार दिखाना चाहती थी। वह उसे यह बताना चाहती थी कि अगर वह किसी से प्यार करे तो वह लड़का उसके प्यार में केवल झुमके ही नहीं सभी कुछ अर्पण कर सकता है। वह नाखून रंग रही थी और उसकी नजर सुनील के कमरे की खिड़की की ओर थी।

थोड़ी देर बाद सुनील ने देखा। दोनों की नजरें चार हुईं। नजरों की अपनी एक अलग भाषा होती है। जैसे वह आदमी को नहीं आती पर जैसे ही प्रेम की अनुभूति होती है, वैसे ही वह इसकी मूक से मूक सम्भावसी संकेत से परिचित हो जाता है।

रामा सुनील को देखती रही अपलक और सुनील उसे। पहली बार अपने देखने का समर्थन पाकर सुनील मुस्करा पड़ा। तब हाथ में बीना लेकर वह उसके आगे से गुजरा। समीप आकर खँखारने लगा। ·योग समझिए उसी समय सुनील का कोई मित्र आ गया। उसने

अत्यन्त प्रफुल्लित स्वर में कहा 'आज सुबह-सुबह कैसे ?

'बस तुम्हारी ओर ही आ रहा था।

'क्यों ?"

बस यूं ही।

उसने अपने खड़े होने का पोजीशन बदला। अब वह रामा के सामने था और रामा मुस्कुराती हुई हर दूसरे पल उसे देख रही थी। उसने रामा पर दृष्टि जमा कर कहा 'मैं सब्जी लेने जा रहा हूँ।

कहाँ।"

'मोड़ पर।

'मैं भी चलता हूँ।

'नहीं यार तुम घर जाकर माँ को चाय बनाने के लिए कहो और मैं लपक कर अभी आया। और उसने रामा को कनखी मार कर संकेत किया। कनखी के साथ ही उसके शरीर में भय की लहर दौड़ी। गुद-गुदी सी छूटी। वह लपक कर गली से बाहर हो गया।

सुनील चौराहे पर खड़ा हो गया। उसकी हर धड़कन इस तरह रामा की प्रतीक्षा कर रही थी जिस तरह वह उसकी चिर परिचिता हो।

रामा भी आ गयी। सब्जी का थैला उसके हाथ में था। दोनों के दिल धड़क रहे थे। पास आते ही सुनील ने कहा तुम मुझसे मिल सकती हो ?

हाँ।"

'कहाँ।

यहीं तुम कहो।

'कश्मीरी गेट के कॉर्नर रेस्त्राँ में।

"कितने बजे ?

तीन बजे।"

वह सब्जी लेकर वापस आ गयी। रामा की उदासी खुशी में बदल गयी और वह बड़े उत्साह से हर साँस ले रही थी। आज उसने किसी तरह का भी नखरा नहीं किया। वह खाना खाकर कॉलेज चली गयी।

× × ×

वह शाम को लौटी। उसकी खुशी गम्भीर थी। उसने खाना नाममात्र को खाया क्योंकि सुशील के साथ उसने दोपहर को बहुत भारी नाश्ता ले लिया था। आज उसने इन्दिरा भाभी को भी कुछ नहीं कहा। आज माँ की तरह उसकी भी घर की प्रत्येक गति विधि में दिलचस्पी बहुत ही कम थी। रमा ने आज फिर कहला दिया था कि आज वह रात को नहीं आ सकती।

बूढ़ी माँ ने प्रश्नवाचक दृष्टि इन्दिरा पर जमा कर कहा 'जवान बेटी का रात को घर न आना अच्छा नहीं है बहू! और आस-पड़ोस वाले लोग इसे क्या समझेंगे?'

इन्दिरा ने तुरन्त अपनी सास की ओर जलती दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में गुस्से का सैलाब था। माँ उस दृष्टि को नहीं सह सकी। अपनी दृष्टि को हटाते हुए पंखे पर जमा कर माँ बोली "मैं ठीक कहती हूँ बहू, बूढ़ी औरतें कमजोर जरूर हो जाती हैं पर दुनियादारी बहुत समझती हैं। रमा का रात-रात भर न आना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"लोग चाहे चर्चा करें या न करें पर आपने तो शुरू कर ही दी। मेरी सासजी रमा पर उँगली उठाने वाले की मैं उँगली काट डालूँ! रमा कोई मामूली लड़की नहीं है। वह मेरी ननद है।"

लेकिन मुझे यह अच्छा नहीं लगता।"

'आप पुराने ख्यालात की हैं न ? आपको इस जमाने की बहुत सी बातें अच्छी नहीं लग सकती।

रामा इन दोनों की बातचीत में तटस्थ थी। जब भाभी माँ पर हावी होने लगी तब उसने धीरे से कहा 'फिर भी लड़की की अपनी एक अलग मर्यादा होती है भाभी ! ऐसे में नियमित रूप से एक-दो दिन रात का न आना सन्देह को ही जन्म देता है। माँ बिल्कुल निराधार बात नहीं कहती।

इन्दिरा के होंठ भींच गये। आँखों में घृणा दीप्त हो उठी 'तुम इस तरह बोल रही हो जैसे तुम कृपा के संग-संग फिरती हो। कान खोल कर सुन लो घर के बारे में इस तरह सोचना आप दोनों को शोभा नहीं देता। मैं ज़रा सामान खरीदने बाहर जा रही हूँ।

इन्दिरा के बाहर चले जाने के बाद गृह में क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया। माँ की आँखें सजल हो उठीं। उसने अपना मुँह हाथों में छुपा लिया। माँ की वेदना रामा से नहीं देखी गयी। एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह सारा भेद माँ को कह दे और यह भी बता दे कि एक पत्र भी ... पर तभी उसे सुशील का ध्यान आ गया और वह माँ के समीप बैठ कर विचारशील की तरह बोली 'तुम व्यर्थ चिन्तित होती हो। कृपा कोई भी गलत कदम नहीं उठा सकती। वह एक समझदार लड़की है।"

माँ ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह थोड़ी देर पूर्ववत बैठी रही मन में बड़बड़ाती 'मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। ज़रा भी नहीं भाता।

और रामा सोच रही थी, 'भाभी को मुझे तुरन्त अपने पक्ष में कर लेना चाहिए। बिना उसको पक्ष में किये मैं आज़ादी से घूम फिर नहीं सकती।"

संयोग से दूसरे दिन उसने कृपा के तकिए के भीतर से दो पत्र प्राप्त कर लिये। इन पत्रों में दामोदर ने उससे कहा था कि वह पत्रों

रात यहीं आ जाए। उसको सम्बोधन भी 'जाने मन' जैसे हल्के शब्दों में किया गया था। उसने उन पत्रों को पढ़ा। रूपा से वह बिफर गयी। आज वह भाभी को ठीक करेगी। वह बहुत प्रसन्न हो गयी और भाभी को बार-बार पूछने लगी कि भैया कहाँ है, क्या कब आयेंगे ?

इन्दिरा ने आखिर पूछ लिया "बार-बार भैया को क्यों पूछ रही है ?

एक जरूरी काम है।

क्या ?

'भाभी ! तुम बता सकती हो कि यह वीणा कौन है ?

रूपा की सहेली।

"तुम उसे जानती हो ?"

'अच्छी तरह। उससे कई बार मिल चुकी हूँ।"

रूपा अपने गाल पर एक तर्जनी खड़ा कर कुछ सूसती हुई बोली

' वह बहुत पैसेवाली है।

'जी।

'रूपा रात को प्राय' वहीं रहती है।

'जी पर तू यह सब क्यों पूछ रही है ?

मैं इसलिए पूछती हूँ । 'रामा ने देखा कि माँ के कान खड़े हैं इसलिए वे दोनों पर्दे के भीतर चली गयी। रामा ने अपने वाक्य को बहुत ही धीमे से किया भाभी तुम झूठ बोलती हो ?

'तुम तुम' "

शायद वह मद भी है। पता नहीं इन मर्दों को औरत बनकर परिचय देने में क्यों मजा आने लगा है ? '

"रामा !"

भाभी आज भैया को आने दो। मैं उनसे कहूँगी कि वीणा की जगह रूपा दामोदर के यहाँ जाती है। वीणा नाम की कोई लड़की नहीं है। यह वीणा के नाम पर ।"

रूपा। भाभी चौंक पड़ी।

"चौंको मत ! माँ पास में बैठी है। वह सब कुछ जान जायेंगी। वह यह सब नहीं सह पायेगी। बेचारी शर्म से आत्महत्या कर लेगी। भाभी मेरे पास दामोदर के पत्र हैं और उसमें ...।"

भाभी का चेहरा पापी आत्मा की तरह सफेद हो गया। वह निष्कम्प सी की तरह खड़ी रही। उसके होंठ सूख कर रह गये।

'तुम दोनों कितने दिन तक हमें धोखा दोगी। आज भैया को आने दो। मैं सब कुछ बता दूँगी।'

किसी ने किवाड़े खटखटाये।

भाभी ने रूपा के हाथ मजबूती से पकड़ लिये। वह अनुनय भरे स्वर में बोली तुम चुप रहना। भैया को आने दो मैं फिर तुमसे कुछ जरूरी बातें करूँगी।"

किवाड़े खुले।

उन दोनों की आँखें उस ओर उठ गयीं। उन्होंने देखा—रमा थी। भाभी लपक कर रमा की ओर गयी। उसने उसका हाथ पकड़ा शंकित और काँपते स्वर में कहा ... सब चौपट हो गया।

'क्या ?

'रामा सब कुछ जान गयी है। वह तेरे भैया को सभी कुछ बताने के लिए उतारू है।

रूपा ने उसको चुप कर दिया। वह समझ गयी थी कि वह आवश्यकता से अधिक उत्तेजित हो गया है। रूपा के चेहरे पर भी सूनापन छा गया। उसने माँ की ओर देखा। [illegible] इन सभी की दृष्टि-विधियों से अलग अपने आप में तन्मय थी। उसके होंठ चीर रहे थे और आयु की आँखें किसी चतुर जासूस आदमी की तरह कभी-कभी घूम कर इन तीन व्यक्तियों के बीच फँसे हुए रहस्य को जानने की चेष्टा कर रही थी।

"क्या बात है रामा ?" रूपा ने संयत स्वर में पूछा।

भाभी से पूछ लो ।

रमा उनसे कुछ कहे, इसके पहले ही भाभी व्यग्रता से बोल उठी "इसने तुम्हारे सब [illegible] लिए हैं । इसका कहना है कि तुम्हारी मीना नाम की कोई सहेली नहीं है । तुम रात को मीना के यहाँ नहीं दामोदर के यहाँ सोती हो ? वह काफी उत्तेजित हो गयी और उसकी आँखों में असीम व्यथा उभर आयी "यह कितना झूठ बोलती है ? इसको घर की इज्जत का भी ख्याल नहीं ।

रमा ने रामा की ओर साभिप्राय दृष्टि से देखा और वह उसे खींच कर बाहर ले गयी । बाहर ले जा कर उसने धीमे स्वर में पूछा "तुम क्या जानती हो ?

"मैं सब कुछ जानती हूँ ।

"लेकिन क्या ?

कि तुम ।"

मैं दामोदर के यहाँ जाती हूँ । मैं उसे प्रेम करती हूँ कि इस प्रेम के बदले हमें वह जीवन का सुख देता है । रामा मैं चाहती हूँ कि यह गरीबी और कठिनाइयाँ हम सब के जीवन को न निगले आज भोगना ही सुन्दर है । मैं तुम सभी लोगों के लिए । माँ को यह मत कहना । इससे माँ को बड़ा दुःख होगा शायद वह यह जानकर अपने आपको कुर्बान कर दे ।"

"क्या यह सब भाभी भी जानती है ।

"नहीं । भाभी बेचारी भोली है । वह इन बातों की गहराई में जाना नहीं चाहती । उसे पैसा चाहिए, सुख-सुविधा चाहिए जो उसे इधर मिल रही है । वह कुछ क्षण चुप रही "चल हम जरा घूम आयें ।

जब वे दोनों घूम कर आयी तब दोनों बड़ी प्रसन्न थी । जानता था कि दोनों के बीच कोई बड़ा भारी समझौता हो गया है । भाभी व माँ उन दोनों को देखकर चकित सी रह गयीं ।

उस दिन दोनों ने साथ-साथ खाना खाया । माँ ने कई बार रामा को मगन मे आ कर पूछना चाहा पर रामा ने अवसर ही नहीं दिया । लेकिन दूसरी सुबह माँ को अवसर मिल ही गया और उसने रामा से पूछा "कल दामोदर को लेकर क्या बातें हो रही थीं ?"

"कुछ नहीं ।"

"मुझ से छुपाती हो ।"

"नहीं माँ । बात यह है कि मेरी भाभी से जरा भी नहीं पटती है । मैं दरअसल रूपा दीदी से नहीं भाभी से घृणा करती हूँ इसलिए मैंने कल जानबूझ कर एक शगूफा छोड़ा ।"

"कौन सा ?"

"कि भाभी मेरे साथ यह भाव-वह भाव रखती है । मैं चाहती हूँ कि भाभी को कुछ दुख-दर्द मिले । कल मैं इस बात को लेकर काफी उत्तेजित व उग्र हो गयी थी किन्तु रूपा दीदी ने मुझे समझा दिया । उसने कहा कि परिवार की शांति मन की शांति से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है । तुम्हें अपने मन के सुख के लिए परिवार को छिन्न-भिन्न करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए । उसने मुझे जो-जो बातें बतायी उससे मैंने भी यह स्वीकार कर लिया कि मैं ही गलती पर थी ।"

माँ की आशंका निराधार हो गयी । रामा कोई फिल्मी गीत गुनगुनाने लगी ।

× × ×

रात के दस बजे हैं । बाहर कोई फिल्मी गीत गा रहा है "मेरा जूता है जापानी ।" गीतकार शैलेन्द्र का यह लोकप्रिय गाना कभी-कभी सुशील मुझ भी गुना देता है और इस गीत की ध्वनि ज्यों ही भीतर आती है त्यों ही रामा थूकने का बहाना बनाकर बाहर देखती है ।

जाय। वह मौन सी खड़ी रही। केवल उसकी आँखें प्रकाश-स्तंभ की रोशनी की तरह उसके कमरे में दौड़ रही थीं।

तुम बहुत घबरा गयी हो ?

मुझे डर लगता है।

"यहाँ बैठ जाओ। यहाँ किसी का डर नहीं है। यहाँ मैं हूँ और तुम हो। देखो रामा यह स्थान बड़ा सुरक्षित है और यहाँ हम दोनों पूरी स्वतंत्रता के साथ बातचीत कर सकते हैं। अभी सारी गली सोयी हुई है।

कहीं किसी ने देख लिया तो ?'

'कोई नहीं देखेगा।' उसने आले में से एक बिस्कुट का पैकेट निकाला। उसमें से दो बिस्कुट अपने हाथ में लिये क्योंकि सुनील जल्दी से जल्दी इस भय के विषय को बदल देना चाहता था। उसके मस्तिष्क में यौवन से उन्मादित उद्वेलित युवक के हृदय का तूफान था।

'लो मुँह खोलो।

'नहीं हाथ में दे दो।

'प्यार में ऐसा कोई ही होता है।' उसने दो बिस्कुट उसके मुँह में ठूँस दिये और उसके गालों को जोर से दबा दिया। रामा ने उसे अपनी प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा मानो वह पूछ रही है कि क्या प्यार इस प्रकार के स्पर्श को कहता है। पता नहीं जो स्वयं को समर्पण करने को इच्छुक रहती थी वह सुनील के स्पर्श मात्र से घृणा से क्यों भर जाती थी ? वह उससे एकदम दूर हट गयी।

मुझे यह पसंद नहीं है। रामा ने यह वाक्य इस तरह कहा जैसे वह किसी गहरी खाई से बोल रही हो।

क्यों ?

वह निरुत्तर रही। उसकी आँखों में भयजनित भाव उभर आये और वह नितान्त निश्चल हो गयी।

पर सुनील ने उसे बाहों में भर लिया और"।

और वह अपने होठों पर एक नयी कड़ुवाहट लेकर आयी। वह मुर्दा दर्पणों में घिरी खड़ी भी-गली के सन्नाटे में। उसके हाथ में कुछ रुपये थे। आते समय सुनील ने कहा था "मैं यह सब तुम्हें दे रहा हूँ प्यार के बदले में। यह मेरे प्यार का प्रतिदान नहीं, केवल उपहार है कि कल तुम अपनी आवश्यकता की सभी चीजें खरीद कर निश्चित हो जाओ। एक अच्छे सूट का कपड़ा भी खरीदना।

दूसरे दिन वह अपनी माँ, अपनी भाभी के लिए कुछ कपड़े लेकर आयी। कपड़े देखकर माँ ने पागल की तरह चिल्ला कर पूछा "तुम यह सब कहाँ से लायी?

इसे मैंने दिलाया है। इन्दिरा बीच में ही बोल पड़ी।

माँ चुप हो गयी।

लेकिन साँझ होते ही त्रिलोचन आया। उसके आते ही माँ ने कहा तुम्हारी बहिनों का चाल चलन मुझे अच्छा नहीं लगता है। यह इतना खर्च कहाँ से आता है?

यह सुनते ही त्रिलोचन गुस्से में भर गया। बोला "आज उन दोनों को आने दो।

इन्दिरा उसे तुरन्त घर में ले गयी। धीरे से बोली "तुम्हारी माँ का माथा खराब है। वह नहीं चाहती कि हम दोनों सुख और शांति का जीवन यापन करें। जमाना बदल गया है और तुम इस घूँघट-घूँघट की बातों का ख्याल करते हो? वह सदा कुछ न कुछ नयी बात सोचती रहती है? आखिर वह ऐसा न सोचे तो सोचे भी क्या? बेचारी दिन भर निकम्मी बैठी-बैठी ऊब जाती है। लो यह पाँच रुपये और जाओ घूम आओ। और उसने बाहों में भर कर उसे चूम लिया "मैं तेरी प्रतीक्षा करूँगी।

त्रिलोचन एकदम मुर्दा बन गया। वह पाँच रुपए लेकर बाहर चला गया। उसके जाते ही इन्दिरा माँ पर बरस पड़ी "तुम दाम

'मेरा इस अन्धेरे में दम घुटने लगता है। अन्धेरा मेरे लिए असह्य है।' और रामा की स्मृति-लोक में सुनील के कमरे का अन्धेरा घूम गया। यह अन्धेरा कितना उत्तेजित व कितना वासनात्मक होता है। गर्म साँसों के समुन्दर में आकंठ डूबे वे दोनों एक-दूसरे को इस बुरी तरह से डुबाने की चेष्टाएँ करते हैं कि दोनों अपनी वस्तुस्थिति से पृथक हो जाते हैं। वह अन्धेरा और यह अन्धेरा। स्वरूप ठीक कहता है कि यह अन्धेरा सचमुच में हम सब का अच्छा दोस्त है।

स्वरूप ने सिगरेट जलाने के लिए लाइटर जलाया। क्षण भर के लिए एक मद्धम उजाला हुआ। उस उजाले में सबने एक दूसरे की आकृतियां देखीं। वे आकृतियाँ पृथक-पृथक प्रभाव दे रही थीं। स्वरूप की दृष्टि रामा पर थी। बहुत तेज और सार्थक दृष्टि जैसे वह कुछ ढूंढ रही है कि रामा में कितना परिवर्तन आ गया है?

उसने लाइटर वापस बुझाना चाहा पर रामा ने उसे मना कर दिया "इसे जला रहने दो मेरा अंधेरे में दम घुटता है।"

तभी रेखा आ गयी। उसके साथ मिस्त्री था। मिस्त्री ने जैसे ही फ्यूज को बैटरी से देखा वैसे ही त्रिलोचन ने घर में प्रवेश किया। उसके पाँव डगमगा रहे थे। वह मस्तमौला की तरह झूम रहा था।

उसने आते ही हकलाते हुए स्वर में कहा, "अरे! तुम लोगों ने अन्धेरा क्यों कर रखा है? उजाला करो न?"

'लाइट खराब हो गयी है मिस्त्री ठीक कर रहा है।'

ओह!" उसने पास आकर वह सब देखा। कुछ सहमता हुआ वह पर्दे के भीतर चला गया। पर्दे के भीतर से ही उसने बड़बड़ाया "मुझे नींद आ रही है मुझे मत जगाना।

सब समझ गयी कि वह पीकर आया है। वह शीघ्र ही चेतना शून्य हो गया। मैं अकारण से कसमसा उठा।

स्वरूप ने कहा 'रामा अब तेरा दम नहीं घुटेगा?'

"नहीं ।" उसने सहजता से कहा ।

रूपा ! यह मेरा उपन्यास मैं तुम्हें समर्पित करूँगा क्योंकि इसकी मूल प्रेरणा तुम्हीं से मिली है ।

"नहीं, मैं इस काबिल कहाँ ?"

यह मैं समझता हूँ । उसने यह वाक्य रूपा से कहा पर देखा रामा की ओर । रामा जल भुन गयी । सोच बैठी कि स्वरूप सदा उसका अपमान करने के प्रयत्न में रहता है । रामा चिढ़कर बोली केवल रूपा को नहीं उसके

"रामा ! एक तारीफ़ भी रूपा से प्यार में ... हर सहज बात में जहर मत घोला करो । अभी तो हँसी-मज़ाक की बात चल रही है उसे इतनी गंभीरता से क्यों लेती हो ?"

मैं क्यों लेने लगी ? स्वरूप के टोन से चिढ़कर ही मैंने यह कहा । वह क्यों बात-बात पर मुझ पर व्यंग्य-बाण करता है ।

स्वरूप ने मुस्कराकर क्षमा याचना भरे स्वर में कहा — "मेरी सहज बात को तुम अगर इस तरह लेती हो तो मैं तुमसे माफ़ी माँगता हूँ ।"

"थप्पड़ मार कर माफ़ी माँगने से क्या मतलब है । हूँ !" वह घृणा से मुँह बिचका कर उठ गयी और कमरे का अतिक्रमण करने लगी । स्वरूप भी चला गया । रूपा उसके पास आकर कोई उपन्यास पढ़ने लगी । दो [illegible] की खबर उसकी [illegible] हुई मौन रह रही थी । इन्दिरा पहले से थी । रूपा ने इधर उधर गयी थी माया जान कर धीरे से कहा "रामा ! रामा ! जीवन में इतना जल्दी और अस्थिर होकर नहीं चलना चाहिए । स्वरूप तुम्हारी बड़ी इज्जत करता है ।"

"मैंने उसका कब अपमान किया ?"

"तुम बेचारे से सीधे मुँह बात भी नहीं करती हो ।"

"क्यों करूँ ? दीदी ! तुमने मुझे अपनी मजबूरियाँ सब-सब बताओ" । [illegible] जानती हो मैं सब कुछ जान जाती और जानती भी

थी। दामोदर से तुम्हारा सम्बन्ध और यह गर्भ ? वैसे तुम भी मेरे बारे में सभी कुछ जानती ही होगी लेकिन यह स्वरूप प्यार मुझ से करता और । यह कमीना है बेहद कमीना । इसे यहाँ आने की मनाही कर दो। वह काँप सी गयी।

"कर दूँ गी। कह कर वह व्यथित हो सो गयी।

रात तैर रही है नींद के पंखों पर रामा को नींद नहीं । वह रात को अथाह निद्रा में देखना चाहती है। सो रात बेखबर है और वह जगी—रामा।

सुनील उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

रामा भीतर घुसती है। सुनील उसे बाँहों में भर लेता है। उसके हाथ में नोट पकड़ाता है। कहता है, लो यह पाँच सौ रुपए अब तो खुश हो न ? अपनी बहिन से भी बढ़िया साड़ी लाना रामा। मैं तेरे लिए आसमाँ के तारे भी ला सकता हूँ।

सुनील फिल्म के हीरो की तरह भावनाहीन किन्तु वजनदार संवाद बोलता रहा।

सन्नाटा और अंधेरा।

'दरवाजा खुलता नहीं है सुनील।" धीरे से फुसफुसायी रामा। एक धक्का सा लगा सुनील के दिल पर क्या कहती हो ? जरा जोर लगाओ ना ?

रामा ने अपनी पूरी शक्ति के साथ दरवाजे को खोलने की चेष्टा की पर दरवाजा नहीं खुला। सुनील के भीतर का हैण्डिल पकड़ कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति से खींचा पर फाटक बंद। फाटक बन्द कि उसकी साँसें बन्द। उसके सारे शरीर से पसीना छूट गया। उसने भयभीत दृष्टि को अंधेरे में फैलाते हुए काँपते स्वर में पूछा तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं ?"

'नहीं।

फिर । सुबह हो जायेगा रामा ? मेरी तो कोई नहीं।

तेरा क्या बिगड़ेगा मैं हूँ औरत जात मेरी भारी इज्जत धूल में मिल जायेगा।

तेरी इज्जत क्या धूल मे मिलेगी। तुम दोनों बहिनों का सारा मोहल्ला जानता है कि इनका भाई दलाल है और बकाया मैं दोनों बहिनें पेशा करती

"सुनील! इसकी बकवास पर ध्यान मेरे प्रति न बनाया। मैंने तुम्हारे सिवाय किसी को भी समर्पण नहीं किया है। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ और तुमने मुझे वचन दिया है कि मैं तुमसे विवाह करूँगा और आज ।

सुनील का विचार समाप्त हो उठे हुए चरित्रहीन औरत एक आदमी का बहुत ही पूर्ण और सही अनिमय करती है। तुम कुछ कम थोड़े ही हो।

रामा की आँखें भर आयीं। वह भरपि स्वर मे बोली हम गरीब जरूर हैं। हमारे समाजों ने हमारे भीतर सम्बन्ध परम्पराओं का जन्म जरूर दे दिया है पर हमें कमीना और नीच मत समझो। सुनील! ।

विवाह सम्पन्नाये।

उन दोनों की आँखें मिल गयी।

विवाह मुझे।

रामा भय से कांपकर हटकर सुनील के पीछे हट गयी।

'तमाशा करो। सुनील के बाप की क्रोध भरी आवाज आयी। सुनील भय से सिहर कर बड़बड़ाया मेरे पिता जी आ गये हैं।

तमाशा हुआ।

रामा ने देखा कि सुनील के पिता जी के साथ उसका भाई निर्मोचन भी । वह अपराधी की भाँति सिर झुका कर खड़ी हो गयी। यही स्थिति सुनील की थी।

देख रहे हो भाभी विमल बहिन का? मेरे बेटे को फाँसकर बेटा पर मूड रही है। मैं रहूँ, मेरी तिजोरी मे सुराग हुए रतन।

त्रिलोचन की आँखें शर्म से झुक गयीं। उसने सुशील के बाप के पाँव पकड़ कर कहा, "मैं आपके पाँव पकड़ता हूँ आप धीरे बोलिए, जागी है।"

"आपका क्या बिगड़ा ? यह नालायक इस बदजात को मेरे हजारों रुपये चुरा चुरा कर खिला चुका है। उन रुपयों को कौन देगा आप या यह ?"

रामा भड़क उठी "और मेरी इज्जत की कीमत कौन देगा ? आपके बेटे ने मुझे विवाह के लिए भरोसा देकर क्यों मेरी अस्मत लूटी है उस अमूल्य का मोल कौन देगा ?"

त्रिलोचन ने गुस्से में तड़प कर उसे एक थप्पड़ मार दिया। रामा ने उसकी कोई परवाह नहीं की। वह बोली इसने मेरे साथ छल किया मुझे बरबाद किया है।"

"तू चुप रह मक्कार ! चल।"

त्रिलोचन उसका हाथ पकड़ कर ले आया और कमरे में लाकर उसे डंडे से बुरी तरह पीटा। रामा का सारा शरीर सूज गया। मुँह से खून बहने लगा। इन्दिरा और रूपा ने बचाने की चेष्टा की तो त्रिलोचन ने उन दोनों को भी गालियाँ दे देकर पीटना शुरू कर दिया। पड़ोसी लोग आ गये। उन्होंने असली रहस्य का पता लगाने की बजाय यही कहा कि शराब पीने पर आदमी और क्या करेगा ! साथ ही उन्होंने त्रिलोचन को शांत भी कर दिया।

त्रिलोचन बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा। रोते रोते उसने उन्मादग्रस्त प्राणी की तरह अपने सिर को पीटा और अधमरा सा पड़ गया।

रामा एक कोने में अपने मुँह को छुपाये पड़ी थी। रोते रोते उसकी भी आँखें लाल हो गयी थीं। रूपा और इन्दिरा इस तरह बैठी थीं जैसे वे दोनों किसी का मातम मना रही हों। माँ त्रिलोचन के पास बैठी थी और उसे धीरज बंधा रही थी। कटुता उनकी क्षीण

आँखों में तैर रही थी। वह अस्पष्ट स्वर में बड़बड़ा उठी "यह सब मेरी बहू के कारण है। मैं बार-बार कहती थी कि इन छोकरियों के लच्छन अच्छे नहीं हैं पर मेरी बहू पैसों के लालच में अन्धी हुई जा रही थी।

यदि दूसरा समय होता तो इन्दिरा दुर्गा माँ की तरह खौलती हुई लाल पर झपट पड़ती पर अभी वह करुणा व मूकता की प्रतिमूर्ति बनी हुई थी। अपने आन्तरिक गुस्से में अपने दोनों हाथों को बुरी तरह भींच रही थी।

कला का चेहरा महापापी की तरह स्याह पड़ गया था।

त्रिलोचन ने अपने अन्तस की सारी तिक्तता स्वर में भर कर कहा "कल से तुम दोनों ने घर से बाहर पाँव रखा तो टाँगें तोड़ दूँगा। नौकरी-चाकरी पढ़ना लिखना सब बन्द!"

बड़ी गहरा मौन!

आखिर सब थके सभी दुख-दर्द से मुक्त करने वाली नींद की गोद में अपने अपने बोझिल हृदयों को लेकर सो गये।

आज कोई लड़की घर से बाहर नहीं गयी। त्रिलोचन उदास उदास सा बना रहा। आपस में किसी ने भी बातचीत नहीं की। उससे बातचीत करने का मतलब था कि घर में फिर अशांति को जन्म देना। आज माँ अधिक और प्रसन्न दिखायी पड़ती थी। वह और बेटियों से प्रतिशोध लेकर वह आन्तरिक रूप से खुश थी क्योंकि उसकी वर्षा-चाची और कला-कली दोनों में एक चमक था ऐसी चमक जो बिल्लियों की आँखों में अन्धेरे में दिखायी पड़ती है।

माँ ने चुप लगा ली। उसने किसी से भी अनुरोध नहीं किया। केवल वह अपने लड़के के पास गयी और उसके सिर पर कोमलता से हाथ फेर कर सिसकी भरे स्वर में कहती "मेरे लाल धीरे से।

त्रिलोचन ने माँ को भारी दृष्टि से देखा और अपने लम्बा साँस लिया। क्षण भर के लिए उसके दिमाग में यह विचार आया कि माँ

उसे चाय की जगह जहर लाकर दे दे, चाय से जहर उत्तम रहेगा।
मां जैसे उसकी स्थिर दृष्टि का अभिप्राय समझ गयी हो अपने स्वर को और कोमलतम बनाती हुई बोली — बेटी बिना चाय के तेरी तबीयत ठीक नहीं रहेगी।

उसने चाय का प्याला हाथ में ले लिया। एक बार उसने अपने मुर्दा परिवार पर दृष्टि डाली—रामा के अतिरिक्त सभी जाग रहे थे पर बिस्तर नहीं छोड़ रहे थे। उसने चाय पी। मां ने भी। उन दोनों ने जब चाय पीली तब मां ने रूपा से कहा यह चाय पड़ी है तुम लाय पीला।"

रूपा ने उठकर चाय प्यालियों में डाली। उसने एक-एक प्याला भर के सभी सदस्यों की तरफ बढ़ाया। चाय के आदी सभी प्राणियों ने इस बिना प्रेम की चाय को पी भी लिया। सिर्फ रामा ने नहीं पी। रामा ने विद्रोह दृष्टि से सभी सदस्यों को सिर्फ देखा। त्रिलोचन उस दृष्टि को नहीं सह सका। मां ने नर्म कर कहा ऐसे क्यों घूरती है? चाय क्यों नहीं पीती?

मैं चाय नहीं पीऊंगी।

और खाना।

नहीं खाऊंगी। मैं उस कमीने सुनील को भरे बाजार में जूते न मारूं तब तक अन्न-पानी ग्रहण नहीं करूंगी।

जली हुई समाधा चिपका दी हो इस तरह चिहुंक पड़ा त्रिलोचन वह रामा के पास गया। उसके बालों को पकड़ कर बोला कमबख्त ही समाज को सलाम नहीं लगावेगी रात को तमाशा देखा उससे भी नहीं भरा। तुम घर से बाहर कदम रख दिया तो मैं तुम्हे जीते जी जला डालूंगा।

बाप जला देना। आप मुझे जितना भी चाहे मारना-पीटना किन्तु मैं उसे मजा चखाये बिना नहीं रहूंगी। उसने मुझ धोखा दिया है उसने मुझे प्यार के नाम पर बरबाद किया है। मैं उसे माफ नहीं

कर सकती ।" वह बादस्तूर उत्तेजित स्वर में बोल रही थी ।

"चुप रह छिनाल !" त्रिलोचन ने हाथ उठाया । रूपा ने लपक कर उसे पकड़ लिया । त्रिलोचन ने कड़कड़ाते हुए स्वर में हाथ छोड़ने की धमकी दी बाद में छुड़ाने की चेष्टा की पर रूपा ने अपने दोनों हाथों से त्रिलोचन के हाथ को मजबूती से पकड़े रखा ।

"आप शांत रहिए, मैं इसे समझा दूंगी ।"

घर में एक बार फिर सन्नाटा सा रह गया । दोपहर को कुछ लोग बाहर चले गये । सब के अपने-अपने काम बहाने थे । मेरी गोद में रह गयी—रूपा और रामा ।

रूपा ने रामा से कहा "तुम बहुत उत्तेजित हो जाती हो ?"

रामा ने मुंहजोर स्वर में कहा "इतना बड़ा दम हो जाने के बाद" कौन धीरज रख सकता है ? मैं उस कमीने का बिना मारे चैन नहीं रहूंगी चाहे मुझे फांसी की सजा ही क्यों न हो जाय ?"

रूपा ने उसे परामर्श भरे स्वर में कहा "वह पागलपन है । बैन गरम हो गया है । भाभी बता रही है कि सुनील को उसके बाप ने सुबह की गाड़ी से बाहर भेज दिया है ।"

रामा ने गर्दन को झटक कर उसकी ओर देखा ।

"हां रामा उसके बाप का अनुमान है कि हम मरी गिरे हुए लोग हैं और हम दोनों गोमादरी मर्द हैं । हमारी कोई इज्जत-आबरू नहीं है, इसलिए उन्होंने अपने ही बेटे का दूर भेजना अच्छा समझा ।

रामा सिसक पड़ी । रूपा ने कहा "उसके जाने का तुम्हें बड़ा दुख है ?"

"दीदी मैंने उसे अपना आत्मा से प्यार किया था । सिर्फ इसलिए कि मैं एक व्यक्ति के संग जीवन गुजारूं और उसने मुझ से विवाह करने का वादा किया था । इसी वादे पर मैंने उसे अपना सर्वस्व समर्पण किया । एक औरत के इतना बड़ा दम

'जो हो गया, उसे भूल जाने में ही फायदा है।' रूपा ने उपदेशक की तरह कहा 'आज का जीवन परम्परा प्रतिशील है। इस तेजी से हर मान थोड़े दिनों में भुला दी जाती है और पूँजीवादी युग ने हमारे मूल्यों के मापदंड बदल दिया है। तुम्हें मैंने कई बार समझाया था कि भावुकता मत करो। तुम मुझ से ही द्वेष रखने लगी। तुम मुझ से ही बैर लेने उतर गयी।

रामा चुप!

रूपा ने कहा 'हम बहुत ही मजबूर हैं। मुझे अपने आपको जिस दशा में जीवित रखना पड़ रहा है वह मैं ही जानती हूँ। मैंने सोचा कि मेरा पतन तुम लोगों का जीवन सँवार देगा पर तुम मुझ से द्रोह करने लगी। अभी भी समय है, ठोकरें इन्सान को सही रास्ते दिखाती हैं।

'मैं अब यहाँ नहीं रहूँगी। मुझे इस दिल्ली से ही चिढ़ हो गयी है।' उसके स्वर में विरक्ति थी और आँखों में उदास परछाइयाँ।

'इस तरह निराश नहीं होना चाहिए। भैया गुस्से में है। उसके स्वाभिमान और गैरत पर बहुत चोट लगी है इसलिए उसने हम सभी लोगों के जीवन पर अनुचित प्रतिबन्ध लगाने की आज्ञा दे दी है पर यह प्रतिबन्ध अधिक दिन चलने वाला नहीं है। भूख सबको ठीक कर देती है। तुम अधिक अपने आपको पीड़ित मत करो। अधिक आत्मशोचन भी ठीक नहीं। बीत गयी को भुला देना ही श्रेयस्कर है।

इस तरह रूपा रामा को बड़ी देर तक समझाती रही और रामा के हृदय में एक नया ही विचार पनपता रहा।

× × +

असहयोग।

अंग्रेजों के राज्य में था तो महात्मा गाँधी के आह्वान पर फिरंगियों से असहयोग भारतीय जनता ने किया था या अब मेरे लोक

वासी इन गृह-सदस्यों ने विलोचन से किया है।

रामा रूपा और इन्दिरा तीनों एक तरफ हो गए और विलोचन व माँ दूसरी तरफ। रेपा भारत की विदेश नीति की तरह तटस्थ। वह बेचारी सबसे छोटी सबसे अधिक दुख झेलती। हर कोई उस पर हुक्म चलाता और वह बेचारी थक कर टूट जाती।

विलोचन सुबह ही घर से बाहर निकलता और शाम तक मारा मारा फिर कर आ जाता। वह इन्दिरा से रोटी नहीं माँगता वह अपनी दोनों बहिनों से रोटी नहीं माँगता। वह अपनी माँ से उत्साह हीन स्वर में कहता माँ खाना तैयार है। माँ उसके मुरझाए हुए म्लान-क्लांत मुख को देखती और उसका हृदय दुख से भर जाता। वह बिना कोई उत्तर दिये उसे खाना परोस देती। वह खा लेता। उसका साहस नहीं होता था कि वह परिवार के सदस्यों की ओर देखे। एक घुटन और एक खामोशी छायी रहती थी। ऐसा लगता था कि यहाँ असहयोग और घृणा के अदृश्य इन्सान घूम घूम कर बम बाँट उदासी फैला रहे हैं।

हर शाम जब रोशनी का समन्दर समेटे सूर्य अस्त हो जाता है कैसे अस्त होता है इसे विलोचन नहीं जानता। क्यों कि वह कभी छत पर नहीं गया है और गगन अस्त होते हुए सूर्य को नहीं देखा है। लेकिन ज्यों-ज्यों तिमिर पंख फैलने लगते हैं त्यों-त्यों उसका शरीर एक टूटन से बिखरने लगता और उसकी इच्छा होती कि वह शराब पी आये पर उसकी गरज उसे अपनी पत्नी के सम्मुख हाथ फैलाने को बाध्य नहीं करती। वह धमधाम खाट ■ लोटे हुए इन्सान की तरह उदास और टूट कर पड़ जाता।

आज उसे वृन्दा मुझा हुआ मिला। माँ ने भयभरी दृष्टि से बेटे की ओर देखा। पर सप्ताह भर से रूपा और रामा घर में बैठी बैठी ऊब चुकी थी। परिवर्तन आया था। उसने घर का रहस्य जानना चाहा पर वह नहीं जान सका। एक अज्ञात मूकता के कारण वह वह

जरूर समझ गया था कि कोई अनहोनी घटना यहाँ जरूर घटी है। रूपा के प्राण सूखे हैं। राधा की सिसकार में आवश्यकता से अधिक सलवटें पड़ी हैं। इन्दिरा भाभी की त्योरियाँ चढ़ी हुई हैं।

"आप सब उदास क्यों हो?" स्वरूप ने पूछा।

"नहीं तो।" रूपा ने कहा। "बात यह है कि आज मेरे पेट में ऐसा भयानक दर्द हुआ कि परिवार की सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी। अभी भी थोड़ा-थोड़ा दर्द है।"

बात उसके कान में नहीं पड़ी।

त्रिलोचन ने माँ से पूछा, "मुन्ना खाना नहीं।"

"नहीं।"

"क्यों?"

"आटा, नमक और तेल सभी कुछ खत्म हो गया है।"

"तुम इन्दिरा से पैसा माँग लेती।"

इन्दिरा पर्दे के पीछे से शेरनी की तरह बाहर निकली। उसकी आँखें आग बरसा रही थीं। हाथ को जरा ऊपर उठाकर जोर का झटका देकर वह बोली, "मेरे पास तुमने खजाने भरकर रख छोड़े हैं जो मैं तुम्हें दे दूँ।"

त्रिलोचन को इन्दिरा का यह व्यवहार असह्य लगा। वह सिर से पाँव तक तमतमा उठा। उसकी इच्छा हुई कि इस मुँहफट की बत्तीसी एक थप्पड़ में तोड़ डाले। लेकिन वह अदृश्य डोरियों से बँधे इन्सान की तरह बँधा हुआ बैठा रहा। दिल में इतना तूफान लेकर भी वह नहीं उठ सका। केवल जलती आँखों से इन्दिरा को देखता रहा। इन्दिरा वापस कमरे में चली गयी।

माँ ने खिन्न स्वर में कहा, "जब से तुमने दोनों छोकरियों का बाहर आना-जाना बंद किया है तब से तेरी बहू का आराम ही हराम हो गया है। उसे कुछ भी नहीं सुहाता। उसके चेहरे की चमक और होंठों की हँसी चली गयी है।"

'यह भी फँस सकती है,' इन्दिरा मन्द स्वर बोली, 'आज यह अभागा दिन आना ही था। बेचारी फूल सी बच्ची रेखा सुबह से एक दाने के लिए तरस रही है। अच्छा है कि घर में छोटे-छोटे बच्चे नहीं हैं वर्ना यह घर आज [illegible] बन जाता। बच्चों की विडम्बना और ... !

तभी बाहर बाजार का शोर सुनायी पड़ा। एक आदमी चिल्लाता भागा जा रहा था जैसे वह हरकारा हो और कोई खबर अपना कर्तव्य समझकर सुना रहा हो। वह कह रहा था—आम रास्ते में एक औरत को बच्चा हो गया, रास्ते में एक औरत के बच्चा हो गया। उसकी इस घोषणा ने श्रोताओं में उत्सुकता जगानी शुरू की और लोग जल्दी-जल्दी उस ओर भागने लगे।

स्वयं रामा, रेखा और माँ भी अपनी उत्सुकता को नहीं रोक सकीं। वे सब चल पड़ीं। रह गये—इन्दिरा और त्रिलोचन।

त्रिलोचन ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "क्या तुम्हारे पास एक भी पैसा नहीं है?"

"नहीं।"

"मैं यह समझता हूँ कि तुम्हें बहुत दुख है पर घर की इज्जत सबसे बड़ी है। मैं समझता था कि रामा अच्छी तनख्वाह ले आती है जिससे हम सबका खर्च चलता है लेकिन उस दिन का नजारा देखकर कौन भाई सिर ऊँचा उठाकर चल सकता है।" उसने बड़े दुख से कहा।

"आपने सोचा न समझा और हाय हाय मचा दी। आखिर रामा की उम्र ही क्या है? बच्ची है, बहक गयी। इसका मतलब यह नहीं है कि आप इससे सारे घर की व्यवस्था को छोड़ दें। मैं जानती हूँ कि आपको बड़ा दुख हुआ होगा पर मुझे भी कम नहीं। मैं भी आँख उठाकर चल नहीं सकती। लेकिन इससे बच्चियों पर ऐसा कठोर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता। सुनील ने रामा को प्रेम का झाँसा देकर ऐसा किया है, इसमें उसका क्या दोष है?

लेकिन मैं क्या ?

इन्दिरा बीच में ही बोली "यह सब षड्यंत्र है। सुशील के मा का षड्यन्त्र भी हो सकता है ? ऐसा करके वह रामा के चरित्र प गिराने का नाटक रच सकता है।

त्रिलोचन का चेहरा गंभीर हो गया। कुछ हल्की हल्की उलझन व्याप्त हो गयी।

"कल समाज का एक दाना भी घर में नहीं रहेगा। आपको का काज मिलता न जाने कब मिले ? मुझे दो चार दिन से अधिक ना निकाली जा सकती। मेरा कहा मानिए और जैसा चल रहा था च चलने दीजिए अधिक हो तो आप रामा को कॉलेज पहुँचा आ करें और वापस ले आया करें। इससे आपको मालूम हो जायेगा कि बच्ची कैसी है ?

त्रिलोचन की मुद्रा थोड़ी सी उसके पक्ष में होती हुई सी लगी स्थिर दृष्टि में तनिक स्वीकृति का आभास झलका। इन्दिरा ने बात को और गंभीर बनाते हुए कहा मैं आपका कहती हूँ कि राम जरा भी बुरी लड़की नहीं है। आप जानते ही हैं कि रामा बी मुझ जरा भी नहीं पटती। पर मैं गलत बिना किसी की भी नहीं कर सकत आप जरा शांति से सोच लीजिए, मेरी बातें आपको ठीक ही लगेंगी।

रेखा की आवाज ने उन दोनों को चौंका दिया। त्रिलोचन और इन्दिरा इस तरह बैठ गये कि जैसे उनमें आपस में जरा भी वार्तालाप नहीं हुआ है।

रेखा ने आते ही उत्साहपूर्वक कहा "भाभी पचन हो गया है नन्हा फूल सा बच्चा और भीड़ यहाँ के लोग बड़े बेशर्म हैं। इस तरह इकट्ठा हो गये जैसे कोई तमाशा हो। वह औरत लाज से मर रही थी। यह तो आप समझिए कि दो चार अच्छी महिलाएँ आ गयीं और उन्होंने स्थिति को काबू कर लिया वर्ना वह स्त्री शर्म के मारे मर जाती।

उसके साथ कोई और नहीं था।

"नहीं। वह निहायत एक गरीब घर की औरत है। उसका पति सुबह ही मजदूरी पर चला जाता था और वह बेचारी भी कहीं काम काज करने चली जाती है। इसके साथ ही एक आदमी कह रहा था कि यदि ये दोनों काम न करें तो अपने परिवार का पोषण भी नहीं कर सकते।

इन्सान बहुत मजबूर है।

रूपा ने मेज पर बिखरी पुस्तकों को तरतीब से रखते हुए कहा यहाँ की सरकार को सबसे पहले इन्सानों की जिन्दगी का ठेका ले लेना चाहिए। यह निश्चितता ही आज के जीवन को समृद्ध और सुखी कर सकती है।

बातचीत बहुत देर तक चलती रही। एकाएक इन्दिरा ने सभी बातों का रास्ता छोड़ कर कहा 'रूपा! कल से तुम अपने काम पर जा सकती हो और रामा तुम भी"

माँ को किसी ने जोर की चिकोटी भर ली हो जैसे चिहुँक कर बोली "ये दोनों घर से बाहर नहीं जा सकतीं।"

'नहीं जा सकतीं क्यों? इन्दिरा ने प्रश्न किया।

माँ ने त्रिलोचन की ओर देखा पर त्रिलोचन ने माँ की ओर पलकें नहीं उठायीं। माँ समझ गयी कि इस चुड़ैल ने मेरे बेटे पर जादू कर दिया है। उसकी कोई बूटी पिला दी है। फिर भी उसने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा इसलिए कि घर की इज्जत-आबरू सबसे बड़ी है और छोकरियों के मदारी बनने भी अच्छे नहीं हैं।

"छिः छिः! कम से कम आपको अपनी इज्जत पर कीचड़ नहीं उछालना चाहिए। सभी लोग अपने घर की इज्जत पर धूल पड़ते देखकर उसका करते हैं और आप उसे उछालती हैं। आपको शर्म आनी चाहिए। 'और फिर रामा की पढ़ाई अधूरी रह जायेगी और रूपा इस तरह नौकरी छोड़ कर घर में नहीं बैठ सकती। यह

जिम्मेदारी होती है नौकरी की अपनी । इसके मालिक पुलिस को भेज कर भी इसे बुला सकते हैं।

त्रिलोचन इस पर भी चुप रहा । माँ की आँखों में रोष व घृणा दोनों तैर आयीं । बोली "एक लड़के से आप सबका दिल नहीं भरा गया ? त्रिलोचन मैं कहती हूँ कि लड़कियों को ।

इन्दिरा बीच में बोली 'आप के दिल में अविश्वास घर कर गया है । मैं आपका ज्यादा विरोध नहीं करूँगी । जब तक आपका लड़का काम पर न लगे तब तक रूपा काम पर जायेगी और रामा की पढ़ाई में आप बाधा नहीं डाल सकती ।

उसका निर्णय सुनकर सब में हलचल हुई । माँ निःशब्द हो उठ और बाहर झाँकने लगी ।

बाहर कीड़ों की तरह इन्सान घूम-फिर रहे थे । एक नंगा बच्चा इस तेजी से भाग जा रहा था कि बहुतों की आँखों में कौतुक सा उठा और ओठ हँसी से भर आये ।

थोड़ी ही देर माँ विमूढ़ सी खड़ी रही । वह बहुत दुखी परेशान और विवश थी कि उसका प्रभुत्व मर गया उसका गौरव टूट गया ।

गली से अर्थी निकली । राम नाम सत्य की ध्वनि करती हुई । शायद कोई जवान की मौत थी इसलिए अर्थी के जाने वाले रो रहे थे । माँ ने मन ही मन कहा 'हे प्रभु तू मुझे भी अब उठा ले ।

× × ×

एक वर्ष बाद—

संजय और नरेश की आँखों में प्रसन्नता और आकुलता दोनों दीप्त हो रही थीं । रामा ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया वैसे ही उसकी दोनों आँखों में खुशियों का सागर लहरा उठा । उसके होंठो पर हास रुक-रुक कर बिखर रहा था ।

इन्दिरा ने पूछा, 'क्या बात है रामा बाबू ?'

"कुछ नहीं भाभी जीवन सफल हो जायेगा मेरा सपना पूरा हो जाएगा।

"कैसे ?

"मैं विदेश जाऊंगी। पेरिस न्यूयार्क लन्दन ।

"सच !"

"हाँ। रामा ने विचित्र तरह अपनी पलकें नचायीं। आँखों को इन्दिरा के भूखे चेहरे पर जमाते हुए उसने अपनी चोटी को निरन्तर गोल और बनाया फिर उसको झटके के साथ पीछे की ओर फेंकती हुई वह कह उठी "पुए की पलकें भाभी दिन प्रतिदिन पटती जा रही हैं। रोशनी एकदम स्पष्ट होकर मेरे सामने फैल रही है। भाभी की एक अभिलाषा जैसे ही पूरी होती है वैसे ही खुशियाँ उनके चेहरे पर आकर अंकित हो जाती हैं।

भाभी कुछ उदास सी हो गयी। अपने दुपट्टे के पल्ले को अपनी अंगुली के छोर से खोलती हुई वह बोली तुम उस खुशी में मेरा साथ नहीं दोगी जिसका मुझे बरसों से इन्तजार था।

"कौन सी ?

"मैं माँ बनने वाली हूँ।"

"सच !" उसने भाभी को आलिंगन में पाकर चूम लिया। भाभी का वही तो बड़ी समस्या में सदा उलझा रहने वाला चेहरा संकोच से मुक्त हुआ। अपनी पलकों की बरोनियों को नचाती हुई कुछ सँवरती वह हुई बोली हाँ मैं माँ बनने वाली हूँ। मेरे माँ बनने के बाद ही तुम्हें जाना होगा।

"लेकिन भाभी ?

"क्या ? भाभी की आँखों में प्रश्न था।

मुझे जाने दो। जीवन में सुअवसर बहुत ही कम मिलते हैं। सौभाग्य समझो कि मुझे यह सुअवसर मिल गया है। रेडियो में एनाउन्सर की नौकरी करने के बाद भाभी मुझे अपने जीवन

जेब में उतना रुपया नहीं है जितना पहले होता था। अतः इन्दिरा का झुकाव रामा की ओर विशेष है।

वह सो जाती है। कभी अकेली और कभी रेखा के साथ सोने में उसे असीम अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। तब उसकी मुखाकृति पर पावनता की किरणें बिखरी हुई पाती हैं और ममता का सागर सिमट-सिमट कर उसके नयनों में आ जाता है। वह मातृत्व की एक धुन में खोयी हुई उसे थपथपाती रहती है और कभी कभी चूम भी लेती है तब रेखा जाग जाती है। और वह अलसायी सहजता व भोलेपन से पूछती है 'बड़ी दीदी यह क्या करती हो ?'

"तुम्हें चूमती हूँ रेखा तू मेरी बच्ची है न ?"

रेखा की आँखों में सजीवता नाच उठती है और रमा के चेहरे की गरिमा से वह मंडित हो जाती है।

रमा !

असन्तोष की आग में समिधा की भाँति जल रही है। जीवन की परिस्थितियाँ और विषमताएँ हवन सामग्री की तरह उसे प्रज्वलित कर रही हैं। इधर उसने अपने आपको जैसे बहुत बड़ी अनाथिन पाया है और उसे महसूस हुआ कि वह नितान्त ही अस्वस्थ जीवन जी रही है। इस जीवन में कोई भी स्वाभाविकता नहीं है कोई सहज सुख नहीं। अतः वह बहुत ही अन्तर्मुख हो गयी है और इस अन्तर्मुखता ने उसे उदासियों में घेर लिया है।

जोर की खटखट की आवाज करती हुई रामा जाती है। उसके अंग-अंग से सुगन्ध बरसती है और मेरे मस्तिष्क में एक मादकता छा जाती है। उसका पुष्ट सुगन्ध का स्रोत है और उसका आगमन वातावरण में बसन्त-बहार लाने वाला होता है।

कभी-कभी वह पीकर आती है। तब उसके कदम लड़खड़ाते हैं। वह गुनगुनाती है। आकर वह अपने कमरे में फिर डान्स करती है। उसका कमरा ठीक मेरे ऊपर है इसलिए बेचारी बुढ़िया जीनत के

ऊँची निगाहें किए हुए देखती रहती है और कभी-कभी वह सेंकिस पहने हुए ही खाँसी शुरू कर देती है तब खट खट खट से मेरे सिर में दर्द होने लगता है और बुढ़िया परेशान होकर ऊपर जाती है और जब वह वापस लौटती है तब उसकी आँखों में आँसू अटके हुए होते हैं।

सुबह रामा उठकर अपनी सन्दूक खोलती है और उसमें रखे हुए नोटों पर कुछ नोट और रख देती है, शेष भाभी को पकड़ा देती है। भाभी चुप हो जाती है और रामा अपना विदेश जाने का प्लान सुनाती है। प्लान वह हर रोज सुनाती है।

इस तरह जीवन गुजर रहा था इस परिवार का।

× × ×

अकस्मात एक तूफान आया। इस तूफान को मैं भी सहन नहीं कर सका।

वह सुबह भागम्भागी की। कुछ मेघ-खंड नील गगन पर टंगे थे। माँ मेरी गोद में बैठी हुई ईश्वर की याद कर रही थी कि हमिदा भागी-भागी आयी और बोली रूपा दरवाजा नहीं खोलती है। हमने कई बार किवाड़े खटखटाये हैं।

मैं बेहताशा भागा।

निरंजन जोर जोर से किवाड़ खटखटा रहा था और रामा चीख चीख कर रूपा को आवाज लगा रही थी। रेखा चुपचाप खड़ी थी। तभी दो-चार पड़ोसी आ गये। उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि दरवाजा तोड़ दिया जाय।

दरवाजा तोड़ दिया गया।

देखा—

बिस्तरे पर रूपा निद्रा में सोयी हुई है। उसकी सारी देह सफेद चादर से ढकी है और ऊपर धीरे-धीरे पंखा चल रहा है।

मुए कहा इतनी कहाँ से आ रही हो ? आओ कैन्टीन में एक-एक कप चाय पी जाय ।

मैंने गुस्से में दाँत पीसे । कुछ नहीं कहा । सिर्फ उसे देखती रही । वह बेहिचक होकर कह रही थी "यहाँ क्यों खड़ी हो ? चलो न ! दामोदर ने मुझे भी अपने आफिस में एप्वाइन्टमेंट दे दिया है ।"

मैं स्वारी कह कर चली आयी । उस दिन मैं यमुना किनारे बहुत देर तक बैठी रही। लहरों पर मनोरमा की दुष्ट और ठगी हुई मुस्कराहट तैर तैर कर किनारे के पास आ रही थी और मुझे चिढ़ा रही थी । धीरे-धीरे सूर्य डूब गया । अन्धेरा अपने मौन डगरों से आने लगा । मेरा मन शून्यता से भर गया और मुझे दामोदर का प्यार, वादे और उसकी उम्र भर साथ रहने की कसमें याद आने लगीं । उसने मुझसे वायदा किया था कि मैं उम्र भर तुम्हारे प्यार और समर्पण की महानता को निभाऊंगा । उसे एकनिष्ठ ईश्वर की तरह मानूंगा । मैंने उसे सब कुछ दिया । तन, मन और अर्पण । आत्मालोक का सर्वोपरि सत्य और सम्पदा । मैंने भी सोचा कि ऐसा समर्थ युवक पाकर मैं अपनी और अपने परिवार की समस्त समस्याओं को हल कर लूंगी । मैंने उसे एक पतिव्रता की तरह सच्चा पति माना और जीवन के अन्तिम क्षण जब मैं मौत की गोलियां मुझे बेहोश करेंगी उसका ही ध्यान करूँगी क्योंकि अभी मुझे तुम्हें बहुत सी बातें बतानी हैं ।

रामा ! उस दिन मुझे जीवन बड़ा असहाय घिनौना और बर्बाद लगा । दूसरे दिन मैंने दामोदर से मिलना चाहा, उसने मुझ से मिलने की असमर्थता प्रकट कर दी । लेकिन शाम को मैंने किसी भी तरह उसे पकड़ ही लिया । उससे मेरी बहुत सी बातें हुईं पर उसने मुझे साफ-साफ शब्दों में कह दिया कि वह मेरे व्यक्तिगत जीवन में अधिक हस्तक्षेप न करे । 'लेकिन आर्थिक मदद मैं पूर्ववत देता रहूँगा । यह उत्तर था उसका । मैं इसे नहीं सह सकती । मैंने कुछ अशोभित शब्दों

मैं उससे पिछली जिन्दगी के वे क्षण याद दिलाये जो हमारे पवित्र प्यार के प्रतीक थे तो उसने एक सधे हुए व्यापारी की तरह कहा 'उसकी कीमत मैं बहुत दे चुका हूँ।

इसके बाद मैंने उससे किसी भी तरह बात-चीत करनी उचित नहीं समझी।

रामा! स्वरूप से मेरा शुद्ध मैत्री सम्बन्ध है। वह मुझे जो-जो उपहार या रुपये लाकर देता था वस्तुतः उन्हें सूद में उसे वहन लाकर दे देती थी। वह बेचारा किसी और से प्यार करता है और उसे विश्वास है कि एक न एक दिन वे सामाजिक बन्धन टूट कर उन्हें फिर मिलने दे देंगे। उसे तुम गलत मत समझना। उसकी आर्थिक-स्थिति भी ज्यादा अच्छी नहीं है।

रामा! अब मैं तुम से कुछ कहना चाहती हूँ। तुम्हारे जीवन का परिणाम क्या हो सकता है? यह होटल में रात रात भर नाना विदेश के सपने देखना और उनके बदले में एक सम्पन्न विलासी जीवन बीताना कहाँ तक न्याय संगत है? समय तुम्हें भी इसी तरह निचोड़ कर चला जायेगा और तुम्हारी समस्याएँ उस दिन जिस पीड़ा का अनुभव करेंगी शायद वह तुम्हें भी इसी संसार से टकराने के लिए विवश कर दें। फिर क्या तू चाहती है कि तेरी फूल सी रेखा भी इसी तरह इस विलासी जीवन के लिए, इन्हीं अस्वस्थ परम्पराओं व तरीकों को अपनाए? वह भी अपनी कुंवारी अभिलाषाओं पर उसी तरह ऐसे ही नाबोदरों को बलात्कार करने दे और विश्वासों को एक मजाक समझने दो? वह बच्ची है धरती की वह पराई हुई माटी जिसमें जैसा बीज डालोगी वैसा ही पेड़ उगेगा। मैं चाहती हूँ कि उसमें कोई विष बीज न पड़े। वह किसी भी जहरीले दाँतों की शिकार न हो? फिर तेरी भाभी भी माँ बनने वाली है। वह भी एक नये शिशु को जन्म देगी। क्या इस नये शिशु के हाथ में यही सपेरा जोगी जो उसकी जिन्दगी को अजगर की तरह निगल जाये? जिसके सम्मुख

मुस्कान इस बुढ़िया की नहीं, उस संघर्ष की है जो जहरीली हवाओं और अस्वस्थ धुंध मोघ में मिट-मर जाती है और स्वस्थता में अनवरत संगीत के तारों की तरह मौन झंकृत करती रहती है।

मैं भी खुश हूँ क्योंकि आखिर हम सब इस संक्रांति काल की दौड़ में हजारों विकृतियों को लेकर कैसे समष्टि का उद्धार कर सकते हैं? अनेक तरह के बलिदान ही हुये और हमारे पवन-वेग मधुप दौड़ते हुए जीवन को आघात पहुँचा कर उसमें आमूलचूल परिवर्तन लायेंगे।

यह परिवार सच्चे सुख की ओर बढ़ रहा है। जब कभी त्रिलोचन रात को काम करते-करते थक जाता है तब रामा आती है माँ आती है, रेखा आती है और सारा परिवार मिल कर एक आनन्द और उत्साह के साथ बातों ही बातों में सारा काम खत्म कर देता है। मैं विभोर होकर कह उठता हूँ—यही सच्चा जीवन है। श्रम में आनन्द और मेहनत में सुख। और मैं अपना अदृश्य हाथ रामा के सिर पर रख देता हूँ। मैं उसे बहुत ही प्यार करता हूँ क्योंकि हर कमरा ऐसे ही मनस्वी को प्यार करता है जो जीवन में स्वस्थता लाने की चेष्टा करते हैं और सुख उसे अपने जीवन में लाते हैं।

मेरी कहानी खत्म होती है।

[illegible]

श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की अन्य कृतियाँ

उपन्यास

संन्यासी और सुन्दरी
[गुजराती मराठी उर्दू में अनूदित]
दीया जला ! दीया बुझा
मिट्टी का कलंक
[गुजराती व सिंधी में अनूदित]
प्रोफेसर
आँचल में दूध आँखों में पानी
घूँघट के आँसू
ममता और मरे
[गुजराती व तेलगु व सिंधी में अनूदित]
नया इन्सान
[गुजराती में अनूदित]
खून का टीका
बड़ा आदमी
पथ की बंदी
[तेलगू में अनूदित]
ममता
प्यार के रंग
खम्मा अन्नदाता
[राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत
व गुजराती में अनूदित]

अमावृत
युग देवता
जग की रीत
[गुजराती में अनुदित]
गुनाहों की देवी
ठकुरानी
नीले आकाश तले
एक नसी की रव

कहानी संग्रह

विश्वामित्र की खोज
नेमराम
बरफ की समाधी

एकांकी संग्रह

पृथ्वी और तारा

बाल-साहित्य

तीन नकटे
सफेद बतक
मांस का बादशाह
पाताल का सूरज
झूठी शान
टॅमी टौरी